UGC Approved S.I. No. 48433

ISSN 0974-1100

# पूर्वदेवा

सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

PŪRVADEVĀ

A Social Science Research Journal

वर्ष 22 अंक 87 एवं 88 ■ विशेषांक ■ अक्टूबर, 2016 - मार्च, 2017

# आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का भारतीय समाज पर प्रभाव

सम्पादक
डॉ. हरिमोहन धवन

मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

# पूर्वदेवा

## सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

PŪRVADEVĀ A Research Journal of Social Sciences

वर्ष 22 अंक 87 एवं 88 संयुक्तांक अक्टूबर,2016– मार्च, 2017

❒

सम्पादक

**डॉ. हरिमोहन धवन**

**मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी**

*बाण भट्टमार्ग, सेन्ट्रल स्कूल के सामने, उज्जैन (म.प्र) 456010*

*दूरभाष (0734) 2518737*

**email- mpdsaujn@gmail.com**

# पूर्वदेवा

*सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,नईदिल्ली द्वारा अनुमोदित - अनुक्रमांक 48433

परामर्श

**डॉ. जयप्रकाश कर्दम**
वरिष्ठ साहित्यकार एवं सम्पादक, दलित साहित्य वार्षिकी, नईदिल्ली

**डॉ. रामगोपाल सिंह**
पूर्व आचार्य एवं साहित्यकार
बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान, महू

**डॉ. रहमान अली**
पूर्व आचार्य,प्राचीन भारतीय इतिहास,संस्कृति व पुरातत्व अध्ययनशाला,
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

सम्पादक मण्डल

**डॉ. अरूण वर्मा**
पूर्व आचार्य, हिन्दी,
शास. माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन

**डॉ. शैलेन्द्र पाराशर**
अध्यक्ष– डॉ. अम्बेडकर पीठ, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

**डॉ. आर. के. अहिरवार**
विभागाध्यक्ष–प्राचीन भारतीय इतिहास,संस्कृति व पुरातत्व अध्ययन शाला,
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

**डॉ. एच.एम. बरूआ**
पूर्व आचार्य, समाजशास्त्र,
शास. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उज्जैन

**सम्पादक : डॉ. हरिमोहन धवन**
**सह–सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : पी. सी. बैरवा**

**© स्वात्वाधिकारी : मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी,**
बाणभट्ट मार्ग, सेन्ट्रल स्कूल के सामने, उज्जैन (म.प्र.)

इस अंक का मूल्य रूपये 150/–

वित्तीय सहयोग
***भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नईदिल्ली***

सम्पादन व प्रकाशन सर्वथा अवैतनिक एवं अव्यवसायिक
पूर्वदेवा में प्रकाशित लेख एवं उनमें व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार है.
सम्पादक व प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

## पूर्वदेवा म.प्र. दलित साहित्य अकादमी की सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

# ❐ अनुक्रम ❐


❐ सम्पादकीय

| | | | |
|---|---|---|---|
| | आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का भारतीय समाज व संस्कृति पर प्रभाव | | i-iii |
| 1- | आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का भारतीय समाज के समावेशी विकास पर प्रभाव : उभरती प्रवृत्तियाँ | डॉ. अरूण कुमार | *1* |
| 2- | सूचना प्रौद्योगिकी में सायबर अपराध व सुरक्षा की चुनौतियाँ | डॉ. चन्द्रकांत बंशीधरराव भांगे | 14 |
| 3- | भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास पर सूचना प्रौद्यागिकी का प्रभाव | डॉ. सरिता मालवीय | *19* |
| 4- | शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी विश्लेषण | डॉ. श्रृद्वा मिश्रा | *29* |
| 5- | आधुनिक संचार साधनों का भारतीय समाज व संस्कृति पर प्रभाव | डॉ. एच.एम. बरूआ | 34 |
| 6- | आधुनिक संचार साधनों का भारतीय समाज पर प्रभाव | डॉ. दत्तात्रय पालीवाल | *40* |
| 7- | मतदान व्यवहार को प्रभावित करने में आधुनिक सूचना तंत्र और सोश्यल मीडिया की भूमिका | डॉ0 सादीक मोहम्मद खान | 50 |
| 8- | आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का भारतीय जनजातीय समाज पर प्रभाव | डॉ0 सपना सिंह कंवर | *56* |
| 9- | आधुनिक संचार साधनों का विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर प्रभाव | उषादेवी कटारिया | *67* |
| 10- | संचार साधनों की बढ़ती निर्भरता और सामाजिक संबंधों के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष | डॉ. अंतिमबाला पाण्डे | *81* |
| 11- | सूचना संचार प्रौद्योगिकी के वर्तमान परिदृश्य | मसर्रत युसूफ खान | *94* |
| 12- | Positive and Negative Effects of Social Media on Society | डॉ. राजेश साकोरीकर | *97* |
| 13- | Impact of Modern Information technology and Involvement of Indian Society | डॉ.आई. एम. सौंदाणकर | *104* |
| 14- | Information technology Sectors : Participation in economic development of India | नदीम खान | *111* |
| 15- | राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी रपट | | *117* |

# इस अंक के लेखक

**डॉ.अरूण कुमार –** सहा. प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय,विजयराघवगढ़, कटनी (म.प्र.)

**डॉ. चन्द्रकांत बंशीधरराव भांगे**– सहा.प्राध्यापक–शिवाजी महाविद्यालय, परभणी (महा.)

**डॉ.सरिता मालवीय**– 108/23, शिवाजी नगर, पुलिस चौकी नं.5, भोपाल (म.प्र.)

**डॉ. श्रृद्धा मिश्रा**– प्राचार्य, एडवांस महाविद्यालय, माधव क्लब रोड़, उज्जैन (म.प्र.)

**डॉ. एच.एम. बरूआ**– पूर्व आचार्य–समाजशास्त्र, 131/1, सेठी नगर, उज्जैन (म.प्र.)

**डॉ. दत्तात्रय पालीवाल**–रिसर्च एसोसिएट– आर.डी.गार्डी मेडिकल कालेज, उज्जैन (म.प्र.)

**डॉ. सादीक मोहम्मद खान**–83 जयस्तम्भ चौक, एम.जी.रोड़, देपालपुर, जिला–इंदौर (म.प्र.)

**डॉ. सपनासिंह कंवर**–शोधार्थी – राजनीति विज्ञान, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

**श्रीमती उषादेवी कटारिया**–शोधार्थी , 274–डी, माधव नगर रेलवे कालोनी, उज्जैन (म.प्र.)

**अंतिमबाला पाण्डे**– शोधार्थी , सी–35/10, ऋषि नगर, देवास रोड़, उज्जैन (म.प्र.)

**डॉ. मुसर्रत युसुफ खान**– मकान नं. 36, फ्लैट एफ–1, गिन्नोरी रोड़, भोपाल (म.प्र.)

**डॉ. राजेश साकोरीकर**– सहा.प्राध्यापक, शासकीय स्ना. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

**डॉ.आई.एम. सौंदाणकर**– प्राचार्य–समाजकार्य महाविद्यालय, चोपडा, जिला–जलगांव (महा.)

**नदीम खान**– शोधार्थी , देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

सम्पादकीय

## आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का भारतीय समाज और संस्कृति पर प्रभाव उभरती चुनौतियाँ तथा समाधान

हम सभी इस तथ्य से अवगत है कि आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी विश्व की समाज व्यवस्थाओं के साथ ही विविधताओं से युक्त भारतीय समाज को भी प्रभावित कर रही है। समाजिक व्यवस्था पर इसका नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। इससे आज जहाँ परम्परागत समाजिक मान्यताओं पर प्रहार हो रहा है वहीं समाज के राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक ताने–बाने सहित संरचनात्मक व्यवस्था भी प्रभावित हो रही है।

प्राचीन काल से ही संचार मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता रही है। पहले इसका संसाधन प्राकृतिक रूप में पक्षियों, मेघा, चांद–तारों से था, किन्तु विकास के साथ वैज्ञानिक प्रकृति ने आज सम्पूर्ण विश्व को एक ग्लोबल विलेज बना दिया है। साइबर स्पेस ने आज समस्त विश्व को अपने आगोश में ले लिया हें ।

समाज की वर्तमान पीढ़ी के उज्जवल भविष्य के निर्माण की नींव रखने हेतु, संचार साधनों का भारतीय समाज और संस्कृति पर सकारात्मक एवं नकारात्मक पढ़ रहे प्रभावों का वैज्ञानिक एवं सुक्ष्म अध्ययन आज के शोधपरक–अनुसंधान में शुमार होता जा रहा हें । विश्व के विकसित राष्ट्र जो प्रौद्योगिकी की आधुनिक प्रतिस्पर्धा में विश्व किर्तिमान बनाऐ हुऐ है, वे भी इसके प्रभावों से चिंतित है। विश्वकल्याण एवं मानवतावादी विचार ने पुनः एक बार इस क्षेत्र में गंभीर सोच के लिए प्रेरित किया हैं ।

शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात, अंतरिक्ष अनुसंधान, भूगर्भीय हलचल, समुद्री आपदाऐं, प्राकृतिक प्रकोप, विलक्षण तटवर्तीय हवाऐं, तापमान में उतार–चढ़ाव सहित पर्यावरण इत्यादि सभी संचार साधनों पर निरन्तर आश्रित होते जा रहे हैं । साथही नवींन सूचना तंत्र एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग के कारण मानवीय अंतर–संबंधों, समाज के विभिन्न वर्गों व समुदायों के बीच अंतर–संबंधों को सकारात्मक एवं नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही हैं ।

जनसंचार सांस्कृतिक गतिविधियों को गतिशील बनाने में तथा सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन लाने में प्राचीन समय से क्रियाशील रहा है । आज जनंसचार के साधन जैसे–जैसे विकसित होते जा रहे हैं वैसे–वैसे समाज एवं सांस्कृति में बदलाव आ रहा हें । विगत दो दशकों में सूचना प्रौद्योगिकी में हुए विकास के कारण संचार के गतिशील और प्रभावशाली साधनों का विकास हुआ हें ।

21 वीं सदी के आधुनिक युग में समाज के दूर–दराज क्षेत्रों में रहने वाले ग्रामीण और आदिवासी लोग भी इन साधनों से विमुख नहीं है। आज के सम्पूर्ण मानव जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी और प्रौद्योगिकीय संसाधनों ने खासा प्रभावित किया हैं। गरीबी उन्मूलन में विकास संचार की भूमिका, सामाजिक सहभागिता, पारदर्शिता और उत्तरदायी शासन व्यवस्था, विकेन्द्रीकृत प्रशासन, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के लिए नवींन सूचना तंत्र और प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर गंभीरता से विचार–विमर्श आज समय की प्रमुख मांग बनता जा रहा है ।

स्वतंत्रता के बाद देश में साक्षरता और शिक्षा कार्यक्रमों की श्रृखंला में संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका को शिक्षाविद, राजनेता, नीति निर्धारक, समाज– सुधारक और वैज्ञानिक सभी रेखांकित कर रहे हैं । यद्यपि यह अभी अपर्याप्त है और इसके अच्छे परिणामों की दरकार है । परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों और मान्यताओं में बदलाव परिलक्षित हो रहा है । आज की युवा पीढ़ी, परम्परांगत सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों एवं मान्यताओं से अनभिज्ञ है । परिणाम स्वरूप युवाओं में लक्षहीनता, हताशा, अस्थिरता, अलगाव, एकाकिपन, नीरस जीवन और भविष्य के प्रति उत्साह में कमी हो रही है।

अपराध, हत्या, आत्महत्या और अत्याचार निरन्तर नई पीढ़ी को प्रभावित कर रहे है। भविष्य की अस्थिरता को लेकर उनके जीवन में कुण्ठा है ।

सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ति आज के वैश्वीकरण का ही परिणाम हैं । प्रेस, रेडियो, फिल्म, टेलिविजन, मोबाईल, लेपटाप, टेबलेट, साईबरनेटिक, और इनफारमेब्कि सभी कुछ संपूर्ण वैश्विक मानव सम्बध संकुल को सकारात्मक या नकारात्मक कहीं न कहीं गहरे तक प्रभावित कर रही हैं। जिससे उसके रोजमर्रा के जीवनचक्र से लेकर परम्परागत सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, भौतिक एवं नैतिक मान्यताओं में बदलाव प्रतीत हो रहा है। क्या गॉव, क्या शहर सभी स्थानों पर डिजिटल विभाजन, राष्ट्रीय दूरसंचार नीति, ई–गवर्नेंस, फ्रेण्डस काउन्टर, उपग्रह संचार, काल सेन्टर, आउटसोर्स व्यवसाय, सूचना प्रौद्योगिकी आधारित उद्योग निरन्तर आकार और विस्तार ले रहे हैं । इन परिस्थितियो में नवींन आयामों के साथ चिंतन–मनन और नवाचार की आवश्यकता प्रतीत होती है।

**(डॉ.हरिमोहन धवन)**

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 1–13* ***ISSN 0974 -1100***

# आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का भारतीय समाज के समावेशी विकास पर प्रभाव : उभरती प्रवृत्तियाँ

**डॉ. अरूण कुमार**

आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी एक व्यापक अवधारणा है, जिसमें सूचना तंत्र एवं उसके प्रबन्धन सम्बन्धी सभी पहलू सामाहित होते हैं। कम्प्यूटर, इंटरनेट एवं दूरसंचार प्रणालियाँ सूचना प्रौद्योगिकी के आधार स्तम्भ हैं। इसने मानव जीवन के दैनिक क्रियाकलाप जैसे, शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, बैकिंग, रेलवे, विमानन , बीमा , मौसम पूर्वानुमान , अन्तरिक्ष विज्ञान , इत्यादि के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांतिकारी बदलाव करके अपनी श्रेष्ठता साबित कर रही है। ई–शिक्षा ,ई–चिकित्सा, ई–प्रशासन, ई–वाणिज्य इत्यादि अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रभावशाली भूमिका अदा कर रही है।

आदिम काल में मानव अपने स्वयं के भावों, संदेशों, विचारों, सूचनाओं, उपलब्धियों इत्यादि को दूसरों तक संचार के लिए सिर्फ संकेतों का उपयोग करते थे। परन्तु कालान्तर में भाषा एवं लिपि के अविष्कार ने मानव जीवन में मूलभूत बदलाव ला दिया । इसने मानव को एक दूसरे के विचार अभिव्यक्ति समझने एवं दूसरों को समझाने में अपना अतुल्य योगदान दिया है। मानव को सम्य जीवन शैली प्रदान की है । हालाँकि प्रारंभ में सूचनाओं के एक जगह से दूसरे जगह तक आदान–प्रदान में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। समय एवं गोपनीयता दोनों की हानि होती थी। समय के साथ सूचना सम्प्रेषण के अन्य माध्यमों जैसे समाचार पत्र, पत्रिकायें, डाक सेवा, डाक तार, टेलीफोन, रेडियों, दूरदर्शन इत्यादि का विकास हुआ। जिसने मानव जीवन को काफी प्रभावित किया । आधुनिक काल में सूचनाओं के संचार में कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल

टेलीफोन अहम भूमिका अदा कर रही है। इसने सूचना क्रांति का सूत्रपात कर आधुनिक युग को सूचना क्रांति युग के रूप में प्रस्थापित कर दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी में नित्य नये आधुनिकतम प्रणालियों के विकास ने सूचना क्रांति को गति प्रदान करते जा रही है। इंटरनेट जैसी सुविधाओं ने सम्पूर्ण विश्व को एक सूचना–संचार व्यवस्था के नेटवर्क से जोड़ दिया है।

इंटरनेट को सूचना प्रौद्योगिकी की जीवन रेखा कहा जाता है। इंटरनेट एक अत्याधुनिक डिवाइस है। जिसका उद्‌भव एवं विकास सन् 1969 में अमेरिका के प्रतिरक्षा विभाग के मुख्यालय पेंटागन स्थित एडवांस रिसर्च प्रोजेक्शन एजेन्सी की संकल्पना से हुआ। इंटरनेट इंटरनेशनल नेटवर्क का ही संक्षिप्त नाम है। इंटरनेट के उपयोग के लिये कम्प्यूटर , टेलीफोन एवं मोडेम आवश्यक साधन हैं इंटरनेट प्रणाली में कम्प्यूटरों के जाल को एक मुख्य कम्प्यूटर आपस में टेलीफोन लाईन के द्वारा जोड़ता है। कम्प्यूटर तथा टेलीफोन आपस में मॉडेम के माध्यम से जुड़े होते है। यह मॉडेम कम्प्यूटर के डिजिटल सिग्नल को टेलीफोन के मैग्नेटिक सिग्नल में बदलता है। आपस में जुड़े ये कम्प्यूटर विभिन्न प्रकार की सूचनाओं का आदान–प्रदान बड़ी शीघ्रता से कर लेते है। इस लिए इंटरनेट को इन्फार्मेशन सुपर हाईवे भी कहा जाता है। विश्व भर की सूचनाओं के इस खजाने पर किसी भी केन्द्रीभूत प्रशासन, संस्था या कम्पनी का नियंत्रण नही होता है। अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर इंटरनेट शब्द 1994 में प्रचलन में आया तथा भारत में इसकी सुविधा सामान्य जनता को उपलब्ध कराने के उद्‌देश्य संचार सेवा के क्षेत्र में क्रियाशील केन्द्र सरकार की एक मात्र कम्पनी, विदेश संचार निगम लिमिटेड द्वारा 15 अगस्त 1995 को देश में प्रारंभिक तौर पर गेटवे इंटरनेट सेवा प्रारंभ की गयी। इसके तहत मुम्बई के इंटरनेट एसेस कोड को यूरोप एवं अमेरिका से जोड़ कर प्रारंभ में मुम्बई कोलकोता एवं चेन्नई में सभी के लिए खोल दिया गया। इससे पहले यह सरकार, शैक्षणिक एवं शोध संस्थाओं को एयरनेट तथा नाइसनेट के माध्यम से उपलब्ध था। तत्पश्चात् निजी क्षेत्र की कम्पनी सत्यम इम्फोवे द्वारा नवम्बर 1998 में इंटरनेट सेवा प्रारंभ करने के साथ ही देश के सभी शहरों को इंटरनेट के साथ जोड़ दिया गया। इसके पश्चात् अनेक अन्य कम्पनियाँ भी नेटवर्क विकसित करने में योगदान दे रही है। आज तीव्रतम विकसित एवं बहुआयामी इंटरनेट सेवा ब्रॉडबैन्ड सेवा की शुरुआत भी भारत में हो चुकी है।

इंटरनेट पर विश्व के किसी भी कोने में रहने वाले अपने परिचित से बातचीत की जा सकती है। इस पर आप इलेक्ट्रॉनिक अखबार पढ़ सकते है। विभिन्न दुकानों में बिकने वाली वस्तुओं को देख सकते है। खरीदने का आर्डर दे सकते है। मंडियों, शेयर बाजार पर नजर रख सकते है। अपने उत्पादन एवं सेवाओं का विज्ञापन कर सकते है। पुस्तकालयों से जरुरी जानकारी पा सकते है । ऑडियों–वीडियों कैसेट सुन–देख सकते है। आप सलाह मांग सकते है। अपना मत विश्व के सामने रख सकते है। यह सूचना प्रौद्योगिकी का आधार एवं सूचना विनिमय तथा ज्ञान का पुंज है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई क्रांति ने भारतीय समाज के सभी पक्षों सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक इत्यादि को सिद्त से प्रभावित किया है। सूचना प्रौद्योगिकी ने भारतीय समाज को अधिक से अधिक सुविधाजनक बनाने का प्रयास किया है, एवं कर रहा है। यह मानव जीवन को अधिक से अधिक अनुकूल बनाने में अपना योगदान दे रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी से विश्व के परिदृश्य में तेजी से बदलाव आया है, एवं आ रहा है। इस शोध पत्र में सूचना प्रौद्योगिकी का भारतीय समाज, सभ्यता एवं संस्कृति पर प्रभाव का मूल्यांकन कर यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि क्या यह भारतीय समाज के समावेशी विकास के साथ न्याय कर रही है ? क्या यह भारतीय समाज के सभी वर्गो का उत्थान कर रही है? क्या इसने व्यक्तियों के जीवन स्तर में बदलाव लाया है ?

आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का भारतीय समाज के समावेशी विकास में योगदान का अवलोकन एवं विवेचन भारतीय समाज के विभिन्न पक्षों या घटको पर प्रभाव की व्याख्या कर सहजता से किया जा सकता है–

**शिक्षा,** शिक्षा मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। यह मानव के सर्वागींन विकास के लिए आवश्यक है। आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी ने शिक्षा का व्यापक प्रसार कर सर्वसुलभ बना दिया है। यह शिक्षा में गुणात्मक सुधार का पैरोकार है। आज प्राथमिक विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों तथा उच्च शिक्षण संस्थान व शोध संस्थान को कम्प्यूटर के माध्यम से जोड़ा जा रहा है। भारत के अनेक विश्वविद्यालय अब ऑनलाईन हो चुके है। दूरदराज के इलाकों में भी सूचना प्रौद्योगिकी के साधन का

उपयोग कर दूरस्थ शिक्षा प्रदान की जा रही है। परीक्षा भी ऑनलाईन हो रही है, सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से कई भारतीय विद्यार्थी घर बैठे विदेशी विश्वविद्यालय एवं संस्थान से डिग्री प्राप्त कर जीवन को सफल बना रहे है। पुस्तकालयों के ऑनलाईन होने से विद्यार्थियों का पुस्तको तक पहुँचना आसान हो गया है। आज टेली–कान्फेंसिंग के माध्यम से देश के किसी भी कोने में बैठे विद्यार्थी उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा ग्रहण कर रहे है। आज लंबे समय से बस्ते के बोझ से दबे विद्यार्थियों के संकट को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम यथा आई.पैड इत्यादि के द्वारा दूर किया जा रहा है। आज ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सूचना प्रौद्योगिकी के आभाव में सही शिक्षा संभव ही नही है। इसने शिक्षा का व्यापीकरण एवं सरलीकरण कर सबके लिए गुणात्मक शिक्षा के आधुनिक द्वारा खोल दिया है।

स्वास्थ्य, आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी मानव जीवन के मौलिक घटक, स्वास्थ्य के लिये वरदान साबित हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से विश्व के किसी भी भागों में स्वास्थ्य के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान एवं इससे सम्बधित जानकारी तत्काल व्यक्ति को प्राप्त हो रही है । टेली–मेडिसिन सूचना प्रौद्योगिकी का नतीजा है। इसका आंरभ इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) ने 2001 में अंतरिक्ष आधारित टेली–मेडिसिन सिस्टम की स्थापना कर की। इस प्रौद्योगिकी के जरिये शहर में बैठे डॉक्टर और दूरदराज में बैठे रोगी के बीच सम्पर्क कायम कराया जाता है। वीडियों के जरिये रोगी की समस्या और रोग का निदान डॉक्टर सुझाता है। ई.सी.जी तथा एक्सरे जैसी सुविधाए भी रोगी को मिल जाती है। कर्नाटक में तो सभी जिला चिकित्सालयों में सैट–कॉम आधारित टेली मेडिसिन सुविधा प्रारंभ हो चुकी है। आंध्रप्रदेश का एक छोटा सा गाँव अरागुंडा भारत का ऐसा पहला गाँव है जहाँ सूचना प्रौद्योगिकी (इंटरनेट) के माध्यम से इलाज का श्री गणेश हुआ।

आज रोबोटिक्स एवं संचार की मदद से डॉक्टर दूर बैठे ही शल्य प्रक्रिया को सम्पन्न कर रहे है। इस तरह आज आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी ने हनुमान की तरह हिमालय से सजीवन बुटी को उपलब्ध कराने में अकल्पनीय योगदान दे रहा है। आज सूचना क्रांति, स्वास्थ्य क्रांति का सम्वाहक सिद्ध हो रहा है।

प्रशासन, आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी ने ई–प्रशासन को जन्म दिया है। आज प्रशासन में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम–कम्प्यूटर, इंटरनेट, ई–मेल इत्यादि का व्यापक उपयोग हो रहा है। जिसके कारण से आम जनता एवं प्रशासन एक दूसरे के समीप आ गये है। आज प्रशासन के सभी कार्यो का लेखा–जोखा जनता तक शीध्रता से पहुँच रहा है। ई–प्रशासन के अन्तर्गत सरकार प्रदत्त सुविधाओं एवं लाभों की सूचना तुरन्त आम लोगों मे व्यापक स्तर तक पहुँच रही है । इससे समय एवं धन की हानि कम होती है। इससे हितग्राही कार्यो का सम्पादन शीघ्रता से होता है तथा आम आवाम को परेशानी भी कम होती है। सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव के कारण प्रशासन ने लालफीताशाही प्रवृत्ती आहत हुई है। प्रशासन में पारदर्शिता एवं जवाबदेही आयी है। लोगो को बिचौलियो से छुटकारा मिला है, सूचना के अधिकार को लागू करने के पश्चात् प्रशासनिक कार्यो में स्पष्टता एवं निष्पादन में तीव्रता आई है। अब आम लोगेां के लिये प्रशासनिक क्रियाओं की जानकारी प्राप्त करना आसान हो गया है। यह सब सूचना प्रौद्योगिकी का ही कमाल है। आज सिविल सेवा परीक्षा ऑनलाईन होने से कार्मिको की चयन प्रक्रिया पारदर्शी हो गया है। जिससे प्रशासन में योग्य एवं सही सेवको का चयन होता है तथा प्रशासन जादा प्रभावित एवं चुस्त हुआ है। परम्परागत भारतीय प्रशासन लोकतांत्रिक प्रशासन में तबदिल होती जा रही है।

यह सब बदलाव सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका के कारण ही हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के कारण भारतीय लोक प्रशासन में सम्प्रभु की तरह कार्य करने वाली नौकर शाही की अद्वैतवादी प्रवृत्तियाँ आघातीत हुई थी। नौकरशाही या दफ्तरशाही की प्रकृति का लोकतांत्रिकरण हुआ है। प्रतिबद्ध नौकरशाही की अवधारणा साकार हो रही है। इसने एक तरफ प्रशासन में कार्मिको की संख्या में कमी की है तथा दूसरी ओर उत्पादन की सीमा को बढ़ाने में सहायता की है। सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव से नीति निर्माण एवं उनके क्रियान्वयन में शीघ्रता आयी है। इससे नीतियों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन में जन सहयोग कायम करने में भी सफलता मिल रही है। प्रदत्त विधायन की अवधारणा ज्यादा प्रभावी हुई है। सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव से भारतीय प्रशासन की संस्कृति में भी बदलाव हो रहा है। आज प्रशासन में सहभागी संस्कृति तथा सहभागी प्रशासन को बढ़ावा मिल रहा है। प्रशासन ज्यादा जबावदेह हो रहा है। पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण की प्रकिया भी पहले की तुलना ज्यादा प्रभावी हुआ है। प्रशासन के महत्वपूर्ण

क्रियाकलाप नियोजन, संगठन, नियुक्ति, निर्देशन समन्वयन, प्रतिवेदन, एवं बजट इत्यादि के निष्पादन में तीव्रता, सक्रियता, पारदर्शिता के पीछे भी आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका अहम है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि भारतीय प्रशासन पर सूचना प्रौद्योगिकी का व्यापक प्रभाव पड़ा है। इसने प्रशासनिक व्यवस्था को उत्तरोत्तर चुस्त एवं दुरुस्त बनाते जा रहा है। इससे प्रशासन के सभी क्षेत्र निरन्तर एक दूसरे के सम्पर्क में रहने लगे है। प्रशासन में संरचानत्मक एवं क्रियात्मक बदलाव आया है। प्रशासन पारदर्शी एवं जवाबदेह बनती जा रही है।

भूमण्डलीकरण के युग में जहां प्रशासन का दायरा काफी विस्तृत हो गया है। कई नवीन जिम्मेदारी भी प्रशासन को निर्वहन करनी पड़ रही है। सम्पूर्ण विश्व में प्रतिस्पर्धात्मकता, कुशलता एवं उत्पादकता की धूम मची है। विश्व एक ग्लोबल वीलेज का स्वरुप धारण कर लिया है। ऐसी परिस्थिति में प्रशासन यदि अपने कर्त्तव्य एवं दायित्व का निर्वहन तत्परता के साथ कर रही है, तो इसके पीछे सूचना प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है।

सेवायें, भारतीय समाज में व्यक्ति जीवन यापन के लिये विभिन्न क्षेत्रों में कुछ सेवाओं जैसे रेल्वे, बैंक, बीमा, टेलीफोन, इत्यादि का उपभोग करते रहे है। परन्तु ये सेवायें काफी समयसाध्य नीरस तथा उबाऊ थे। सूचना प्रौद्योगिकी ने इन सेवाओं की कार्य कुशलता एवं उत्पादकता में काफी सुधार कर शीघ्रता प्रदान की है। आज सूचना प्रौद्योगिकी ने ई–रेल्वें, ई–बैकिंग, ई–बीमा को जन्म दिया है। इंटरनेट के माध्यम से रेल्वें की समस्त जानकारी घर पर बैठे प्राप्त कर सकते है। रेल्वे टिकट, रेल आरक्षण, रेल गाड़ी की स्थिति इत्यादि सम्पूर्ण जानकारी एवं क्रियाकलाप घर बैठे सुगमता पूर्वक कर सकते है। ई–बैकिंग के माध्यम से इंटरनेट बैकिंग, टेली बैकिंग, एटीएम मशीन, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, इलेक्ट्रॉनिक फण्ड ट्रांसफर व्यवस्थायें फलीभूत हो रही है। इसने बैकिंग क्षेत्र में अमूलचूल परिवर्तन कर दिया है। ई–बीमा के माध्यम से बीमा सम्बंधी समस्त गतिविधियों की जानकारी एवं संचालन सुविधाजनक रुप से किया जा सकता है। वाणिज्य के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आ रहे है। शेयर बाजार के ऑनलाईन होने से बाजार में प्रतिस्पर्धात्मकता में अभिवृद्धि के साथ–साथ पारदर्शिता आयी है। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से स्टॉक एक्सचेंज एवं सेंसेक्स के उतार

चढ़ाव की जानकारी निवेशकों तक शीघ्रता से मिलती रहती है। इस प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी ने मानव को सेवा प्रदान करने वाले विभिन्न क्षेत्रों के क्रियाकलाप को प्रभावी एवं सुगम बनाकर मानव विकास में योगदान प्रदान कर रही है।

नियोजन, किसी भी देश की समग्र प्रगति इस बात पर निर्भर करती है, कि वहाँ के लागों के लिए रोजगार की उपलब्धता कितनी है। जिस देश में नियोजन की व्यवस्था अच्छी होगी, वह देश सम्पन्न होगा। आज सूचना प्रौद्योगिकी ने अनेको क्षेत्रों में कई नवीन रोजगार का सृजन किया है। आज टेलीफोन कम्पनियाँ, आउटसोसिंग कम्पनियाँ तथा सूचना आधारित उधोगों ने लोगों को कई तरह के रोजगार के अवसर एवं आजीविका के साधन उपलब्ध कराये है। जिससे भरतीय समाज में आर्थिक सम्पन्नता एवं खुशहाली आयी है। सूचना प्रौद्योगिकी के महत्वपूर्ण माध्यम इंटरनेट पर किसी देश या संस्था का नियंत्रण है। सरकार सिर्फ नियामक की भूमिका अदा करती है। जिससे सूचना प्रौधेगिकी एवं इस पर आधारित सेवाओं के क्षेत्र में नियोजन के सर्वाधिक अवसर मिल रहे है। इस क्षेत्र में नौकरियों के अवसर में उत्तरोत्तर वृद्वि हो रही है। आज भारत में आई–टी कम्पनियाँ सवसे अधिक रोजगार के नवीन अवसर प्रदान कर रही है। देश के युवा वर्ग इस ओर सवसे अधिक आकर्षित हो रही है। आज भारत सूचना प्रौद्योगिकी एवं इस पर आधारित सेवाओं के परिप्रेक्ष्य में विश्व मे लीडर की भूमिका निर्वहन कर रही है। इस क्षेत्र में निवेश की आकर्षण की दृष्टि से भी भारत एक उत्तम देश सिद्व हो रहा है। इस प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति के कारण रोजगार की असीम उपलब्धता एवं प्रतिभा की पुछ–परक से भारत से प्रतिभा पलायन पर न सिर्फ अंकुश लगा है, वल्कि प्रतिभा का आयात होने लगा है।

इलेक्ट्रॅनिक मीडिया, सूचना प्रौधेगिकी ने मीडिया को सम्पन्नशाली एवं समर्थशाली वनाया है। इससे मीडिया की भूमिका में तत्परता, स्पष्टता एवं विश्वसनीयता में अमिवृद्वि हुयी है। लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में मीडिया नें सूचना प्रौद्योगिकी के बदौलत स्वयं को नए कलेवर के रूप में पेश किया है। मीडिया का मन भी कंचन एवं निर्मल हुआ है। अपने नये स्वरूप में मीडिया ने विगत कुछ वर्षो में ऐसे कारनामें उजागर किये है जिसके बारे में लोग कल्पना भी नही कर सकते थे। जैसे रिश्वतखोरी, घाँघली, अपराध के अनेक ऐसे मामलों को सूचना प्रौधेगिकी के दम पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने

समाज के समक्ष प्रस्तुत कर सच्चाई को सामने लाया है। जिससे भ्रष्टाचार एवं अपराध पर लगाम लगी है। भ्रष्टाचारी एवं अपराधी एक वार अपने कारनामों को अंजाम देने से पहले सोचने लगे है कि कही पकड़े न जायें। भारत में अनेक स्टिंग ऑपरेशन की सफलता के पीछे भी आधुनिक सूचना प्रौधोगिकी का राज है। सूचना प्रौधेगिकी के कारण आज न्यूज चैनलों के बदले स्वरूप की कार्य प्रणाली से राजनेता एवं अधिकारी –कर्मचारी की जनता के प्रति जिम्मेदारी मे बढ़ोतरी हो रही है। आज विशाल आबादी वाले भारत की जनता आसानी से अपनी बात शासन तक पहुँचाने एवं सरकार की मंशा तथा क्रियाकलाप से शीध्रता एवं सुगमतापूर्वक अवगत हो रहे है यानि सूचना प्रौधेगिकी ने मीडिया को लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ ही नहीं बल्कि एक मजबूत स्तम्भ के रूप में प्रतिस्थापित किया है।

मनोरंजन, सूचना प्रौधेगिकी क्रांति ने मनोरंजन क्रांति का सूत्रपात किया है। मनोरंजन की दुनियाँ बदल गयी है। मनोरंजन का क्षेत्र सीमित न रह कर व्यापक हो गया है। आज इटरनेट के माध्यम से विश्व में कही भी कभी भी किसी भी कार्यक्रम का लुफ्त आसानी से उठा सकते हैं अपने इच्छानुरूप कार्यक्रम देख एवं सुन सकते है। विभिन्न तरह के गेम खेल सकते है। ज्ञान वर्द्धन की चीजे डाउनलोड कर सकते हैं। मनोरंजन के जिस क्षेत्र में रूची हो उस क्षेत्र के वारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर मन का रंजन कर सकते है। विभिन्न चैनलों तथा डायेक्ट टू होम (DTH) ने आज दूरदर्शन की तस्वीर को बदल दिया है। इससे व्यक्ति अपनी प्रवृत्ति के अनुसार मनोदशा को तृप्त कर सकते है। मोबाइल टेलीफोन के माध्यम से व्यक्ति सुविधाजनक रूप से अपनी रूची अनुसार मनोरंजन कर सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित मनोरंजन के अनेक साधनो की भरमार एवं सुगमता से लोग आज के समय में मनोरजंन का असीमित लुप्त उठा रहे है।

इस प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी ने भारतीय समाज की तस्वीर, तकदीर एवं तस्वीर में बदलाव ला दिया है। आज का भारतीय समाज वह नहीं है जो लगभग दो दशक पूर्व था। भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक आदि दशा एवं दिशा में आमूलचूल परिवर्तन परिलक्षित हो रहे है। जिसका सबसे अधिक श्रेय सूचना प्रौद्योगिकी का आर्विभाव है ।

भारतीय समाज के कुछ सिरफिरे चिंतक सूचना प्रौद्योगिकी के दुष्प्रभाव पर भी अपना चिन्तन एवं नजर गड़ाये हुये है। उनका मानना है कि इससे समाज में नैतिकता का क्षरण हुआ है। इसने भारत की सभ्यता एवं संस्कृति को आघातीत किया है एवं कर रहा हैं। क्योंकि इसका इस्तेमाल अश्लीलता के माध्यम के रूप में हो रहा है, जो भारतीय किशोरों एवं युवाओं को दिग्भ्रमित कर रहा है। जिससे वे अपराध एवं बलात्कार की दुनिया में कदम रखते जा रहें है। जो भारतीय समाज के लिए अशुभ है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से निजता एवं गोपनीयता का हनन हो रहा है। देश की सामरिक महत्व की साइटों, बैंको की साइटों इत्यादि की जानकारी के साथ छेडछाड़ हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी में महारत आतंकवादी इसका इस्तेमाल कर भरतीय समाज में आतंकी कार्यवाही को अंजाम देने में कारगर हो रहे है। साइबर क्राइम चरम पर हो रहे हैं। इससे भारतीय समाज में असमता की खाई बढी है। क्योंकि इसके उपयोगकर्ता तीव्र गति से आगे बढ़ रहे हैं जबकि ग्रामीणों द्वारा इसके कम इस्तेमाल से पिछड़ते जा रहे है। एक दिन यह असमानता असंतोष एवं क्रांति को जन्म देगी, जो भरतीय समाज को विकास नहीं, विनाश के दलदल में धकेल देगी।

सूचना प्रौद्योगिकी के दुष्प्रभावों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि इसका दुष्प्रभाव व सुप्रभाव इसके इस्तेमाल कर्ता पर निर्भर करता है। इसमें सूचना प्रौद्योगिकी तो साधन मात्र है। अतः इसके लिए हम सब की जिम्मेदारी है कि सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल भारतीय समाज में समानता, समरसता एवं खुशहाली के लिए किया जाय।

अब सवालिया निशान यह उत्पन्न होता है कि क्या वास्तव में सूचना प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से भारत में समृद्धि एवं खुशहाली आयी है ? क्या यह भरतीय मानव का विकास करने मे सफल रहा है ? ठीक है कि इसने मानव के जीवन यापन को सुलभ बनाया है। समृद्धि एवं खुशहाली लाने का प्रयास किया है एवं दावा भी किया जा रहा है। परन्तु हकीकत में इससे भारतीय समाज में खुशहाली आयी है या नहीं । इसके लिए संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (United Nation Devilopment Programe {UNDP} यूएनडीपी की मानव विकास सम्बन्धी वर्ष 2015 की रिपोर्ट का अवलोकन एवं व्याख्या करना आवश्यक है।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) प्रत्येक वर्ष विश्व के देशों की मानव विकास सूचकांक के आधार पर मानव की खुशहाली या वेहतरी की स्थिति का मूल्यांकन करती है। मानव की बेहतरी से जुड़ी ये मानव विकास सूचकांक मुख्य रुप से तीन विन्दुओं पर केन्द्रीत होती है। प्रथम आम लोगों का जीवन यापन द्वितीय शिक्षा के अवसर की उपलब्धता तृतीय प्रति व्याक्ति सकल राष्ट्रीय आमदनी । साथ ही मानव जीवन को बेहतर वनाने वाले अन्य पहलुओं का मूल्यांकन कर मानव विकास का आकलन एवं मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन मे विषमता का ध्यान भी रखा जाता है।

इन प्रमुख विन्दुओं के आधार पर संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) की मानव विकास सूचकांक 2015 की रिपोर्ट मे भारत मानव विकास सूचकांक में वैश्विक स्तर की तुलना में बहुत नीचे है। जो देश में बदहाली एवं विषमता की खाई चौड़ी बनाए रखने का पर्चाय बना हुआ है । (यूएनडीपी) द्वारा मानव की औसत खुशहली का अंक 0.630 निर्धारित किया गया था । जबकि भारत इस मानक पैमाने में सें कुल 0.609 अंक प्राप्त कर पाया । विश्व के कुल 188 देशों मे इस आधार पर हुए अध्ययन में भारत 130 वें स्थान पर अटक गया है।

यूएनडीपी की मानव विकास रिपोर्ट 2015 के अनुसार मानव विकास सूचकांक के तहत चुनिंदा देशों का रैंक एवं वैल्यू

**अति उच्च मानव विकास**

| एचडीआई रैंक 2014 | देश के नाम | एचडीआई वैल्यू 2014 |
|---|---|---|
| 1 | नॉर्वे | 0.944 |
| 2 | ऑस्ट्रेलिया | 0.935 |
| 3 | स्विट्जरलैंड | 0.930 |
| 4 | डेनमार्क | 0.923 |
| 5 | नीदरलैंड | 09.22 |
| 6 | जर्मनी | 0.916 |
| 8 | अमेरिका | 0.915 |
| 14 | ब्रिटेन | 0.907 |
| 17 | दक्षिण कोरिया | 0.898 |
| 20 | जापान | 0.891 |
| 39 | सऊदी अरब | 0.837 |

## उच्च मानव विकास

| एचडीआई रैंक 2014 | देश के नाम | एचडीआई वैल्यू 2014 |
|---|---|---|
| 50 | रूस | 0.798 |
| 62 | मलेशिया | 0.779 |
| 63 | मॉरीशस | 0.777 |
| 73 | श्रीलंका | 0.757 |
| 75 | ब्राजील | 0.755 |
| 90 | चीन | 0.727 |
| 93 | थाईलैंड | 0.726 |

## मध्यम मानव विकास

| एचडीआई रैंक 2014 | देश के नाम | एचडीआई वैल्यू 2014 |
|---|---|---|
| 108 | मिश्र | 0.690 |
| 110 | इंडोनेशिया | 0.684 |
| 115 | फिलीपींस | 0.668 |
| 116 | दक्षिण अफ्रीका | 0.666 |
| 130 | भारत | 0.609 |
| 132 | भूटान | 0.605 |
| 142 | बांग्लादेश | 0.570 |

## निम्न मानव विकास

| एचडीआई रैंक 2014 | देश के नाम | एचडीआई वैल्यू 2014 |
|---|---|---|
| 145 | नेपाल | 0.548 |
| 147 | पाकिस्तान | 0.538 |
| 148 | म्यांमार | 0.536 |
| 152 | नाइजीरिया | 0.514 |
| 171 | अफगानिस्तान | 0.465 |
| 176 | कांगो गणराज्य | 0.433 |
| 188 | नाइजर | 0.348 |

स्त्रोत – यूएनडीपी मानव विकास रिपोर्ट 2015

इस रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि 188 देशों में से प्रथम स्थान पर नार्वे, द्वितीय पर आस्ट्रेलिया, तृतीय स्विटजरलैंड, चतुर्थ डेनमार्क् , पंचम नीदरलैण्ड , छठवें जर्मनी का है। जबकि अमेरिका 8वें, रूस 56वें, मलेशिया 62वें ,मॉरीसस 63 वें , श्रीलंका 73 वें, ब्राजील 75 वें, चीन 90 वें, थाईलैंड 93वें स्थान पर अवस्थित होकर उच्च मानव विकास की श्रेणी में समाहित हैं साथ ही मिस्र 108 वें, इंडोनेसिया 110 वें , फिलीयींस 115 वें , दक्षिण अफ्रीका 116 वें ,भारत 130 वें ,भूटान 132 वें , बंगलादेश 142 वें , नेपाल 145 वें , पाकिस्तान 147 वें , म्यांमार 148 वें , नाइजीरिया 152 वें अफगानिस्तान 171 वें कांगो गणराज्य 176 तथा सबसे नीचे नाइजर 188 वें पायदान पर अवस्थित है इससे भारत की मानव विकास के क्षेत्र में सहज आकलन किया जा सकता है ।

इस बार की यूएनडीपी रिपोर्ट में महिला – पुरुषों से जुड़ी विषमता को भी सामने लाया गया है। भारत की दशा इस दृष्टि से पाकिस्तान एवं बांग्लादेश से भी बदत्तर है। दक्षिण एशियाई देशों में भारत केवल अफगानिस्तान से आगे है। शिक्षा के स्तर पर केवल 27 प्रतिशत महिलायें ही माध्यमिक स्तर की शिक्षा हासिल कर पाती हैं। भारतीय संसद में भी महिलाओं की संख्या मात्र 12.2 प्रतिशत है। साथ ही लगभग 40 प्रतिशत बच्चे कुपोषित हैं। मानव विकास सूचकांक में भारत की बदहाल स्थिति के मूल में पूँजीवादी विस्तार तथा व्यक्तिगत उपयोग है। जिससे समाज में हर स्तर पर असमानता तथा विसंगतियों का दायरा फैल रहा है।

इस रिपोर्ट में विकास एवं विषमता प्रमुख रूप से उभरी है, जो भारत के पिछड़ने का प्रमुख मुद्दा है। विषमता के इस आइने में भारत की महिलाओं की दशा भी विषम है। मानव विकास सूचकांक में भारत की दयनीय एवं विषम दशा, विकास वनाम विषमता की गलत सोच के कारण बनी हुई है , क्योकि हमारे नीति निर्धारण कर्ताओं ने सकल घरेलु उत्पाद की वृद्धि दर को एकमात्र विकास का आधार माना हुआ है। परन्तु जब–जब सकल राष्ट्रीय आय, खुशहाली या अर्थव्यवस्था के आकार के बजाय आम आदमी के जीवन स्तर को बेहतरी की कसौटी के आधार पर मापा गया, तब–तब देश की बडी आबादी की तस्वीर वदरंग प्रतीत हुयी है। इस विसंगति को हर वर्ष संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की रिपोर्ट सामने लाती रही है। लेकिन इसे हल्के में लिया जाता है। यही कारण है कि भारत की एक बडी आबादी पेट भर भोजन, बेहत्तर शिक्षा एवं

स्वास्थ्य सुविधाओ तथा कुछ बुनियादी आवश्यकताओं के मानकों के आधार न केवल पिछड़ रही है, बल्कि बदहाल आबादी का दायरा भी बढता जा रहा हैं। इस परिप्रेक्ष्य में इस रिपोर्ट को एक चेतावनी के रूप में मानते हुए केवल जीडीपी के बढते–घटते आँकडो के आधार पर देश के समग्र विकास का आकलन न करते हुए, उसे समाज की वेहतरी से सम्बंधित प्रत्येक स्तर पर परखने की जरूरत है। पिछले कुछ वर्षो से यूएनडीपी गरीबी मापने के इसी तरह के बहुआयामी मापदण्डों का इस्तेमाल कर रही है। इस आधार पर भारत अल्प विकसित देशों की श्रेणी में शुमार है। यूएनडीपी की ताजा रिपोर्ट 2015 के अनुसार भारत में 53.3 प्रतिशत आबादी गरीबी रेखा के नीचे गुजर बसर कर रहे है। जब आधी से अधिक आबादी की तस्वीर बदहाली की सूरत पेश कर रही हो तब भला सर्वागींण, बहुआयामी एवं समावेशी विकास तथा सूचना प्रोद्योगिकी के लीडर की भूमिका की छवि विश्व स्तर पर कैसे पेश हो सकती है।

अतः भारतीय समाज की समृद्धि एवं मानव विकास के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल किया जाना सुनिश्चित होना चाहिए । नीति नियंताओं, सूचना प्रोद्योगिकी के प्रबन्धको तथा प्रबुद्धजनो को सूचना प्राद्योगिकी के अनुप्रयोग के इस तरह के तरीकों का निर्धारण करना चाहिए जिससे अधिक से अधिक वंचित, गरीब, एवं बदहाल तबका विकास की मुख्यधारा में समाहित होकर भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में ला खड़ा करे। तभी भारतीय समाज में सूचना प्रौद्योगिकी की सार्थकता सिद्ध होगी । भारतीय समाज में समानता, समरसता एवं खुशहाली स्थापित होगी।

❐

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 14–18* ***ISSN 0974 -1100***

# सूचना प्रोद्यौगिकी में सायबर अपराध एवं सुरक्षा की चुनौतियाँ

**डॉ. चन्द्रकान्त बन्सीधरराव भांगे**

आज विश्व व्यवस्था का विस्तारित अंग सुचना प्रौदयोगिक मे सायबर आ चुका है। इस सत्य को नकारा नही जा सकता। जिसके सकारात्मक जैसे परिणाम आये है, वैसे भी नकारात्मक है। आज विश्व, राष्ट्रीय तथा ग्रामस्तर पर इंटरनेट का भारी मात्रा में विस्तार हुआ है तथा हो रहा है, अमेरिका चीन के बाद इंटरनेट उपभोक्ता में भारत का क्रम है, विश्व समाज की संवाद, आदान प्रदान इंटरनेट द्वारा होता है। संगणक द्वारा संवाद अदान प्रदान, ई मेल, ऑडिओ, क्लिप, विडिओ क्लिप आदी द्वारा होता है। सुचना अदान प्रदान का व्हर्चुअल जगह में होता है, उसे हम सायबर स्पेस कहते है। विल्यम गिब्सन व्दारा सर्वप्रथम सायबर स्पेस की संकल्पना प्रचलित हुई। इंटरनेट, संगणक सायबर स्पेस और सुचनाओं से सुचना प्रौद्योगिकीकरण का निर्माण हुआ।

सुचना प्रौद्योगिकी का हो रहा विकास साथ ही मानवी जीवन में हो रहा सकारात्मक कार्य, अदान प्रदान इसी में कई चुनोतियॉ उत्पन्न हो रही है उसमें एक समस्या इंटरनेट का नकारात्मक परिणाम सायबर अपराध की पहचान हुई है।

**सायबर अपराध**

एक व्यक्ति या संगठित समूह व्दारा सायबर स्पेस जैसे संगणक, इंटरनेट तकनीकी उपकरणों सेल फोन आदी का प्रयोग कर अपराध करना सायबर अपराध कहलाता है। सायबर हमालावर सायबर अपराध करने के लिए सायबर स्पेस की कही कमजोरीयॉ का प्रयोग करते है। वे मैलवर के उपयोग से संगणक प्रणाली और संगणक साहित्य डिजाईन के कमजोरियॉ का फायदा उठाते है। डॉस हमलो के द्वारा लक्षित वेबसाईटों

को नुकसान पहुचाया जाता है। हॅकींग के द्वारा सुरक्षित संगणक प्रणाली की सुरक्षा को भेदकर उनकी कार्य प्रणाली को खराब करना एक आम तरीका है। पहचान की चोरी करना एक सामन्य बात है। दिन प्रतिदीन खतरे की चुनौतियॉ बढ रही है। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बढी चुनौती है।

**भारत मे पिछले पॉच वर्षों में सायबर अपराध की स्थिती**

| वर्ष | सायबर अपराध मामले |
|---|---|
| 2011 | 2213 |
| 2012 | 3477 |
| 2013 | 5693 |
| 2014 | 9622 |
| 2015 | 11592 |

**स्त्रोत** : नवभारत टाईम्स मुबई दिनांक 17 दिसंम्बर 2016 पेज कमांक 10

सुचना एंव प्रौद्योगिक राज्यमंत्री पी.पी. चौधरी ने राज्यसभा मे स्पष्ट किया की एनसीआरबी के आंकडो के अनुसार पिछले पाच वर्षो में सायबर अपराध 424 प्रतिशत वृध्दी हुई है। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट मे स्पष्ट किया गया है की, इंटरनेट का प्रयोग करने वाली महिलाओ मे लगभग 1/3 महिलाये सायबर अपराध से प्रभावित हो चुकी है। भारत में 35 प्रतिशत महिलाओं ने सायबर अपराध से प्रभावित होने की शिकायत की है तथा सर्वेनुसार लगभग 47 प्रतिशत ने कोई शिकायत नही की है।

**भारत मे सायबर अपराध द्वारा प्रभावित महिला**

| विवरण | समस्या प्रतिशत |
|---|---|
| शिकायत दर्ज की है। | 35 |
| शिकायत दर्ज नही की | 47 |
| अपराध होने का पता नही | 18 |

**स्त्रोत** : ए जर्नल आफ एशियन डेमोक्रेसी एण्ड डेव्हलमेंट पेज नं 83, 2015

इस स्थिती तथा भारत राष्ट्र डिजीटल इंडिया कार्यक्रम द्वारा इटरनेट द्वारा जीन के अंगो को अधिकतर जोडने की योजनाऍ, इससे स्पष्ट है की सायबर अपराध बहुत ही महत्वपूर्ण चुनौती है।

भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में भी कई बार सायबर हमले हो चुके है। दिनांक 04 दिसम्बर 2004 को पाक सायबर आर्मी नाम के गुट द्वारा सीबीआई अथवा गुप्त सुचना संगठन की वेबसाईट हॅक हुई थी। डीआरडीओ के वेबसाईट पर कुछ ऐसे ही सायबर अपराध मामलों में सुचना आ चुकी है। भारतीय आकाश संगठन इसरो यह अंतराल तंत्रज्ञान संशोधन तथा भारतीय उपग्रह उड़ाण संस्था है, इस संस्था के वेबसाईट पर चीन से सायबर हमले हुए है, इसमें बहुत सा नुकसान नही हुआ है, किंतु भारत सरकार द्वारा इस हमले के विरुध्द प्रतिरक्षा यंत्रणा का निर्माण हुआ है।

**सायबर आंतकवाद :** जब कोई संगठन एक किसी राज्य में स्वतंत्र रुप से कार्य कर रहा हो और सायबर स्पेस के माध्यम से आंतकवादी गतिविधियों को संचलित करता है, तब इसे सायबर आंतकवाद कहते है। आज आंतकवादी बडी मात्रा में इंटरनेट का प्रयोग कर रहे है, इस के द्वारा विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में आंतकी एक सुत्र में बंध रहे है। उदाहरण के लिए इसि संगठन में महाराष्ट्र के कई युवक सायबर स्पेस द्वारा शामील हुए है। एटीएस द्वारा पकडे जा चुके है साथ ही 11 सिंतबर 2001 का अमेरिका वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुआ हमला इसमें सायबर की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

इससें स्पष्ट है की, विश्व को संगणक एंव इंटरनेट मानवी विकास एंव नजदिकीयॉ बडी रफतार से वृध्दीगंत हो रही है। साथही सायबर अपराध सामान्य नागरिक युवतियॉ, महिलाओं, शहर, राज्य तथा राष्ट्र की सुरक्षा के लिए चुनौती पूर्ण है यह भी सिद्ध हो रहा है।

इस साबयर अपराध हमलें में प्रयुक्त होने वाले शब्द 1– फिशींग, 2–विशिंग, वायरस फिशींग, 3–टेबनेबिंग, 4–व्हेलिंग, 5–स्पुफींग, 6–जोंबीस, 7–बुट नेटस, 8–फारमिंग ,9–ड्राइवबार्ड, 10–एमआईटीएम, 11–स्पेस इत्यादी

**अ सायबर अपराध को दो श्रेणी में विभाजित किया जाता है।**

अपराध से सीधा दुष्प्रभाव संगणको पर होता है।

संगणक वायरसो को फैलाना

सेवा हमलें से इंकार

दुर्भावना पूर्ण कोड

**ब** संगणक नेटवर्क अथवा यंत्रो से अपराध करने में सहजाता हो जिनका प्राथमिक लक्ष संगणक नेटवर्क अथवा डिवाइस की स्वातंत्रता है। इसके द्वारा निम्म अपराध होते है।

डाटा को बदलकर अथवा नष्ट करके वेबसाईट को निष्क्रीय बनाना

कॉपीराईट एक्ट उल्लघन

पोनोग्राफी का विस्तार अधिक रुप सें

साइबर स्टॉकिंग, महिलाओ के प्रति अपमानित भाषा आदी लडकीयों को अपमानित एंव उनकी विचारधारा सम्मान को नुसारन पहुचाने के लिए

अश्लीलता का प्रसार

ई मेल द्वारा ब्लैकमेलिंग

नकली पहचान बनाना

गुप्तता अधिकारों का उल्लघंन

सोशल मिडीया का दुरुपयोग

सुचना युद्ध

सुचना की गुप्तता को भंग करके घोटाले आदी

इस तरह कें साबर अपराध से भारतीय नागरीक तथा भारतीय सुरक्षा प्रभावित है।

**रक्षा क्षेत्र के प्रतिष्ठान**

अंतर्गत एंव बाहरी सुरक्षा से संदर्भीत संवेदनशील दस्तावेज

अनियंत्रित उपग्रह सहीत संचार नेटवर्क

वित्तीय सेवाओं का पतन

रेल्वे ट्रैफिक कट्रोल विध्वंस

विज्ञान प्रौद्योगिकी और अनुसंधान के प्रतिष्ठित संस्थान आदी सायबर अपराध की भारतीय सुरक्षा के महत्व को देखते हुए भारत सरकार द्वारा एक्ट पास किय गये है।

**सुचना प्रौद्योगिकी एक्ट**

| | |
|---|---|
| एक्ट 53 | संगणक संदर्भीत व्यवस्था में हस्तक्षेप 1 करोड का जुर्माना |
| एक्ट 44 | सही दस्तावेज सादर न करना रुपये 5000 जुर्माना |
| एक्ट 65 | संगणक दस्तावेज में बदलाव, तीन वर्षो का तुरुंगवास एंव 2 लाख का जुर्माना |
| एक्ट 66 | हॅकींग तीन वर्ष तुरुंगवास एंव 2 लाख जुर्माना |
| एक्ट 67 | गलत माहिती देना 10 वर्ष का तुरुंगवास अथवा एक लाख रुपये का जुर्माना |

| | | |
|---|---|---|
| एक्ट 73 | डिजीटल स्वाक्षरी दुरूपयोग | पॉच वर्षो का तुरुंगवास अथवा एक लाख रुपये का जुर्माना |

सायबर प्रोटेक्शन एपिलेट ट्रिब्युनल द्वारा सायबर अपराध गुन्हेगार के विरुद्ध रिपोर्ट लिखी जा सकती है। नगरी एक्ट 1908 अनुसार सुचना प्रोद्योगिकी एक्ट संदर्भ में कार्यवाही के अधिकार पुलीस विभाग को दिये गये है।

सायबर अपराध संदर्भ में विभिन्न जीवनमान के क्षेत्र में बढती उपयुक्तता को देखते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा दृष्टीकोण से कई एक्ट आ चुके है। किंन्तु सुचना एंव प्रोद्योगिकी राज्यमंत्री पी.पी. चौधरी के वक्तव्य के अनुसार गत वर्ष में 424 प्रतिशत सायबर अपराध में वृद्धी हुई है। इससे स्पष्ट है की, सुचना प्रोद्योगिकी एक्ट, हमारी संगणक व्यवस्था सही सुरक्षित मार्ग निकालने में अभी भी सफल नही हुई है। इसके लिए हमे निजी तौर पर सावधानी तथा संगणक, इंटरनेट ज्ञान में वृद्धी तथा जागरुकता की आवश्यकता है ।

❐

**सन्दर्भ –**


1 *अशोककुमार भारत की आंतरीक सुरक्षा, मॅकग्रोहिल एज्युकेशन, न्यु दिल्ली 2016*

2 *डॉ देवेंद्र विसपुते, भारताची अंतर्गत सुरक्षा, प्रशांत पब्लिकेशन, जळगांव 2014*

3 *डॉ दिपक शिकारपुरे, सायबर गुन्हे, 21 व्या ातकातल तंत्रज्ञानाचा धोका, विश्वकर्मा पब्लिकेशन, पुणे*

4 *A Journal of Asia Democracy and Development, ISSN 0973-3833, Vol. XV (4) 2015*

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 19–28* ***ISSN 0974 -1100***

# भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास पर सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव

**डॉ. सरिता मालवीय**

वृहत् संख्या में अध्ययनों से ज्ञात होता है कि वर्तमान में भारतीय जनसंख्या का लगभग 70 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था के लिये सबसे अधिक आवश्यकता ग्रामीण विकास की है। ग्रामीण व्यापार में सुधार करने पर ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था को विकसित किया जा सकता है। ऐसे देशों के लिये कोई प्रासंगिकता है कि जहाँ देश में अभी भी कईं लाखों बुनियादी जरूरतों की कमी है वहीं हमारे देश के विकसित व्यापार एवं उत्पादन के पूँजी निवेश पद्धति से संबंधित आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ा है। भारत के परिपेक्ष्य में यह एक विरोधभास प्रतीत को रहा है। फिर भी भारत एवं भारत जैसे विकासशील देशों में ग्रामीण जनसंख्या के लिये सूचना प्रौद्योगिकी के ठोस लाभ प्राप्त करने के लिये कई प्रयास किये जा रहे है और ऐसा इस ढंग से किया जाता जो आर्थिक अभिप्राय को बनाता है।

भारतीय सरकार को भी ग्रामीण व्यापार के विकास के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिक का योगदान तथा ग्रामीण विकास की भूमिका का बोध हुआ। ग्रामीण क्षेत्रों में कईं आगामी परियोजनाओं की श्रृंखलाओं के साथ कईं परियोजनायें प्रस्तावित की गई है, जो सरकार द्वारा कुछ ही समय में शुरू की जानी हैं। इसमें ग्रामीण साक्षरता को प्राथमिक सर्वोच्च श्रेणी पर रखा है। रूझान (Trend) दर्शाता है कि ग्रामीण व्यापार, शहरी व्यापार से बड़े पैमाने की ओर तेजी से एवं दोगुना बढ़ रहा है। राष्ट्रीय अनुप्रयुक्त आर्थिक अनुसंधान परिषद्, नेशनल कौंसिल फॉर अप्लाइड इकॉनामिक्स रिसर्च (NCAER) के

द्वारा किये गये अध्ययन के अनुसार वर्ष 2015 के अंत में ग्रामीण भारत में मध्यम एवं उच्च आय वाले परिवारों की संख्या 90 लाख से 120 लाख हो गई है जो शहरी भारत, जहाँ मध्यम एवं उच्च आय वाले परिवारों की संख्या 59 लाख है, की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक बढ़ गई है।

भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े स्तर पर जीवन शैली में परिवर्तन, बेहतर संचार नेटवर्क और उपभोक्ता की मांग संरचना में तेजी से परिवर्तन ग्रामीण व्यापार में प्रभावशाली वृद्धि को दर्शाता है। ग्रामीण व्यापार के स्वरूप के बदलने के साथ ग्रामीण अंचलों में नवीनतम प्रौद्योगिकी कार्यक्रमों के लिये केवल नेटवर्क की सुविधा प्रदान करने के आधार पर सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका बढ़ गई है। यह देखा जा रहा कि ग्रामीण अंचलों में रहने वाले ग्रामीणों में पहले की तुलना में अधिक क्रय शक्ति एवं पहले की अपेक्षा नई तकनीकों या उपयोग कलाओं को सीखने में अधिक खुलापन है। ग्रामीण क्षेत्रों में क्रयशक्ति की वृद्धि के प्रमाण को हम श्री डी. शिवकुमार (Buisness Head - Personal Product Division, Hindustan Unilever Limited) के द्वारा कहे गये इस कथन से ले सकते है कि ग्रामीण भारत के द्वारा FMCG (Fast Moving Consumer Goods) पर खर्च करने के लिये 75,000 रू उपलब्ध हैं जो शहरी भारत द्वारा, जो लगभग 55,000रू है, खर्चे की तुलना काफी अधिक है।

भारत सरकार ने ग्रामीण भारत के लिये भारत सरकार, ग्रामीण भारत के लिये पहले से ही इन्फो–कियोस्को (INFO-KIYOSKO) (साइबर कैफे का ग्रामीण संस्करण) की सुविधा प्रदान कर चुकी है। जो आधारभूत संचार सुविधायें जैसे इन्टरनेट कनेक्शन और दूरसंचार की सुविधायें प्रदान करते हैं। आधुनिक संचार और संचार प्रौद्योगिकी (ITC's) में योगदान करने की बहुत सारी संभावनायें पायी गयी हैं। इन्फो–कियोस्को (INFO-KIYOSKO) की परियोजनायें आन्ध्रप्रदेश, दिल्ली, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तरप्रदेश में अधिक प्रचलित हैं और इससे ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाई दे रही है।

**2. सूचना प्रौद्योगिकी एवं विकासः–**

सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से दो प्रकार के संभावित लाभ है। पहला, स्थैतिक एवं गतिशील लाभ दोनों लाभ होते हैं। स्थैतिक लाभ एक बार ही प्राप्त होते है और यह

दुर्लभ संसाधनों के उपयेग की अधिक दक्षता से मिलता है, जो वर्तमान उच्च उपभोग के लिये अनुमति देता है। यह दो प्रकार की स्थैतिक लाभ को अंतर करने के लिये उपयोगी हैं। एक संचालन की कार्यकुशलता को बढ़ाता है, दूसरा लेनदेन की लागत को कम करता है। दोनों ही मामलों में, भंडारण, संसाधन और संचार कम लागत के द्वारा और अधिक प्रभावी लाभ प्राप्त करने की प्रणाली है। गतिशील लाभ अधिक वृद्धि, पूरे भविष्य का संभावित रूप से उभरता हुआ उपभोग से प्राप्त होता है। दूसरे प्रकार का संभावित लाभ आर्थिक असमानता को कम करने से प्राप्त होता है, इस प्रकार की कमी सामाजिक लक्ष्य पर सहमति तक विस्तारित है और इसीलिये यह एक सामाजिक लाभ है। तथापि, ग्रामीण विकास कम से कम सतही, बढ़ती दक्षता और वृद्धि के साथ आर्थिक असमानता को कम करने हेतु सूचना प्रौद्योगिकी पर ध्यान केन्द्रित करता है। विकास में आबादी की क्षमताओं में सुधार, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण, स्वतंत्र रूप से किसी भी प्रकार के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष आर्थिक प्रभाव शामिल हो सकते हैं।

इलेक्ट्रानिक प्रसंस्करण (Electronic Processing), संचयन और सूचना का संचार सूचना प्रौद्योगिकी में शामिल है। जहाँ कुछ भी हम डिजिटल रूप में प्रस्तुत करेगें सूचना के रूप में शामिल हो जायेगा। जैसे– समाचार, मनोरंजन, निजी संचार, शिक्षण सामाग्री, एवं रिक्त भरे हुये फार्म, घोषणायें, अनुसूचियाँ तथा इसी प्रकार की अन्य जानकारियाँ शामिल हैं। सॉफ्टवेयर प्रोग्राम, जो आकड़ों की प्रक्रिया (जैसे– खोज करना, सारणीकरना व गणना करना) की जानकारी इस अर्थ में प्रस्तुत करने के लिये किसी विशेष प्रकार के उचित मध्यवर्ती के रूप में प्रतिनिधित्व करता हैं। विभिन्न प्रकार की संसूचनाओं को वर्गीकृत करने के लिये हम मानक आर्थिक लक्षणों के उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिये, मनोरंजन, निजी संचार और कभी–कभी समाचार आदि तैयार वस्तुयें हैं। शैक्षणिक सामाग्री, नौकरी की घोषणा या किसी अन्य प्रकार के समाचार (उदाहरण के लिये– किसानों के लिये मौसम की खबर) मध्यवर्ती वस्तुयें हैं, आमतौर पर ये आय–अर्जित करने वाले अवसरों में सुधार करने के लिये उपयोग किया जाता है।

आमतौर पर सूचना सामान (Information Good) की एक विशेषता है कि एक व्यक्ति द्वारा इसका उपयोग किये जाने पर भी अन्य व्यक्ति के लिये इसकी उपयोगिता कम नहीं होती है, जैसे– संदेश या मौसम की जानकारी से संबंधित समाचार बहुत सारे लागों द्वारा एक साथ या अनुक्रमिक रूप से देखा जाता है। अलग–अलग लोग किसी प्रकार की जानकारी या सूचना का अलग–अलग मूल्यांकन कर सकते हैं, यह संदेश या समाचार की

जानकारी पर निर्भर करता है। मित्र या रिश्तेदार केवल निजी संदेशों की जानकारी में ही दिलचस्पी ले सकते हैं जबकि जिले में किसान मौसम की जानकारी आदि में दिलचस्पी ले सकते है। उपयोगकर्ताओं के द्वारा जानकारी साझा करने की क्षमता व्यावसायिक आधार पर उपलब्ध करने की संभावनाओं को प्रभावित कर सकता है।

सरकारी एवं गैरसरकारी दोनों ही प्रकार के प्रावधानों के लिये, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के संचालन में किफायती संसाधनों द्वारा दक्षता के साथ–साथ व्यापारिक लेन–देन में वृद्धि सूचना प्रौद्योगिकी के मुख्य लाभों में से एक लाभ है। अन्यथा सूचना को आमने–सामने मिलकर, डाक, कोरियर, मुद्रण वितरण, टेलीग्राफी या दूरभाष आदि के स्थान पर इन्टरनेट के जरिये डिजिटल इलेक्ट्रानिक में संचारित कर सकते हैं। इंटरनेट के उपयोग से ही दक्षता में वृद्धि होती है न कि खुद ब खुद। दूरभाष, विशेष रूप से, बहुत सारी सूचनाओं के लिये संचार का दक्ष माध्यम है। सूचना प्रौद्योगिकी में नये निवेश की भी आवश्यकता है जो नई आधारित संरचना पर लगी लागत एवं रखरखाव में लाभ एवं लम्बी यात्राओं, समय एवं पेपर की अपेक्षाकृत बचत कर सके। सूचना प्रौद्योगिकी की दक्षता में वृद्धि के लिये स्वयं संचार प्रतिबंधित नहीं है। सूचना प्रौद्योगिकी दूरभाष नेटवर्क की दक्षता को बढ़ा सकते हैं, यह संचारों का पता लगाना एवं विश्ले ाण करना संभव कर सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी शब्द–संसाधन (Word Processing), खातों को बनाये रखना (Maintainig account), सूची प्रबंधन तथा अन्य गतिविधियों, जिनके लिये लम्बी–दूरी के संचारों की आवश्यकता नहीं होती, को भी अधिक दक्ष बनाती है।

विकासित देशों में उपयोग किये जा रहे इंटरनेट के अनुभव से ज्ञात होता है कि व्यापारिक बाजार में लेन–देन को पूर्ण करने की जानकारी विशेष रूप से मूल्यवान है। सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित संचार व्यवस्था (संचयन एवं प्रसंस्करण से संयुक्त) खरीदारों एवं विक्रेताओं के साथ लाने के लिये अधिक प्रभावी रूप से प्रमुख संभावित विधि का प्रतिनिधित्व करने में सक्षम हैं। यह वृद्धि खोजी गई कम कीमत, बेहतर क्रेता एवं विक्रेता के मिलने से तथा साथ ही नये बाजार के सृजन से होती है। यूनाइटेड स्टेट के नीलामी एवं रोजगार की वेबसाइड के उदाहरण से यह वृद्धि स्पष्ट होती है। ग्रामीण भारत के परिपेक्ष्य में देखा जाये तो ग्रामीण भारत में किसान अपनी फसल बेचते हैं जिससे उत्पादन सामाग्री एवं परिवार व स्वयं के लिये भौतिक वस्तुयें खरीदते हैं तथा नौकरी खोजने वाले इंटरनेट पर आधारित सेवाओं के संभावित उपयोग कर अनुकूल नौकरी की तलाश करते है। सूचना प्रौद्योगिकी सरकारी कृषि प्रसार कार्यकर्ता एवं

किसानों के बीच नजदीकियां भी लाते हैं। उदाहरण के लिये– किसान फसल बोने के समय कृषि विभाग के कृषि प्रसार कार्यकर्ता किसी भी प्रकार की सहायता तुरन्त प्राप्त कर सकता है, जबकि कीटनाशक, घास या जलवायु स्तरों को जानने के लिये सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों, जैसे– ई–कॉल केन्द्र(e-call center), वेब–पोर्टल(web-portal), मोबाइल तकनीकों (CDMA और GPRS) भी शामिल है), का उपयोग कर सकता है, इसीलिये भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास एवं हरित क्रांति लाने के लिये यह प्रक्रिया भारत में लागू की गई योजनाओं एवं कार्यक्रमों को प्रभावी बनाती हैं, क्योंकि अब ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से कृषि के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के कार्यान्वयन के साथ नई योजनाओं और कार्यक्रमों के विकास में समय एवं धन की बर्बादी नहीं होती है अन्यथा कृषि विस्तार कार्यकर्ता और किसानों के पारस्परिक विचार–विमर्श में ही अधिकतर समय एवं धन व्यय हो जाता है और अधिक समय एवं धन अधिक व्यय हाने से योजनायें सफल नहीं हो पाती है। उदाहरण के लिये कुछ समय पूर्व आन्ध्रप्रदेश सरकार ने किसानों की समस्याओं एवं उनके समाधानों के लिये 'किसान कॉल सेंटर' का प्रारंभ किया है, यह उस समय भारत में इस तरह का अनोखा व प्रथम परियोजना थी और यह किसानों की समस्याओं और उनके समाधानों साथ उस पर उनकी प्रतिक्रिया के कारण लोकप्रिय हो गया था।

### 3. ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी के लिये मुद्दे एवं चुनौतियाँ–

अब तक हमने ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी के साधनों को कार्यान्वित करने के प्रभावों एवं लाभों को देखा है, परन्तु हम सूचना प्रौद्योगिकी के साधनों को कार्यान्वित करने से ग्रामीण क्षेत्रों में अर्थव्यवस्था के विकास के साथ–साथ सम्पूर्ण भारत का विकास भी कर सकते हैं। इसीलिये यह भी सही है कि यदि हम भारत देश को एक विकसित देश बनाना चाहते हैं तो हमें भारत के ग्रामीण क्षेत्रों, जिनमें जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग निवास करता है, की उपेक्षा नहीं कर सकते हैं।

इस बात पर कोई संदेह नहीं कि भारत सरकार, ग्रामीण क्षेत्र में लोगों की पारदर्शिता की कमी, पूर्णतः भागीदारी में कमी या हम कह सकते हैं कि उनमें जागरूकता की कमी के कारण, सरकार की योजनाओं एवं नीतियों की जानकारी में कमी होने के कारण सरकार को इस दिशा में कई बार बहुत पहल करने पर भी आशायीत परिणाम प्राप्त नहीं हुये हैं। इस समय में सूचना प्रौद्योगिकी को निराधार रूप

से एक ही समय में कई लोग ज्ञान प्रदान करने का समाधान सरकारी योजनाओं और नीतियों में कई लोगों की वृद्धि करने से है जो ई–गर्वनेस (e-governess) के रूप में जाना जाता है । इसीलिये यदि हम ई–गर्वनेस (e-governess) को लागू करना चाहते हैं तो हमें सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों को लागू करना होगा। यदि हम भारत को विकसित देशों की श्रेणी में लाना चाहते हैं तो हमें ई–गर्वनेस (e-governess) को लागू करना होगा जिससे भारत सरकार आम लोगों के करीब होगी।

**बिजली आपूर्ति–**

भारत जैसे विशाल देश में सूचना प्रौद्योगिकी को लागू करने में सभी समस्याओं में से सबसे बड़ी समस्या बिजली आपूर्ति की है। हाँलाकि कुछ हद तक बैटरी बैकअप (battery backup) और सौर उर्जा (solar energy) के उपयोग इस समस्या का हल है,परन्तु सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा बैटरी बैकअप (battery backup) और सौर उर्जा (solar energy) को कार्यान्वित करना उसकी लागत को बढ़ाता है। बैटरी बैकअप(battery backup) बिजली आपूर्ति की कमी को दूर करने का विश्वसनीय आंशिक समाधान है और सौर उर्जा (solar energy) आने वाले समय में अधिक आशाजनक हो सकती है, वैसे ये सौर उर्जा पहले से सूचना प्रौद्योगिकी में उपयोग की जा रही है। वर्तमान समय में इनसे सम्बन्धित समस्या यह आ रही है कि इन विकल्पों और बैकअपों पर भरोसा करना अनावश्यक रूप से प्रक्रिया की लागत को बढ़ा रहा है और यह भारत की समस्त अर्थव्यवस्था के लिये सत्य है। यह ठीक प्रकार से ज्ञात है कि बिजली क्षेत्र में क्षमता की कमी की मांग और वितरण की गुणवत्ता एवं कमजोर वितरण प्रमुख बाधा है।

**सूचना प्रौद्योगिकी को ग्रामीण क्षेत्र में लागू करने में लागत कारक**(cost factor)–

यह भारत जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी के कार्यान्वयन में हार्डवेयर (hardware) घटकों जैसे कम्प्यूटर मशीन, नेटवर्क उपकरण –रूटर, हब्स, केबल, प्रिंटर और साफ्टवेयर घटक जैसे– आपरेटिंग सिस्टम(oprating system), अन्य एप्लीकेशन्स साफ्टवेयर स्थापित करना पड़ते हैं। हांलांकि, डेस्कटाप कम्प्यूटिंग एवं बाह्य उपकरणों के घटकों के मानकीकरण के साथ, तेजी से तकनीकी सुधार, उत्पादन की लागत में कमी तथा अभी कुछ समय पूर्व से ही आयातीत हार्डवेयर पर टेरिफ में होने वाले बदलाव के परिणामस्वरूप मूल्यों में आयी कमी सत्य है। अब वर्तमान समय में एक ऐसा कम्प्यूटर जो सीडी ड्राइव, प्रिंटर, स्कैनर, कैमरा और पावर बैकअप आदि युक्त ग्रामीण इंटरनेट

कियस्को (KIYOSKO) द्वारा 50,000 से भी कम कीमत में स्थापित करना संभव है, परन्तु जब इसे सम्पूर्ण भारत में स्थापित किया जायेगा तो यह लागत काफी अधिक हो जायेगी। इस प्रक्रिया को लागू करने के लिये हमें अधिक धन की आवश्यकता होगी जो कर लगाकर प्राप्त कर सकते हैं तथा साथ ही साथ इस दिशा में निजी क्षेत्रों का योगदान भी आवश्यक है। साफ्टवेयर की द्वितीय लागत ऑपरेटिंग सिस्टम एवं एप्लीकेशन साफ्टवेयर भी चिंता का विषय है। डेस्कटॉप पर विन्डोव को एकाधिकार प्राप्त होने के पश्चात् से संभावित रूप से ऑपरेटिंग सिस्टम की लागत उच्चतम है। इस समस्या का एक समाधान यह है कि सरकार को LINUX जैसे खुले ऑपरेटिंग सिस्टम का उपयोग करना चाहिये।

**सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों के उपयोग के लिये प्रशिक्षण एवं मुद्दे के बारे में जागरूकता–**

ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी लागू करने के लिये यह शर्त है कि हम ग्रामीण लोगों को सूचना प्रौद्योगिकी एवं इससे प्राप्त लाभों के बारे में जागरूक करें। चाहे औपचारिक फ्रेंचाइसी हो या स्वतंत्र किसान संचालक हो या ग्रामीण कियस्को (KIYOSKO) के संचालक हो सभी के लिये प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण पहलू बन जाता है। विभिन्न स्तरों (ग्राम एवं जिला क्षेत्र) पर क्षेत्रीय कर्मचारियों को प्रशिक्षण देना भी महत्वपूर्ण है। इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सरकार को पहल करना चाहिये तथा इसी दिशा में गैर सरकारी संगठनों (NGO's) के साथ भागीदारी करना भी आवश्यक है।

**सूचना प्रौद्योगिकी को लागू करना: विभिन्न वाद के अध्ययन एवं उनके प्रभाव–**

सरकारी एवं कुछ निजी क्षेत्रों में कई कार्यक्रमों को शुरू किया था, जिनके माध्यम से ग्रामीण भारत के लोग आगे बढ़ सके तथा सूचना प्रौद्योगिकी की सेवाओं और कार्य को अधिक सम्मिलित रूप से उपयोग करने के लिये सक्षम हो सके। सरकारी एवं निजी क्षेत्रों के द्वारा कुछ निम्न कार्यक्रम चलाये जा रहें हैं–

**1) सामुदायिक सूचना केन्द्र (Community Information Centers)–**

यह कार्यक्रम विशेष रूप से इन्टरनेट के उपयोग एवं सूचना प्रौद्योगिकी की सेवायें नागरिकों को प्रदान करने के लिये रूपरेखा बनायी गई है। जो सरकार वं नागरिकों के बीच एक–दूसरे का आमना–सामना करने के लिये स्थपित किया गया है। भारत के पूर्वोत्तर राज्य–अरूणाचल प्रदेश, आसाम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड

और त्रिपुरा में इसके केन्द्र है। ये केन्द्र अनुपयुक्त परिस्थितियों में भी राज्य संपर्क करने में मदद करता है। इन केन्द्रों को सामान्यतः CIC कहा जाता है, जो आमतौर पर विद्यालयों, महाविद्यालयों या किसी सरकारी कार्यालयों में स्थापित होते है। यहाँ लोगों से प्रवेश करने एवं उपयोग करने के लिये नाममात्र राशि ली जाती है, जिसे केन्द्रों के रख–रखाव के लिये खर्च किया जाता है।

2) **दृष्टि (Drishtee):–**

दृष्टि को पहले पाँच राज्यों में लागू किया गया था जो बढ़कर छः हो गये हैं यह एक निजी संस्था है जो साइबर एड्ज (Cyber Edge) के नाम से जानी जाती है। यह बिहार, हरियाणा, मध्यप्रदेश, पंजाब एवं राजस्थान में उपलब्ध हैं। इसे समाज के कमजोर वर्ग के लोगों, जो अंतर्राष्ट्रीय भाषा को नहीं समझ सकते हैं, के लिये बनाया गया है। यह संरचना मुख्य रूप से ग्रामीण एवं अर्द्धशहरी क्षेत्रों के लिये बनाई गई हैं। केन्द्रीय भारत में Drishtee.com की उत्पत्ति ज्ञानदूत से हुई है, ज्ञानदूत मध्यप्रदेश के धार जिले की सरकारी परियोजना थी। दृष्टि ने इसी संरचना को लेने का प्रयास किया है और तेजी से पूरे देश में दोहराया है। वर्तमान में, राजस्व वितरण समझौतों के अनुसार, फ्रैंचाइची द्वारा चलाये जा रहे दृष्टि कार्यक्रम में कुछ राज्यों में कियस्को (KIYOSKO) इंटरनेट ने 100 से अधिक ग्रामों का आंकड़ा पार कर लिया है। दृष्टि एक व्यवसायिक संगठन है जिनकी संरचना एवं रणनीति ग्रामीण गरीबों एवं कमजोर को विशिष्ट सामाजिक उद्देश्य के साथ लाभ प्रदान करना है। दृष्टि कार्यक्रम न केवल कियस्को (KIYOSKO) का व्यक्तिगत फ्रैंचाइसी बनाना शामिल है, बल्कि जिले के लिये संभावित फ्रैंसाइसी केन्द्रों (hub) बनाना भी शामिल है । इसी समय पर, यह दृष्टि कार्यक्रम का संचालन एवं सामाजिक उद्देश्यों की उपलब्धि को कार्यान्वित करने की क्षमता को कम कर देता है। ये बिजली व्यवघान के लिये मानक बैटरी बैकअप का उपयोग करता है और यह जिला स्तरीय इंटरनेट के लिये वाय–फाय (WI-FI) का प्रयोग करता है हालांकि यह मुख्य रूप से डायल–अप नेटवर्क पर विश्वास करता है। दृष्टि ई–गर्वनेस लागू करने में भी मदद करता है। इस संदर्भ में, राज्य और स्थानीय दोनों ही जिला स्तरीय सरकारी अधिकारी के साथ अनौपचारिक भागीदारी को बहुत महत्वपूर्ण किया गया है। उदाहरण के लिये, सिरसा एवं जयपुर जिलों में दृष्टि ने जिला सरकार और निर्वाचकों (constituents) के बीच जानकारी के आदान प्रदान के लिये एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ के रूप में कार्य करने में सक्षम है।

**3) भारतीय वैश्वीकरण व्यापार सेवा (Indian Corporation Serving Globle Market ITC)–**

भारतीय वैश्वीकरण व्यापार सेवा को संक्षिप्त में ITC लिखा जाता है। इसे कियस्को (KIYOSKO) का ई–चौपाल (e-choupals) कहा जाता है और इनकी कई भिन्न–भिन्न विशेषतायें हैं। इनमें एक भेदभाव कारक है कि ई–चौपाल (e-choupals) पूर्ण रूप से ITC के कृषि उत्पादों की आपूत्ति श्रृंखला को समर्थन देने के लिये तैयार है। इसी के साथ ई–चौपाल (e-choupals) पुरी तरह से निजी स्वामित्व एवं ITC द्वारा स्थापित किये गये है, साथ ही इसमें संचालक के स्वयं के किसी प्रकार का निवेश या जोखिम नहीं होता है। इसके अतिरिक्त ई–चौपाल (e-choupals) का संकेन्द्रण हमेशा सभी किसान होने के कारण संचालक सदैव पुरूषों को ही बनाया जाता है। इन्हीं सभी सुविधाओं के कारण ई–चौपाल (e-choupals) पहले के तीन कार्यक्रमों से भिन्न है। ई–चौपाल (e-choupals) प्रारम्भ करने में ITC के अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक विभाग (International Buisness Division) के प्रमुख दिये गये सशक्त दिशा निर्देश एवं स्पष्ट संकेन्द्रण को शामिल किया गया है। ITC पर्याप्त संगठनात्मक और प्रबंधकीय क्षमताओं को इस पहल की झुकाव करने में सक्षम हैं। ITC के कार्यों को मन में बैठाकर प्रबंध ाक प्रशिक्षुओं को ई–चौपाल (e-choupal) की संरचना बहुत तल्लीन कर दिया जाता है। मुख्यतः ई–चौपाल (e-choupal) के भाग होते हैं, ये ई–चौपाल (e-choupals) इन चार बहुत विशेष उत्पादों झींगा, कॉफी, गेंहूँ और सोयाबीन के अनुरूप तैयार है। ई–चौपाल (e-choupal) सोयाबीन एवं अन्य संबंधित उत्पादों पर स्थानीय बाजार (मंडी) की कीमतों एवं वैश्विक व्यापारिक मूल्य की जानकारी प्रदान करते है जिससे किसान उनको जानकर तुलनात्मक अध्ययन कर सकें । वे हमें ITC के विशेषज्ञों के द्वारा फसल, बीज, उर्वरक आदि अनुकूल विकसित एवं संचालक संबंधी जानकारी पहुँचा देते हैं । ई–चौपाल (e-choupals) को ITC के द्वारा बिजली के बेकअप, सौर उर्जा एवं VSAT संचालन के साथ स्थापित किया है। ई–चौपाल (e-choupal) के उपकरण की लागत ITC के द्वारा वहन की जाती है जो चयनित किसान के द्वारा चयनित स्थानों पर किया जाता है। इसके साथ उच्च सामाजिक ओहदे वाले किसानों को संचालक बना देने से अतिरिक्त लाभ प्राप्त होता है, उसे संचालक बनाने के लिये आवश्यक है कि उसके चयनित स्थान विस्तृत एवं उपकरणों से युक्त होना चाहिये जिसमें VSAT एवं छत पर सौर पेनल भी

शामिल है। ई–चौपाल (e-choupal) में किसानों को गांव की सेवा करने के लिये शपथ दिलाते हैं एवं ई–चौपाल ITC द्वारा इनके लिये प्रशिक्षित किया जाता है जबकि यह कार्य, गर्व एवं सामाजिक दबाव का महत्वपूर्ण तत्व है। संचालक सोयाबीन का थोक में क्रय करने पर कमीशन प्राप्त करते हैं, इसके अतिरिक्त ई–चौपाल (e-choupals) से यह क्रय दर्ज कराने पर संचालक को ई–चौपाल (e-choupals) के द्वारा राजस्व प्रदान किया जाता है।

**4) ग्रामीण ई–सेवा (rural e-seva)–**

इसे आन्ध्रप्रदेश सरकार द्वारा आरम्भ किया गया था। यह प्रारम्भ में ई–गर्वनेन्स (e-governance) सुविधा देने के लिये पश्चिमी गोदावरी जिले में कार्यान्वित किया गया था। केन्द्र सरकार ने ग्रामीण भारत के लोगों को बेहतर प्रशासन सुविधा प्रदान करने के लिये तैयार किया है। ई–सेवा (rural e-seva) की लोकप्रियता का अंदाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि वर्ष 2013 में 6000 लाख से अधिक राशि केवल बिजली भुगतान के लिये एकत्र की गई थी। ई–सेवा (rural e-seva) में सफलता प्राप्त होने पर, सरकार ने इसे टेलिफोन एवं स्थानीय सरकारी बिलों के संग्रहण के क्षेत्रों में प्रारम्भ कर सफलता की आशा कर रही है। ई–सेवा (rural e-seva) में आये दिन सफलता ही प्राप्त हो रही है। जैसे– ई–सेवा (rural e-seva) नागरिक को घर बैठे प्राप्त करने में मदद करती है, जो आरामदायक एवं विश्वसनीय है।

❐

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 29–33* ***ISSN 0974 -1100***

# शिक्षा में सूचना और संचार प्रोद्यौगिकी

**डॉ. श्रद्धा मिश्रा**

''जिस प्रकार संगमरमर के लिए शिल्प कला है उसी प्रकार मानवीय आत्मा के लिए शिक्षा है । ''–जोसेफ एडी्सन

पिछले कुछ दशकों से प्रौद्योगिकी ने हर संभव मार्ग से हमारे जीवन को पूरी तरह बदल दिया है। भारत एक सफल सूचना और संचार प्रौद्योगिकी से सज्जित राष्ट्र होने के नाते सदैव सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग पर अत्यधिक बल देता रहा है, न केवल अच्छे व शासन के लिए बल्कि अर्थव्यवस्था के विविध क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, कृषि और शिक्षा आदि के लिए भी।

शिक्षा निःसंदेह एक देश की मानव पूंजी के निर्माण में किए जाने वाले सर्वाधिक महत्वपूर्ण निवेशों में से एक और एक ऐसा माध्याम है जो न केवल अच्छे साक्षर नागरिकों को गढ़ता है बल्कि एक राष्ट्र को तकनीकी रूप से नवाचारी भी बनाता है और इस प्रकार आर्थिक वृद्धि की दिशा में मार्ग प्रशस्त होता है। भारत में ऐसे अनेक कार्यक्रम और योजनाएं, जैसे मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, ''सर्व शिक्षा अभियान'', ''राष्ट्रीय साक्षरता अभियान'' आदि शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए सरकार द्वारा आरंभ किए गए हैं।

**सूचना प्रौद्योगिकी का शैक्षिक महत्व :–**

हाल के वर्षों में इस बात में काफी रुचि रही है कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को शिक्षा के क्षेत्र में कैसे उपयोग किया जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदानों में से एक है अधिगम्यता पर आसान

पहुंच संसाधन। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की सहायता से छात्र अब ई–पुस्तकें, परीक्षा के नमूने वाले प्रश्ना पत्र, पिछले वर्षों के प्रश्न पत्र आदि देखने के साथ संसाधन व्यक्तियों, मेंटोर, विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं, व्यावसायिकों और साथियों से दुनिया के किसी भी कोने पर आसानी से संपर्क कर सकते हैं।

किसी भी समय–कहीं भी, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की सर्वाधिक अनोखी विशेषता यह है कि इसे समय और स्थान में समायोजित किया जा सकता है। इसे ध्यान में रखते हुए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने असमामेलित अधिगम्यता (डिजिटल अभिगम्यता) को संभव बनाया है। अब छात्र किसी भी समय अपनी सुविधानुसार ऑनलाइन अध्ययन पाठ्यक्रम सामग्री को पढ़ सकते हैं।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा आपूर्ति (रेडियो और टेलिविजन पर शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण) से सभी सीखने वाले और अनुदेशक को एक भौतिक स्थान पर होने की आवश्यककता समाप्त हो जाती है।

जब से सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को एक शिक्षण माध्यम के रूप में उपयोग किया गया है, इसने एक त्रुटिहीन प्रेरक साधन के रूप में कार्य किया है, इसमें वीडियो, टेलिविजन, मल्टीमीडिया कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर का उपयोग शामिल है जिसमें , ध्वनि और रंग निहित है। इससे छात्र सीखने की प्रक्रिया में गहराई से जुडते हैं।

शिक्षा में प्रमुख सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पहलें नेट पर परिणाम (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं) एक ऐसा समय था जब छात्र अपनी परीक्षा के परिणाम जानने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान भटकते रहते थे, तथापि, पिछले 10 वर्षों से परीक्षा के परिणाम और विभिन्न शैक्षिक, प्रवेश और भर्ती परीक्षाओं के परिणाम जो अनेक मंडला संस्थानों आयोगों (उदाहरण के लिए सी. बी. एस. ई, आई. सी. एस. ई, राज्य शिक्षा मंडल, यू. पी. एस. सी, कर्मचारी चयन आयोग (एस.एस.सी.), आई.सी.ए. आई, जी.जी.एस.आई.पी.यू. आदि) द्वारा आयोजित परीक्षाओं के परिणाम इंटरनेट पर आसानी से देखे जा सकते हैं। छात्रों या प्रत्याशियों को वेबसाइट में दिए गए उपयुक्त स्थान पर केवल अपना रोल नंबर लिखना होता है और परीक्षा का परिणाम अंक सूची स्क्रीन पर आ जाती है। इस प्रयोजन के लिए एक विशेष पोर्टल (http://results-gov.in बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं) पिछले कुछ वर्षों से वेब पर परीक्षा का परिणाम सुविधाजनक रूप से देखने के लिए अत्यंत लोकप्रिय हो गया है। वेब के

अतिरिक्त ई. मेल, एस.एम.एस. (संक्षिप्तं संदेश सेवा) और आई.वी.आर.एस. (अंतःक्रियात्मक वाणी प्रत्युत्तर प्रणाली) के जरिए भी परिणाम जाने जा सकते हैं।

ऑनलाइन प्रवेश परामर्श (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं)

भारत सरकार द्वारा विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों जैसे बी.ई., बी.आर्क, बी. फार्मा, एम.बी.ए., एम.सी.ए., एम.बी.बी.एस., बी.डी.एस., बी.एड. आदि में प्रवेश के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की पहलें धन्यवाद की पात्र हैं, जिनका आयोजन मंडलों जैसे अखिल भारतीय इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा, अखिल भारतीय पूर्व चिकित्सा परीक्षा, राज्य मंडल (उ. प्र., हरियाणा, केरल) द्वारा ऑनलाइन किया जा रहा है। इससे छात्रों को व्यक्तिगत परामर्श सत्रों में होने वाली परेशानियों से बचाया जा सकता है।

दूरस्थ शिक्षा (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं)

जैसे–जैसे समय आगे बढ़ता है, दिन छोटे लगने लगते है, 24 घंटे उन सभी लक्ष्यों के लिए कम लगते जो हम पूरे करना चाहते है तथा एक साथ बहुत सारे कार्य पूरे करना जीवन का तरीका बन जाता है। हम में से अनेक लोग अपनी शिक्षा जारी रखना चाहते है किंतु समय की सीमाओं के कारण पढ़ाई जारी रखना कठिन हो जाता है। इसलिए कई लोग और छात्र दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों के माध्यम से पढ़ने का विकल्प अपनाते हैं, जिससे वे अपनी शिक्षा आराम से जारी रख सकें। अब आप विभिन्न भारतीय विश्व विद्यालयों तथा विद्यालयों की वेबसाइट आसानी से देख कर वहां दिए जा रहे दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों के बारे में जान सकते हैं और नवीनतम जानकारी ले सकते हैं।

आभासी कक्षा कक्ष बृहस्पहति (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं)

बृहस्पति का विकास, जो एक आभासी कक्षा कक्ष है, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर द्वारा किया गया प्रयास है और यह सर्वाधिक जीवन्त (सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पहल हैं। बृहस्पति एक वेब आधारित ई–अधिगम्यता कार्यक्रम है, जिससे अनुदेशक पाठ्यक्रम सामग्री द्वारा परिसर में अभिगम्यता बढ़ा सकते हैं, कक्षा की चर्चाएं कर सकते हैं और वेब पर ही आंकलन कर सकते हैं। इसे परिसर के बाहर और मेंटोर अभिगम्यता के लिए ई–अधिगम्यता सामग्री उपयोग करने में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। यह एक खुले स्रोत वाला सॉफ्टवेयर है तथा इसे किसी भी विश्व विद्यालय द्वारा उपयोग किया जा सकता है।

**कक्षा I से XII एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्य पुस्तकें (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं)**

छात्र और शिक्षक अब सभी विषयों की कक्षा I से XII तक की पाठ्यपुस्तकें डाउनलोड कर सकते हैं और उन्हें बाजार में नवीनतम अंक की उपलब्धता के लिए प्रतीक्षा नहीं करनी या पुस्तक खो जाने पर नई पुस्तक खरीदने की चिंता नहीं करनी है। इसके अध्यायों को विषयवार रूप से मुद्रण योग्य पी.डी.एफ. फार्मेट में उपलब्ध कराया गया है तथा इसे किसी भी समय और कहीं से भी देखा और डाउनलोड किया जा सकता है।

**छात्रवृत्ति की जानकारी (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं)**

विभिन्न पृष्ठ भूमियों और वित्तीय स्थिति से आने वाले प्रतिभावान छात्रों को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने के लिए सरकार द्वारा अनेक छात्रवृत्तियों के कार्यक्रम तथा योजनाएं चलाई जाती है। प्रौद्योगिकी से अब छात्रों को योग्यता आधारित छात्रवृत्ति परीक्षाओं जैसे राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा, ओलंपियाड आदि के बारे में जानकारी और उसमें आवदेन का तरीका पाना आसान हो गया है।

**ऑनलाइन परीक्षा नमूने के प्रश्न पत्र (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं)**

एक समय था जब छात्रों को नमूने के प्रश्न पत्र और सी.बी.एस.ई. परीक्षा की अंक योजनाएं आने की प्रतीक्षा करनी होती थी और वे बाजार से इन्हें खरीदते थे। अब यह स्थिति नहीं है, अब आप ऑनलाइन सी.बी.एस.ई. के नमूने प्रश्न–पत्र (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं) आसानी से देखे जा सकते हैं, क्योंकि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी से यह पहल की गई है। अनेक परीक्षाओं जैसे राष्ट्रीय ओलंपियाड (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं) आदि के नमूना प्रश्न–पत्र इस बात की जानकारी पाने के लिए आसानी से डाउनलोड किए जा सकते है कि परीक्षा में क्या अपेक्षा की जाती है। यह सुविधा राष्ट्रीय इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय (ईग्नू– External website that opens in a new window) द्वारा भी प्रदान की जा रही है।

विदेशी शिक्षा (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं)

यदि एक छात्र विदेश में पढ़ने की आकांक्षा रखता है तो अब परामर्शदाताओं के पीछे दौड़ने का समय नहीं रहा। अब विदेश में पढ़ने के लिए सभी महत्वपूर्ण जानकारियां

और इससे जुड़े पक्षों जैसे बेल्जियम, इटली, जापान आदि देशों में अध्यायन के लिए इच्छुक छात्रों के लिए सामान्य मार्गदर्शी सिद्धांत (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं), अंतरराष्ट्रीय छात्रवृत्तियां (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं) आदि की जानकारी नेट पर उपलब्ध है। विदेशों में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति से संबंधित घोषणाओं (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं) पर नवीनतम जानकारी भी उपलब्ध है।

शिक्षा ऋण (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं)

शिक्षा ऋण और इससे संबंधित जानकारी पाना एक समय अत्यंत कठिन कार्य था, किंतु अब इस क्षेत्र में सूचना और संचार पहल की सहायता से आप राहत की सांस ले सकते है। अब आप शिक्षा ऋण पाने से संबंधित प्रक्रियाओं, सीमाओं और अन्यत जानकारी से संबंधित पूछताछ के उत्तर आसानी से पा सकते हैं।

❐

***सन्दर्भ –***


1 *उच्चतर शिक्षा विभाग (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं)*

2. *राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं)*

3. *विश्वआविद्यालय अनुदान आयोग (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं)*

4. *भारत में विद्यालयों की निदेशिका (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं)*

5. *केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं)*

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 34–39* ***ISSN 0974 -1100***

# आधुनिक संचार साधनों का भारतीय समाज और संस्कृति पर प्रभाव

**डॉ. एच.एम.बरूआ**

विश्व के परिदृश्य को देखने से प्रतीत होता है कि, संचार और प्रौद्योगिकी साधनों ने आज पूरे विश्व को ग्लोबल विलेज की परिकल्पनाओं से साकार कर दुनिया को छोटा (गॉव के रूप में) कर दिया है । आज हर घटना और उससे जुड़ा हर पहलू, प्रत्येक क्षण हमारे चिन्तन को जोड़ता और तोड़ता नजर आ रहा है । जनसंचार माध्यम आज की गतिशील दुनिया के लिये उतना ही जरूरी है जितना जीने के अन्य माध्यम । वृहद जनसंचार माध्यमों की तीव्रता और शक्ति ने व्यक्ति और समाज के नजरिये को सर्वाधिाक सशक्त रूप में प्रभावित किया है । जो मनुष्य को हर क्षण, हर क्षेत्र में, दिशा–निर्देश देकर नियन्त्रित कर रहा है ।

**इस प्रकार जनसंचार का आशय है :–**

''विस्तृत आकार में बिखरे हुए एक व्यक्ति से कई व्यक्तियों के समूह तक संचार माध्यमों द्वारा सन्देश, सूचना, जानकारी आदि का आदान–प्रदान करना संचार है ।''

अतः यह कहा जा सकता है कि, जनसंचार विशाल और व्यापक रूप में लोगों तक सूचना एकत्रित करने और पहुंचाने की आधारित प्रक्रिया है ।

प्रायः जनसंचार साधनों को दो भागों में विभाजित किया जाता है :–

(1) प्रिण्ट मिडिया – जैसे समाचार–पत्र, पत्र–पत्रिकाऐं, पुस्तकें आदि ।

(2) इलेक्ट्रॉनिक मिडिया– जैसे– श्रव्य साधन एवं दृश्य साधन ।

(अ) श्रव्य साधन में – रेडियों, कैसेट, संगीत, तबले और बांसुरी की आवाज आदि ।

(ब) दृश्य साधनों में – सिनेमा, कम्प्युटर, टी.वी., लेपटॉप, ट्वीटर, फेसबुक, व्हाट्सएप आदि ।

इस प्रकार वर्तमान में वृहद जनसंचार क्रांति ने मानव जीवन से सम्बन्धित विविध क्षेत्रों में परिवर्तन और विकास करने की दिशा में दस्तक ही है फिर चाहे वह स्त्री–पुरूष, युवा–वृद्ध, शहरी–ग्रामीण, उच्च–निम्न, अमीर–गरीब, आस्तिक–नास्तिक, आदिमानव–आधुनिक मानव ही क्यों न हो । समाज के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रों में बदलाव के साथ–साथ लोगों की गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, ऋणगस्तता, रूढ़ियॉ, परम्पराओं, अन्धविश्वासों आदि समस्याओं को दूर करने की दिशा में परिवर्तन कर उनका निदान करने की दिशा में अहम भूमिका का निर्वाह दूरदर्शन और इन्टरनेट सफलता से कर रहे हैं । जिसके परिणाम संभवतः रोचक भी हो सकते हैं और हो भी रहे है ।

**भारतीय समाज में (टेलीविजन और इन्टरनेट का) सामाजिक क्षेत्र में महत्व :–**

टेलीविजन और इन्टरनेट ने एक और विश्व मानवों को एक–दूसरे के निकट लाने, एक–दूसरे के विचारों को जानने और समझने के अवसर प्रदान किये हैं । वहीं मानवीय संवेदनाओं एवं भावनाओं को निकटता से महसूस करने और आपसी सहयोग करने की प्रवृत्ति को विकसीत किया है ।

समाज के लोगों की पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों की गतिविधियों, आदतों, क्रियाकलापों और आवश्यकताओं में परिवर्तन हुआ है । टेलीविजन एवं इन्टरनेट द्वारा समाज में व्याप्त–गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, ऋणग्रस्तता, आवास एवं गन्दीबस्ती की समस्या, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की विभिन्न समस्याऐं, जातिगत एवं वर्णगत विभेद, कुपोषण, स्वास्थजनित एवं भौतिक संसाधनों जनित समस्याओं आदि से लोगों को अवगत कराने के साथ–साथ समस्याओं के समाधान की दिशा में जागरूकता, आवश्यक मार्गदर्शन और सुझाव भी समय–समय पर बतलाये जाते रहे हैं ।

**टेलीविजन और नेट का प्रभाव है कि –** आज प्रौद्योगिकी पर आधारित वैश्विक गतिविधियों को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के माध्यम से युवाओं और छात्र–छात्रओं में रोजगारोन्मुखी व्यवसाय, तकनीकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण में ज्यादा रूचि दिखाई देने लगी है । कुशल और प्रशिक्षित छात्रों के लिये केम्पस में नौकरी हेतु इन्टरव्यु आयोजित करने और उन्हें आकर्षित पैकेज देने की परम्परा बढ़ रही है । अच्छे वेतन एवं सुविधाऐं पाने हेतु युवाओं एवं छात्र–छात्राओं का रूझान होटल व्यवसाय, पर्यटन सेवा, आन्तरिक साज–सज्जा,

व्यावसायिक प्रबन्ध, अन्य तकनीकी प्रशिक्षण, सूचना प्रौद्योगिकी सोशल वर्क, पर्यावरण, कृषि अनुसांधान, खेलकूद आदि क्षेत्रों में कार्य करने के साथ–साथ सम्बन्धित पाठ्क्रमों में प्रशिक्षित होने क प्रति जागरूकता बढ़ रही है । यह टेलीविजन और इन्टरनेट की ही देन है ।

समाज में पारस्परिक सहयोग की भावना और संगठनात्मक गतिविधियाँ बढ़ रही है । सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में सहयोग देने, शारीरिक अपंगता की दशा में दिव्यांगों को अंगदान करने, आर्थिक मदद देने की प्रवृत्ति बढ़ने लगी है जिसे मानवीय दृष्टि से सोचा जाने लगा है ।

आर्थिक क्षेत्र में कम समय और कम खर्च में आसान तरीकों से बिना जोखिम उठाये रूपयों का लेन–देन नगद में करने की अपेक्षा ए.टी.एम. चेक, इन्टरनेट बैकिंग से करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है ।

**भारतीय समाज में टेलीविजन और इन्टरनेट का सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रभाव :–**

प्रत्येक समाज के लिये उसकी संस्कृति एक सामाजिक विरासत होती है । जो एक अमूल्य निधि के रूप में मानव को दिया गया उपहार है, जिसमें भौतिक संस्कृति (मनुष्य द्वारा निर्मित वस्तुएँ) और अभौतिक संस्कृति (मानव द्वारा संचालित) दोनों ही सम्मिलित हैं ।

**प्रमुख समाजशास्त्री मजूमदार और मदान के अनुसार – संस्कृति को लोगों के जीन का ढंग बतलाया है ।**

**जबकि हरको विट्स के अनुसार – संस्कृति को पर्यावरण का मानव निर्मित भाग बतलाया है ।**[1] संचार साधनों के अंतर्गत टेलीविजन और इन्टरनेट ने भारतीय संस्कृति के अंतर्गत प्रथाओं, रीति–रिवाजों, भाषा, धर्म, दर्शन, कला, ज्ञान आदि को अत्यधिक प्रभावित किया है । आज संस्कृति का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो संचार साधनों से प्रभावित हुए बिना रहा हो । दूसरी और हमारी संस्कृति के विभिन्न अंगों को, पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति ने प्रभावित कर विभिन्न क्षेत्रों में अनेकों प्रकार के परिवर्तन किये हैं । फिर भी भारतीय संस्कृति ने उन सभी परिवर्तनों को अपने में आत्मसात करते हुए अपनी अलग पहचान विभिन्नता में एकता को बनाये रखा है ।

जनसंचार के साधन टेलीविजन और इन्टरनेट के द्वारा भूमण्डलीकरण की वैश्विक गतिविधियों के उद्भव ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के माध्यम से उपभोक्तावादी

संस्कृति को प्रमुखता देकर उपभोग करने की सब प्रकार की वस्तुओं को विज्ञापन के माध्यम से सजाकर तथा संवारकर आकर्षक ढंग से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में जिम्मेदारी लेने वाले प्रभावी लोग, अभिनेता, खिलाड़ी, विश्व सुन्दरियाँ और अभिनेत्रियाँ टेलीविजन के माध्यम से प्रचार–प्रसार के माध्यम से समाज के लोगों तक पहुँचा रहे हैं । जो हमारी संस्कृति को किसी न किसी रूप में प्रभावित कर रही है ।

वर्तमान में अब सभी लोग राज्य और राष्ट्र की सीमाओं को लांघकर एक विश्वव्यापी साझा संस्कृति और बाजार को अपनाने लगे हैं जिसके कारण विश्व के सभी समाज के लोगों में उपभोग की विभिन्न वस्तुओं का समान रूप से उपयोग किया जाने लगा है जैसे–पीजा, टूथपेस्ट, ब्राण्डेड कपड़े, टीन बन्द खाद्य पदार्थ आदि ।

टेलीविजन और इन्टरनेट ने अपने कार्यक्रमों में ग्राम, नगर, जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र आदि से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के विचारों से उत्पन्न समस्याओं को दूर करने हेतु लोगों में मिलजुलकर पारस्परिक रूप से एकता के साथ समाधान करने की दिशा में चेतना और जागरूकता बढ़ाई है, जो प्रशंसनीय है ।

वर्तमान में टेलीविजन और इन्टरनेट के माध्यम से विभिन्न चेनलों के नाटाकों, सिरियलों और सिनेमाओं में अनेकों ऐसे विचार और संवाद, अपराध, भ्रष्टाचार, अनैतिकता अश्लीलता से जुड़े दृश्य दिखलाए जाते है जिसे परिवार के सभी छोटे–बडे सदस्य एक साथ देखने में असहजता महसूस करते हैं, जो चिन्तनीय है । इसी प्रकार डरावने और क्रूरतापूर्ण दृश्य, अपराधिक घटनाएँ, मारपीट, अश्लीलता, अराजकता, अनैतिकता, अपराधवृत्ति, धोखाधड़ी आदि दृश्य दिखलाये जाते हैं, जो हमारी संस्कृति और समाज से जुड़े व्यक्तियों और युवाओं के लिये घातक हैं वहीं हमारे विचारों और भावनाओं को भी प्रभावित कर रहे हैं ।

**आवश्यक सुझाव :–**

(1) संचार साधनों में इन्टरनेट द्वारा लोगों के व्यक्तिगत जीवन की गोपनीय जानकारियों को उजागर करने, उन्हें बदनाम करने तथा लोगों को ब्लेकमेल करने, अनुचित लाभ लेने वाली गतिविधियों को प्रसारित करने से रोका जाना चाहिए ।

(2) जनसंचार साधनों में इन्टरनेट के अन्तर्गत ब्राडबैण्ड की सुविधाऐं देना मात्र ही महत्वपूर्ण नहीं है अपितु महत्वपूर्ण है । इस तन्त्र के माध्यम से नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँचाई जाने वाली सेवाएँ ।

(3) वर्तमान में केन्द्रीय और राज्य सरकारों की अनेक सेवाएँ वेबसाईटों के माध्यम से आम लोगों के लिये उपलब्ध कराई जाती है लेकिन व्यवहारिक दृष्टि से ये सुविधाएँ शहरी लोगों तक की पहुँचकर रह जाती है जिसका विस्तार ग्रामीण क्षेत्रों में भी किया जाना आवश्यक है ।

(4) ग्रामीण क्षेत्रों में इन्टरनेल की भरोसेमन्द मौजुदा सुविधाओं का न होना, कम्प्युटरों का अभाव, और ऊपर से बिजली का संकट, नागरिकों को ई–सुविधाओं से वंचित कर देता है । इस हेतु आवश्यक है कि, ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की उपलब्धता निरन्तर बनी रहना चाहिये ।

(5) इन्टरनेट के अन्तर्गत बिजनेस प्रोसेस, आऊटसोर्सिंग और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कुशल एवं प्रशिक्षित युवक–युवतियाँ उपलब्ध नहीं हैं । इस हेतु केन्द्रीय शासन द्वारा छोटे गाँवों, कस्बों और शहरों के एक करोड़ युवा छात्र–छात्राओं को प्रशिक्षित किये जाने की योजना प्रस्तावित है । इस दिशा में शीघ्रता से आवश्यक कारगर कदन उठाना उचित होगा ।

(6) टेलीविजन के सिरियलों एवं कार्यक्रमों में ऐस दृश्यों को दिखलाना चाहिये जो शिक्षाप्रद हो, समाज के उत्थान, युवाओं में जागृति, चिन्तन और सोच उत्पन्न करने वाले हों । जिसे परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर देखने में शर्मिन्दगी महसूस नहीं करेंगें ।

(7) टेलीविजन कार्यक्रमों में सकारात्मक सोच और समाज और युवाओं के विकासात्मक कार्यक्रम प्रसारित किये जाने चाहिये । अपराध प्रवृत्ति, अनैतिकता, अश्लीलता, अराजकता और साजिशपूर्ण व्यवहार प्रदर्शित करने वाले कार्यक्रमों पर रोक लगाई जानी चाहिए ।

(8) सिनेमा (फिल्मों) और टेलीविजन कार्यक्रमों में मारधाड़, अपराधवृत्ति, असामाजिक गतिविधियों से जुड़े अश्लील दृश्य और समाज को दिग्भ्रमित करने वाले सिरियल, बनाने और दिखाने पर रोक समाजहित में लगाई जाना उचित होगा ।

वर्तमान में शहरी और ग्रामीणजनों, युवाओं, छात्र–छात्राओं, महिला, वृद्धों आदि के लिये जनसंचार के साधन, शिक्षा, ज्ञान, मनोरंजन एवं रोजगार का एक प्रमुख साधन बन गये हैं । जिससे इनकी दिन–प्रतिदिन प्रतियोगिता बढ़ रही है । दूसरी ओर हमारे देश में गरीबी, निरक्षरता, धर्म, जाति, भाषा अंधविश्वास, रूढ़ियों और अज्ञानताओं

के कारण हमारा विकास अवरूद्ध हो रहा है । वहीं देश का युवावर्ग दिग्भ्रमित होकर अनैतिकता, अश्लीलता, अपराधवृत्ति, नशावृत्ति, पढ़ने और कर्य करने के प्रति अरूची दिखलाने जैसी गतिविधियों में अधिकता से जुड़ रहा है, जो चिन्तनीय है । ऐसी स्थिति में संचार साधनों के साथ हमारा रिश्ता तभी सार्थक हो सकता है जब समाज में नई चेतना का विकास हो, ज्ञान का प्रचार–प्रसार हो तथा संचार साधनों के सदुपयोग करने की भावना समाज के लोगों में उत्पन्न हो, तभी हम अपने लक्ष्य को ग्यान में रखकर ही संचार के साधनों को उपयोगी और सार्थक कह सकते हैं ।

❒

***सन्दर्भ –***


*1* *एम.एल. गुप्ता एवं डी.डी. शर्मा, भारतीय समाज और संस्कृति, प्रकाशन साहित्य भवन आगरा, वर्ष 1986, पृ. 17*

2 *बलेन्द्र शर्मा दधिच, आलेख– डिजिटल इण्डिया करेगा गॉव का कायाकल्प, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका, माह नवम्बर, 2015, पृ. 17–19, नईदिल्ली*

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 40–49* ***ISSN 0974 -1100***

# आधुनिक संचार साधनों का भारतीय समाज पर प्रभाव : युवा वर्ग के संदर्भ में

**डॉ. दत्तात्रय पालीवाल**

संचार मानव प्रगति के लिये अति महत्वपूर्ण है। मानव सभ्यता आज प्रगति की ओर अग्रसर है इसका श्रेय संचार के आधुनिक साधनों को जाता है। जिसमें टेलिविजन, कम्प्यूटर, फैक्स, इंटरनेट, मोबाइल फोन आदि शामिल है। आज का युग इंटरनेट एवं मोबाइल का युग है। व्यक्ति इसके बीना समाज में शर्मिंदगी महसुस करता है। तथा अपने–आप को जीवन–यापन करने में असमर्थ पाता है। इस प्रकार वर्तमान समय में मोबाइल फोन सभी की जरूरत बनते जा रहे है। खासकर युवा वर्ग में इसका जबरदस्त क्रेज देखने को मिलता है।

आज के युवा वर्ग ने इंटरनेट के साथ मोबाइल फोन को अपनी दिनचर्या का अभिन्न अंग मान लिया है, जहाँ वे घंटो अपना किमती समय व्यतित करते है। इसमें दो राय नही कि डिजिटल क्रान्ती ने युवाओं की निजता को प्रभावित किया है, और युवा अपनी सोच से समाज को प्रभावित कर रहे है। मोबाइल फोन ने युवाओं की लाईफस्टाइल में दखल दिया है। उनकी सोच, पहचान एवं जीवनशैली मोबाइल के कारण प्रभावित हो रही है। वही मोबाइल फोन एवं इटरनेट के ज्यादा इस्तेमाल ने स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्याओं के साथ–साथ युवा वर्ग में अपराध एवं हिंसक प्रवृत्ति को भी बढ़ावा दिया है, जैसे– धमकी देना, जालसाजी करना, धोखाघडी करना, अश्लिल बाते करना, अपहरण के बाद फिरौती के पैसों की मांग करना, अपराध के लिये योजना बनाना आदि।

युवा वर्ग द्वारा मोबाइल एवं इंटरनेट का प्रयोग करके अश्लिल सामग्री, सिनेमा, फोटोस आदि आसानी से एक्सेस किये जाते है। साथ ही, कभी–कभी भड़काऊ भाषण बाजी, बयानबाजी, सन्देश प्रेषित कर असहिष्णु वातावरण तथा असामाजिक व्यवहार किया जाता है, जिससे हिंसा तथा अपराधिक घटनाओं में वृद्धि देखने को मिलती है। कुछ युवा वर्ग द्वारा परीक्षा के दिनो में मोबाइल की नवनिर्मित तरक्की के माध्यम सें नकल की जाती है जो की एक अपराध श्रेणी में आता है। वही कुछ युवा वर्ग द्वारा लडकियों के अश्लिल एमएमएस बनाकर उनको ब्लैकमैल करने के मामले भी आये दिन समाचार पत्रों की सुर्खियों में बने होते है, जो कि बहुत ही शर्मनाक बात है।

युवा वर्ग द्वारा मोबाइल एवं इंटरनेट का प्रयोग सायबर अपराधों में भी किया जा रहा है। अभी सामान्य तौर पर सायबर अपराध जैसे की धमकी देना, जालसाजी करना, बैंक खाते हैकिंग, सूचनाओं की चोरी करना आदि छोटे–मोटे अपराध सामने आ रहे हैं, जो प्रायः युवा या विद्यार्थी वर्ग द्वारा महज मजा लेने या खुराफात करने के लिये होते है। जो की एक चिन्तनिय विषय है। मोबाइल एवं इंटरनेट के बढ़ते प्रचलन से युवा वर्ग में नैतिक मूल्यों का हनन हो रहा है। वर्तमान में पाश्चात संस्कृति का अन्धा अनुकरण करने की प्रवृत्ति उनको आधुनिकता का पर्याय लगने लगी है। जिससे उनकी पूरी जीवनशैली प्रभावित होती दिख रही है।

आज के समाज को सूचना प्रौद्योगिकी समाज के रूप मे जाना जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ती ने ज्ञान के द्वार खोल दिये है। इलेक्टॉनिक्स वाणिज्य के रूप में ई–कामर्स, इंटरनेट द्वारा डाक भेजना ई–मेल द्वारा सम्भव हुवा है। ऑनलाइन सरकारी कामकाज विषयक ई–प्रशासन, ई–बैंकिंग द्वारा बैंक व्यवहार, शिक्षा सामग्री के लिये ई–एज्युकेशन पोर्टल आदि के माध्यम सें सूचना प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है। वही आर्थिक उदारवाद के इस दौर में वैश्विक ग्राम (ग्लोबल विलेज) की संकल्पना संचार प्रौद्योगिकी के कारण सफल हुई है। सूचना प्रौद्योगिकी के सहारे भारत देश विकास एवं आर्थिक सम्पन्नता की ओर अग्रसर हो रहा है।

सूचना प्रौद्योगिकी के अन्तर्गत वे सब उपकरण एवं पद्धतियाँ सम्मिलित है जो सूचना के संचालन में काम आते है, यदि इसकी एक संक्षिप्त परिभाषा देनी हो तो कह सकते है की–''सूचना प्रौद्योगिकी एक ऐसा अनुशासन है जिसमें सूचना का संचार

अथवा आदान–प्रदान त्वरित गति सें दूरस्थ्य समाजों में विभिन्न तरह के साधनों तथा संसाधनों के माध्यमों से सफलता पूर्वक किया जाता है।''[1] सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न घटक दूरसंचार एवं नेटवर्क प्रौद्योगिकी के अन्तर्गत दूरसंचार के माध्यम प्रकमक(प्रासेसर) तथा इंटरनेट से जुड़ने के लिये तार या बेतार पर आधारित सॉफ्टवेअर नेटवर्क सुरक्षा, सूचना का कूटन (क्रीप्टोग्राफी) आदि है।[2]

संचार मानव प्रगति के लिये अति महत्वपूर्ण है। यह विश्व के एक देश में बैठे लोगों को दूसरे देश के लोगों से जोड़ता है। मानव सभ्यता आज प्रगति की ओर अग्रसर है इसका श्रेय संचार के आधुनिक साधनों को जाता है।[3] संचार के क्षेत्र में मनुष्य की उपलब्धियों ने विश्व की दूरियों को समेटकर बहुत छोटा कर दिया है। वही दूसरी ओर सूचना क्रान्ती के कारण आज समाज के सम्पूर्ण कार्यकलाप प्रभावित हो रहे है जिसमें– शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, प्रशासन, सरकारी कामकाज, उद्योग, अनुसन्धान व विकास, संगठन, प्रचार–प्रसार आदि पर इसका गहरा प्रभाव हो रहा है।

संचार माध्यमों का जाल इतना व्यापक है की इसके बीना एक सभ्य समाज की कल्पना ही नही की जा सकती। पहले जो समाचार केवल अखबारों में पढ़ा जाता था आज वह दृश्य ऑडियों विजुअल माध्यमों के द्वारा तत्कालिक और घर बैठे उपलब्ध करवा दिया जाता है। आधुनिक संचार माध्यमों जिसमें– टेलिविजन, कम्प्यूटर, फैक्स, इंटरनेट, मोबाइल फोन आदि शामिल है। वर्तमान में संचार माध्यमों में शामिल मोबाइल फोन जो हमारी व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक जीवन की आवश्यकता बन गया है।

आज का युग इंटरनेट एवं मोबाइल का युग है। जहाँ हर कोई इंटरनेट सुविधा के साथ कम्प्यूटर एवं मोबाइल फोन का सहजता से इस्तेमाल करना जानता है। व्यक्ति इसके बीना समाज में शर्मिंदगी महसुस करता है। तथा अपनेआप को जीवन–यापन करने में असमर्थ पाता है। समाज की इन संचार माध्यमों पर बढ़ती निर्भरता को देखते हुवे कई सारी मोबाइल फोन निर्माता कम्पनियां धडल्ले से भिन्न–भिन्न तकनीकी युक्त मोबाइल फोन्स के निर्माण पर जोर दे रही है, वही साथ ही तरह–तरह के लुभावने प्रलोभनों द्वारा उपभोक्ताओं को रिझा रहे है ताकि उनके द्वारा उत्पादित सामान की बिक्री बढ़ सके। जिसमें सभी मोबाइल फोन्स निर्माता कम्पनियां बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रही है।

**विशेषताऐं–** भारत में 15 अगस्त 1995 को मोबाइल फोन सेवाओं का शुभारम्भ हुवा था। मोबाइल फोन या मोबाइल इसे सेलफोन या हाथफोन, सेलुलर फोन, सेल, वायरलेस फोन, मोबाइल टेलिफोन या सेल टेलिफोन भी बुलाया जाता है। यह एक लम्बी दूरी का इलेक्टॉनिक उपकरण है जिसे विशेष बेस स्टेशनों के एक नेटवर्क के आध ाार पर मोबाइल आवाज या डेटा संचार के लिये उपयोग करते है, इन्हें सेल साइटों के रूप में जाना जाता है। वर्तमान मोबाइल फोन, टेलिफोन के मानक कार्य के अलावा कई अतिरिक्त सेवाओं और सुविधाओं से परिपूर्ण होते है। जिसमें प्रमुखतारू से पाठ सन्देश के लिये एसएमएस, ई–मेल, इंटरनेट के उपयोग के लिये पैकेट स्विचिंग, गेमिंग, ब्ल्यूटूथ, इन्फरा रेडिओं, विडियों रिकार्डर, कैमेरा, तस्वीरे एवं विडियों भेजने के लिये तथा प्राप्त करने के लिये एमएमएस, एमपीथ्री प्लेअर, रेडिओं और जीपिएस, अलार्म घड़ी, कैलक्युलैटर आदि सुविधाऐं होती है।[4]

मोबाइल फोन्स अक्सर लैंडलाइन फोन्स की तुलना में अधिक उपयोगी माने जाते है, क्योंकि उनको आसानी से चारों ओर ले जाया जा सकता है। पूर्व में एक मोबाइल फोन पास मे रखकर ले जाना असुविधा जनक लगता था, क्योंकि वह वजनी तथा आकार में बड़े होते थे, वही आज दो–दो मोबाइल फोन्स आसानी से पास में रखकर ले जाया जा सकता है। तथा पूर्व की तरह संदेश प्राप्त कर्ता को भी संचार सेवाओं के उपभोग के बदले भुगतान की आवश्यकता नही रही है। वर्तमान में विभिन्न टैरिफ प्लान्स के द्वारा उपभोक्ताओं को न्यूनतम शुल्क पर संचार सेवाओं का फायदा मिल रहा है। इस प्रकार संचार क्षेत्र में चल रही प्रतिस्पर्धात्मक गतिविधियों के चलते उपभोक्ताओं को कम दामों पर बेहतर सुविधाओं का लाभ मिल रहा है, साथ ही संचार क्षेत्र का विस्तार हो रहा है।

उपयोगिता– वर्तमान मोबाइल एवं इंटरनेट के युग में मोबाइल फोन्स कम्प्यूटर्स एवं लैपटॉप की तरह सुविधाजनक कार्य कर रहे है। जिसमें हम हमारी सारी महत्वपूर्ण जानकारीयाँ संग्रहित रख सकते है।[5] तथा हम ये जानकारीयाँ जहा चाहे ले जा सकते है, देख सकते है तथा उपयोगिता के अनुरूप इस्तेमाल कर सकते है, प्रिंट ले सकते है। सोशल नेटवर्किंग साइटों से जुड़कर मनोरंजन कर सकते है। शिक्षाप्रद कार्यक्रम तथा नई–नई तकनिकों की जानकारी प्राप्त कर उसकी उपयोगिता सिख सकते है।

मोबाइल एवं इंटरनेट द्वारा घर बैठे पूरी दूनिया का समाचार जान सकते है। कहाँ क्या हो रहा है, उससे सम्बन्धित वेबसाइटों पर जाकर पूरी जानकारी पलभर में हासील कर सकते है। हजारों किलोमिटर दूर बैठे व्यक्ति से अपनी भावनाऐं एवं विचार सांझा कर सकते है। जरूरते जान सकते है तथा समाचारों का आदान–प्रदान कर सकते है वही घर बैठे टिकिट बुकिंग, बिल भरना, गैस बुकिंग आदि कार्य आसानी से किये जा सकते है। जिससे कि समय के साथ–साथ पैसों की भी बचत होती हैं। इस प्रकार वर्तमान समय मोबाइल एवं इंटरनेट का युग है, जिसमें मोबाइल सभी की जरूरत बनते जा रहे है। खासकर युवा वर्ग में इसका जबरदस्त क्रेज देखने को मिलता है।

हाल ही में प्रकाशित एक जीएसएमए इंटलिजेन्स की भद मोबाइल इकोनामी इंडिया 2016 की रिपोर्ट के अनुसार जून 2016 में भारत में 61.6 करोड़ मोबाइल उपभोक्ता है। इस हिसाब से यह दुनिया का सबसे बड़ा मोबाइल बाजार बन गया है। स्मार्ट फोन के मामले में भी 2016 में 27.50 करोड़ स्मार्टफोन उपकरणों के साथ भारत अमेरिका को पिछे छोड़कर दुनिया का सबसे बड़ा बाजार बन गया है।[6]

युवा वर्ग में बढ़ते प्रचलन के कारण–आज के दौर के सभी लोगों की जरूरत मोबाइल फोन्स बनते जा रहे है। विषेशकर युवा वर्ग की जीवन रेखा बने हुवे है। आज के युवाओं ने इंटरनेट के साथ मोबाइल फोन को अपनी दिनचर्या का अभिन्न अंग मान लिया है, जहाँ वे घंटों अपना किमती समय व्यतित करते है। हाल ही में प्रकाशित एक शोध के अनुसार लगभग 49: लोग मोबाइल के माध्यम से इंटरनेट का प्रयोग करते है। दिलचस्प बात यह है कि इंटरनेट का प्रयोग करने के लिये मोबाइल का इस्तेमाल करने वालों में सबसे ज्यादा संख्या युवाओं की ही है। देखा जाये तो मोबाइल का क्रेज सबसे ज्यादा युवा वर्ग में ही है इसलिये स्वाभाविक रूप से मोबाइल के द्वारा इंटरनेट का प्रयोग करने वालो में युवा वर्ग अधिकता से है।[7]

मोबाइल फोन्स के युवा वर्ग में बढ़ते प्रचलन के कारणों को हम देख सकते है की ज्यादातर युवा वर्ग स्कूल एवं कॉलेजो में अध्ययनरत है, जहाँ पर मोबाइल फोन्स के इस्तेमाल पर पाबंदिया होने के बावजूद भी युवा वर्ग द्वारा अधिकता से उपयोग किया जा रहा है। ज्यादातर युवा वर्ग आधुनिक उच्च तकनीकि वाले इंटरनेट युक्त मोबाइल फोन्स का इस्तेमाल करते है, जिसकी मदद से वे अध्ययन से सम्बन्धित सामग्री आसानी से प्राप्त करते है। साथ ही अपने जरूरतों के पेपर्स को कही पर भी देखने–दिखाने मे

तथा उसका प्रिंट निकालने मे करते है। वही ज्यादातर इसका इस्तेमाल दोस्त बनाने मे, नई तकनीके, नई प्रौद्योगिकी, नई खोजे, लेनदेन, खरिदारी, सिनेमा देखने, विडियों, फोटोज देखने, एमएमएस, म्यूझिक साईटस, सोशल नेटवर्किंग साईटस आदि देखने हेतु करते है।

सोशल नेटवर्किंग साईटस वॉटसअप एवं फेसबुक आदि पर गपशप करना तथा अपनी स्वयं की फोटोग्राफस (सेल्फी) दोस्तों तथा परिचितों में शेअर करना आजके युवाओं का पसंदिदा कार्य है। जिसके लिये वे घंटो मोबाइल्स पर लगे रहते है। साथ ही म्युझिक साईटस भी युवाओं में लोकप्रिय है, जिससे वे अपना मनोरंजन करते है। गुगल तथा अन्य सर्च इजिनों द्वारा नई–नई जानकारीयों की मदद से वे अपने आप को अपड़ेट रखते है। साथ ही देश दुनिया की खबरों से भी परिचित होते है।

मोबाइल फोन्स सुविधाजनक होते है जिसकी मदद से युवा वर्ग अपने परिचितों, सगे सम्बन्धियों, परिवार, रिश्तेदारों एवं दोस्तों के सतत सम्पर्क में बने रहते है। जिससे उनकी समय की बचत के साथ–साथ पैसों की भी बचत होती है।

इस प्रकार युवा वर्ग में मोबाइल के बढ़ते क्रेज ने आधुनिक उच्च तकनीकि युक्त फोन्स के प्रचलन को बढ़ावा मिल रहा है। जिससे युवा वर्ग में पूराने मोबाइल फोन्स बदलकर नये उच्च तकनीकि युक्त मोबाइल फोन्स लेने का प्रचलन भी बढ़ रहा है। साथ ही माता–पिता से भी अपेक्षा की जाती है की वे उन्हें उच्च तकनीकि युक्त आधुनिक फोन्स दिलाये जाये। माता–पिता भी अपनी आर्थिक क्षमता के अनुरूप मोबाइल फोन्स, टेबलेट, स्मार्टफोन्स, आयपॉड आदि दिलाते है जो कि 800–1000 रूपये से लेकर लाख रूपये तक के होते है। यहाँ यह उल्लेखनिय है कि उच्च तकनीकि युक्त आधुनिक महंगे फोन्स का प्रयोग करने वालो की संख्या भारत में ज्यादा है।[8]

युवा वर्ग पर प्रभाव–आज का युवा वर्ग बड़े बुजुर्गों से एवं माता–पिता से बात करने की बजाए मोबाइल फोन्स के साथ सहजता से ज्यादा से ज्यादा समय व्यतित करता है। वही कुछ युवाओं को ज्यादातर अपने परिवार एवं दोस्तों के साथ बैठे होने पर भी बड़ी आसानी से मोबाइल में गेम्स खेलते हुवे तथा सोशल नेटवर्किंग साईटस पर चैटिंग करते हुवे देखा जा सकता है। उनका पूरा ध्यान मोबाइल संकेतो पर ही रहता है। ज्यादातर रात में भी वे अपना अधिकतर समय मोबाइल पर सक्रीय रहते हुवे बिताते है। आंकडों पर गौर करे तो 30 जून 2012 तक भारत में फेसबुक एवं अन्य सोशल नेटवर्किंग साईटों का उपयोग करने वालों की संख्या 5.9 करोड़ है। इन 5.9 करोड़

लोगों में 4.7 करोड़ युवा वर्ग से सारोकार रखते है।[9] इसमें दो राय नही कि डिजिटल क्रान्ती ने युवाओं की निजता को प्रभावित किया है, और युवा अपनी सोच से समाज को प्रभावित कर रहे है।

स्कूल और कॉलेजो में पढ़ने वाले युवा वर्ग मोबाइल का इस्तेमाल साथीयों पर अपना रौब जमाने के लिये करते है। वे मोबाइल फोन्स को फैशन का हिस्सा समझते है। वही माता–पिता भी अपने बच्चों को महंगे मोबाइल फोन्स लाकर देते है जिससे उनके बच्चों में लोक दिखावे की भावना उजागर होती है। जबकि ज्यादातर मामलों मे माता–पिता मोबाइल फोन्स बच्चों को इसलिये लाकर देते है कि प्रतिदिन होने वाली वारदातों के कारण बच्चों के पास मोबाइल होने से दिनभर संपर्क बना रहता है।

सोशल नेटवर्किंग साईटस पर गपशप करना तथा अपनी स्वयं की फोटोग्राफस (सेल्फी) दोस्तों तथा परिचितों में शेअर करना आज के युवाओं का पसंदिदा कार्य है। फोटोग्राफस पर युवाओं की अपेक्षा रहती है की दोस्तों तथा परिचितों द्वारा अच्छे कमेंटस मिले किन्तु कभी–कभी नकारात्मक कमेंटस भी होते है जिसेसे उनका व्यवहार प्रभावित होता है। अपने आप को वे कमतर आकने लगते है।

मोबाइल फोन ने युवाओं की लाईफस्टाइल में दखल दिया है। उनकी सोच, पहचान, जीवनशैली मोबाइल के कारण प्रभावित हो रही है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री जाफरभाई कहते है–''जो लोग नशेड़ी लोगों की भांती इंटरनेट का प्रयोग करते है, वे सामाजिक कार्यों और पढ़ाई लिखाई में अधिक अकेलेपन का शिकार होते है और प्रतिदिन उनके और लागों के मध्य संपर्क का दायरा कम होता जाता है। वह आँखो की रोशनी के कम होने और कमर झुक जाने जैसे प्रभावों को कम्प्यूटर गेमों का नकारात्मक परिणाम मानते है। जो वैचारिक एवं मानसिक नुकसान के साथ युवा वर्ग को पहूँचता है।''[10]

मोबाइल के ज्यादा इस्तेमाल से स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्याऐं भी हम युवा वर्ग में देख सकते है। जैसे मस्तिक सम्बन्धित बीमारियाँ, स्मरण शक्ति का कमजोर होना, श्रवण तंत्रिका पर भी इसका बूरा प्रभाव पड़ता है वही अवसाद, अकेलेपन, घबराहट आदि परेशानियाँ भी अक्सर युवा वर्ग में देखने को मिलती है। मोबाइल का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव दुर्घटनाओं में बढ़ोतरी के रूप में देखने को मिलता है। जैसे मोटार साईकिल, स्कूटर, कार आदि चलाते समय फोन पर बाते करते रहना अक्सर सड़क पर चलते समय दुर्घटनाओं का कारण बनता है।

मोबाइल ने यौन हिंसा तथा अपराध को भी बढ़ावा दिया है। आज का युवा वर्ग मोबाइल एवं इंटरनेट का प्रयोग करके अश्लिल सामग्री, सिनेमा, फोटोस आदि इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री को आसानी से एक्सेस कर लेता है, जो कालांतर में उनके मानसिक दशा को असंतुलित कर देती है। वही कभी–कभी भड़काऊ भाषणबाजी, बयानबाजी, सन्देश प्रेषित करके असहिष्णु वातावरण तथा असामाजिक व्यवहार युवा वर्ग द्वारा किया जाता है, जिससे हिंसा तथा अपराधिक घटनाओं में वृद्धि देखने को मिलती है।

युवा वर्ग द्वारा परीक्षा के दिनो में मोबाइल की नवनिर्मित तरक्की के माध्यम सें परीक्षा में नकल की जाती है जो की एक अपराध है। वही लडकियों के अश्लिल एमएमएस बनाकर उनको ब्लैकमैल करने के मामले भी आये दिन समाचार पत्रों की सुर्खियों में बने होते है, जो कि बहोत ही शर्मनाक बात है। इसके अतिरिक्त मोबाइल का उपयोग कर धमकी देना, धमकाना, जालसाजी करना, धोखाघड़ी करना, अश्लिल बाते करना, अपहरण के बाद फिरौती के पैसों की मांग करना, अपराध के लिये योजना बनाना आदि अपराधिक गतिविधियों में भी युवा वर्ग द्वारा मोबाइल का इस्तेमाल किया जाता है। नई–नई उच्च तकनिकी युक्त आधुनिक महंगे मोबाइल फोन्स रखने का शौक पूरा करने के लिये युवा वर्ग चोरी, डकैती जैसी घटनाओं को भी अंजाम दे रहा है। विभिन्न शोध रिपोर्ट से साबीत हो चुका है कि युवाओं में बढ़ती अपराधिक एवं हिंसक प्रवृत्ति को मोबाइल फोन्स एवं इटरनेट द्वारा बढ़ावा मिल रहा है। जिससे सायबर अपराधों में भी वृद्धि हुवी है।

सायबर स्पेस एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ बिना किसी खून खराबे के किसी भी देश की सरकार को आतंकित किया जा सकता है। सायबर के जरिये आतंक फैलाने वाले कम्प्यूटर्स से महत्वपूर्ण जानकारीयाँ निकालकर तथा इसका इस्तेमाल धमकी देने व सेवाओं को बाधित करने में कर सकते है। अभी सामान्य तौर पर सायबर अपराध जैसे की धमकी देना, जालसाजी करना, बैंक खाते हैकिंग, सूचनाओं की चोरी करना आदि छोटे–मोटे अपराध सामने आ रहे हैं, जो प्रायः युवा या विद्यार्थी वर्ग द्वारा महज मजा लेने या खुराफात करने के लिये होते है। लेकिन यदि इन्ही तौर तरिकों का उपयोग व्यापक आतंकवादी समूह करने लगे तो भारी मुश्किले पैदा हो सकती है।[11] इसलिये सूचना तकनीक के विशेषज्ञ सायबर सुरक्षा को लेकर भी चिंतित नजर आते है।

मोबाइल एवं इंटरनेट के बढ़ते प्रचलन एवं उसके प्रभाव से युवा वर्ग में नैतिक मूल्यों का हनन हो रहा है। वर्तमान में युवा वर्ग को पाश्चात संस्कृति का अन्धा अनुकरण करने की प्रवृत्ति आधुनिकता का पर्याय लगने लगी है। उनकी पूरी जीवनशैली प्रभावित होती दिख रही है, जिसमें रहन सहन, खान–पान, वेशभूषा और बोलचाल आदि सभी समग्र रूप से शामिल है। मद्यपान एवं धुम्रपान उन्हें फैशन का हिस्सा लगने लगा हैं।

आज का युवा अपने आप को मोबाइल एवं इंटरनेट में व्यस्त रखता है, जिससे आपसी मेलजोल कम हो रहा है वही रिश्तें–नातों में भी दूरियां बढ़ रही है। जिससे वे अकेलेपन तथा अवसाद का शिकार होकर कुंठित जीवन–यापन करने को मजबूर हो रहे है।

निष्कर्ष एवं सुझाव–आज की इस युवा पिढ़ी के साथ ही छोटे बच्चे भी खिलौनों से खेलने की बजाए मोबाइल से खेलना पसंद करते है। वे भी इसका इस्तेमाल गेम्स खेलने के साथ–साथ बातचित करने के लिये आसानी से कर लेते है। युवा वर्ग मोबाइल के बिना अपने आप को अकेला तथा अधूरा महसूस करता है। वे हमेशा मोबाइल चार्ज रखते है जिससे की वे सतत संपर्क में बने रहे। इस प्रकार हम देख सकते है कि मोबाइल एवं इंटरनेट हमारे समाज का अविभाज्य घटक बनते जा रहा है। अन्तराष्ट्रिय मापदंड और आंकड़ों की तुलना में अभी भारत में 92 प्रतिशत लोगों के पास मोबाइल फोन्स है। तथा सभी सर्वेक्षणों में पाया गया है की इंटरनेट के इस्तेमाल में सबसे बड़ा आयु समूह 15 से 24 साल उम्र वाला है।[12]

हर चीज के दो पहलू होते है जहाँ किसी वस्तु के लाभ होते है वही कुछ हानिया भी होती है। मोबाइल के जहाँ इतने लाभ है वही पर हानिया भी है। मोबाइल एवं इंटरनेट ने युवाओं में अपराधिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया है। देशभर में आज लगभग 17 लाख किशोर विभिन्न अपराधिक मामलों में आरोपी है। सामाजिक भटकाव के कारण बड़ी संख्या में किशोर चोरी, हत्या, हत्या का प्रयास, दुष्कर्म जैसे आरोपों में, अपराधिक गतिविधियों में सलग्न पाये जाते है। पिछले एक दशक में बाल अपराध 170 प्रतिशत बढ़ा है। अभिभावकों के संरक्षण के अभाव में संयुक्त परिवार का विघटन कम उम्र में ही बच्चों को वीडियों गेम्स, टेलिविजन, मोबाइल, इंटरनेट आदि के माध्यम से नशाखोरी एवं पोर्नोग्राफी की लत लग रही है। साधनों की सुलभता छोटी उम्र में ही

उनमें भोगवाद ईर्ष्या एवं अवसाद की स्थिती को जन्म दे रही है।[13] जिसके लिये उनका आसपास के सामाजिक विषैले मौहोल के साथ ही माता–पिता एवं समाज भी दोषी है। इस युवावर्ग में हो रहे भटकाव को रोकना समाज तथा समाज के हर वो सदस्य की नैतिक जिम्मेदारी है जो समाज का विकास चाहते है।

आज हमें विज्ञान की इस तरक्की पर खुश तो जरूर होना चाहिए परन्तु साथ ही इसके द्वारा किये जा रहे दूरूपयोग को रोकना हमारा भी तथा सरकार का भी कर्तव्य है। ऐसी वस्तुओं के प्रयोग के विषय में बच्चों को जानकारी देना चाहिये। माता–पिता को भी अपने बच्चों को महंगे उच्च तकनीकी वाले मोबाइल फोन्स लाकर नही देना चाहिये। मोबाइल फोन्स के अनेक लाभ होने के बावजूद भी इसका अत्याधिक प्रयोग सेहत के लिये हानिकारक सिद्ध हो सकता है। वैज्ञानिकों का कहना है की इसमें से निकलने वाली तरंगे मनुष्य के दिमाग पर असर कर सकती है। इसलिये इसका जरूरत से ज्यादा प्रयोग नही करना चाहिये।

❐

**सन्दर्भ –**


1 *http://rajbhashamanas.blogspot.in/2001/02/blog-spot.html*
2 *http://rectexam.net/rect-important*
3 *www.eassayinhindi.com/ vk/kqfud ;qx esa lapkj ds lk/ku*
4 *http://hi.wikipedia.org*
5 *Dr.Anjula Rajvanshi- Review Journal of Philosophy and Social Science, Page No.66 Publisher-Journal Anu Books,Meerut-2015*
6 *www.jansatta.com/bussiness/india-1-billions-users-by-2020*
7 *hindi.oneindia.com/news/2011/06/19/mobile-internet-become-famous-among-youths-india-aid0610:html*
8 *hindi.oneindia.com/news/2011/06/19/mobile-internet-become-famous-among-youths-india-aid0610:html*
9 *gpsingh.jagranjunction.com/2013/01/28/Tkulapkj&ek/;e&vkSj&;qok&oxZ/*
10 *hindi.irib.ir/component/k2/item/81953/ fTkUnxh&dh&cgkj&24*
11 *Souvenior-International Conference on Globlization and Indigenous People, Page No.500 Pbulisher-Department of Sociology, Shri Govind Guru Government College, Banswara, Rajsthan-2010*
12 *rlacollege.blogspot.in/2014/04/blog-spot:html*
13 *hindi.webduniya.com/it-learning/*

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 50–55* ***ISSN 0974 -1100***

# मतदान व्यवहार को प्रभावित करने में आधुनिक सूचना तंत्र और सोशल मीडिया की भूमिका

**डॉ. सादिक मोहम्मद खॉन**

प्रस्तुत शोध पत्र में इन्दौर जिले के देपालपुर नगर पंचायत के 15 वार्ड़ों में से प्रत्येक के 25 मतदाताओं को अर्थात् 375 उत्तरदाताओं को अध्ययन हेतु चुना गया तथा आधुनिक सूचना तंत्र और सोशल मीडिया के निर्वाचन में प्रभाव को लक्ष्य बनाकर अध्ययन किया गया है। निष्कर्षतः रूप में मीडिया सकारात्मक तथा नकारात्मक रूप में उभरकर सामने आया है। परन्तु फिर भी भारतीय लोकतंत्र में मीडिया अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारत जैसे विशाल देश में मीडिया ही एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा अनेक भाषा, धर्म, रीति–रिवाजों, परम्पराओं आदि के बारें में जनसामान्य को जानकारी प्राप्त होती है। हमारें देश में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था है, अतः समाज के प्रति मीडिया की जवाबदेही भी ज्यादा है। यही कारण है कि यह लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में उभरकर सामने आया है। यह समाज का प्रहरी है, और यह बात समय–समय पर साबित करता रहा है। मीडिया शब्द से आशय जनसंचार के माध्यमों जैसे – समाचार–पत्र, रेडियों, टेलीविजन, सिनेमा, विज्ञापन, कम्प्यूटर, इंटरनेट इत्यादि से है। भारत मे मीडिया का प्रांरभ प्रिंट मीडिया से हुआ। पत्रकार क्रांतिकारी मूल्यों का सर्जन करने वाला होता है उसकी जागरूकता एवं रचना धर्मिता से देश की दिशा धारा को तय करने में सहायता मिलती है। अब प्रश्न यह उठता है कि मीडिया किस प्रकार से मतदान व्यवहार को प्रभावित करता है ? उत्तर में यह जानना भी आवश्यक है, कि वे कौन–कौन कारक जो

मतदान को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित करते है। उनमें धर्म, जाति, क्षैत्रीयता, आर्थिक स्थिति, नेतृत्व, घोषणा पत्र, विचार धारा और दलों के कार्यक्रम, परिवार एवं नातेदारी, वर्ग तथा धन प्रमुख है। मतदान व्यवहार का अर्थ है, कि मतदाता किन भावनाओं से प्रेरित होकर अपने मताधिकार का प्रयोग करता है तथा मतदाता वोट देते समय किस तथ्य से सर्वाधिक प्रभावित होता है या वे कौन–सी बातें तथा मुद्दे है जो आम मतदाताओं की अपना मत देने के लिए प्रेरित करते है। इन दिनों सूचना प्रौद्योगिकी के कारण पत्रकारिता जगत में कई परिवर्तन आए। एक अध्ययन के अनुसार, 2009 में पत्रकारिता उद्योग 58080 करोड़ का था, वह बढ़कर 2015 में करीब 1,05,090 करोड़ के पार हो चुका है। वर्तमान समय मे चीन के बाद सबसे ज्यादा समाचार–पत्र की प्रतियॉ भारत में प्रसारित होती है। सबसे अच्छी बात यह है, कि भारतीय मीडिया अभी राजनीतिक दबाव से मुक्त है। यही वजह है कि वह आम आदमी की आवाज बनकर समाज से बेहतर तालमेल बनाए हुए है, उसकी निष्पक्षता एवं तटस्थता कायम है, जो कि समाज के हित मे आवश्यक भी है। चुनाव आयोग द्वारा मतदान के दिन निर्धारण के साथ ही मीडिया भी अपने कार्य में जुट जाता है। तथा विभिन्न राजनीतिक दलों के अच्छे तथा बुरें कार्यों को उजागर करने में कोई कसर नही छोड़ता हैं।

**शोध समस्या का चयन –** मतदान व्यवहार में मीडिया की दखल अंदाजी से लोकतंत्र की दिशा निर्धारित होती है, जो कि शोध का विषय है। अतः इस विषय को शोध हेतु चयनित किया गया है।

**अध्ययन क्षेत्र का परिचय –** इन्दौर जिले के देपालपुर नगर पंचायत जो कि मालवा के केन्द्रिय भाग में स्थित है। देपालपुर की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 17,474 है। जिसमें 8973 पुरूष तथा 8501 महिलाऍ है। नगर में कुल 15 वार्ड है। जिसमें 06 सामान्य, 04 पिछड़ा वर्ग, 04 अनुसूचित जाति तथा 01 अनुसूचित जनजाति के पार्षद है। नगर के कुल मतदाताओं की संख्या 7,631 है। जिसमें पुरूष तथा महिलाऍ सम्मिलित है। नगर में प्रमुख रूप से कलौता, मुस्लिम, बनिया, धाकड़, छिपा, कुशवाह, धोबी, अहीर, आंजना, जाट, राजपूत, सोनी, कर्मकार, बलाई, बागरी, चमार, खाती, पाटीदार आदि जातियॉ प्रमुख रूप से निवास करती है, तथा कलौता, धाकड़, मुस्लिम, अहीर राजनीतिक दखलनंदाजी करते है। नगर में प्रमुख दल के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा

भारतीय जनता पार्टी है। कभी–कभी कोई प्रत्याशी टिकट न मिलने के कारण निर्दलीय भी चुनाव लड़ता है। नगर में 68.47 हिन्दु तथा 26.83 मुस्लिम है। प्रति हजार पुरूष दर पर 947 महिलाएँ है। साक्षरता दर 76.63 प्रतिशत है जो म.प्र. की औसत साक्षरता दर 69.32 प्रतिशत से अधिक है। जिसमें पुरूष साक्षरता 87.47 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 12.53 प्रतिशत है।

**शोध प्रविधि –** देपालपुर नगर पंचायत के कुल 15 वार्डों में से प्रत्येक वार्ड से से 25 उत्तरदाताओं का चयन किया गया जिसमें हर जाति, धर्म समुदाय के लोग सम्मिलित किये गये तथा साक्षात्कार अनुसूचि के माध्यम से ऑकड़े इकठ्ठे किये गये है। प्राथमिक ऑकड़ो का संकलन कर सारणीबद्ध किया गया। द्वितीयक ऑकड़ो का संकलन जिला सांख्यिकी कार्यालय इन्दौर, निर्वाचन कार्यालय देपालपुर से किया गया।

**अध्ययन के उद्देश्य–**

- मतदाता, मतदान करते समय किन बातों का ध्यान रखते है।
- मीडिया से सम्बन्धित साधनों के प्रयोग का अध्ययन करना।
- मीडिया से मतदान में सहायता का अध्ययन करना।
- निर्वाचन में मीड़िया के प्रभाव का मुल्याकंन करना।

**(1) मतदाना के मतदान करने के उददेश्य का अध्ययन**

| क्र. | विकल्प | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 01 | जाति | 150 | 40 |
| 02 | धर्म | 37.5 | 10 |
| 03 | राजनीतिक पार्टी | 150 | 40 |
| 04 | विकास | 18.75 | 05 |
| 05 | क्षैत्रीयता | 18.75 | 05 |
| | **योग** | **375** | **100** |

**स्त्रोत :– व्यक्तिगत साक्षात्कार**

- अध्ययन क्षैत्र में मतदाता से मतदान के दृष्टिकोण के बारें में पुछे जाने पर 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि हम जाति के आधार पर अपने मत का प्रयोग करते है। 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने धर्म को मतदान का आधार माना, 40 प्रतिशत

उत्तरदाता सम्बधिंत पार्टी को ही वोट देते है, 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने विकास को प्रमुख आधार माना तथा 5 प्रतिशत उत्तरदाता अपने क्षैत्र के ही उम्मीदवार को मत देना पसंद करते है, चाहे वह किसी भी पार्टी का हो।

- **(2) मीडिया साधनों के प्रयोग का अध्ययन**

| क्र. | विकल्प | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 01 | स्माचार–पत्र | 112.5 | 30 |
| 02 | न्यूज चेनल | 75 | 20 |
| 03 | इंटरनेट | 75 | 20 |
| 04 | समा./न्यूज/इंटरनेट | 112.5 | 30 |
| | **योग** | **375** | **100** |

**स्त्रोत :– व्यक्तिगत साक्षात्कार**

- मीडिया के साधनों का प्रयोग करने वाले उत्तरदाताओं में 30 प्रतिशत समाचार–पत्र का प्रयोग करते है, 20 प्रतिशत न्यूज चेनल देखते है, 20 प्रतिशत इंटरनेट चलाते है, तथा 30 प्रतिशत उपरोक्त तीनों साधनों का उपयोग करते है।

- **(3) मीडिया द्वारा मतदान में सहायता का अध्ययन–**

| क्र. | विकल्प | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 01 | उम्मीदवार चुनने में | 75 | 20 |
| 02 | विकास का ज्ञान | 112.5 | 30 |
| 03 | जनसामान्य से संपर्क | 150 | 40 |
| 04 | राजनीतिक गतिविधि | 37.5 | 10 |
| | **योग** | **375** | **100** |

**स्त्रोत :– व्यक्तिगत साक्षात्कार**

- उपरोक्त अध्ययन के अनुसार 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि मीडिया द्वारा सही उम्मीदवार को चुनने मे मदद मिलती है, 30 प्रतिशत मानते है कि मीडिया हमें कौन–से दल या व्यक्ति जो उम्मीदवार है ने क्या विकास किया है? बताता। 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार मीडिया से लोगों मे आपसी–तालमेल तथा संपर्क बढ़ता है। 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार मीडिया राजनीतिक गतिविधियों का संचालन मात्र है।

- **(4) निर्वाचन प्रक्रिया में मीडिया का प्रभाव–**

| क्र. | विकल्प | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 01 | सकारात्मक | 112.5 | 30 |
| 02 | नकारात्मक | 37.5 | 10 |
| 03 | केवल सकारात्मक | 37.5 | 10 |
| 04 | केवल नकारात्मक | 18.75 | 5 |
| 05 | सकारात्मक / नकारात्मक | 168.75 | 45 |
| | **योग** | **375** | **100** |

**स्त्रोत :– व्यक्तिगत साक्षात्कार**

उपरोक्त अध्ययन के अनुसार 30 प्रतिशत उत्तरदाता निर्वाचन प्रक्रिया में मीडिया के प्रभाव को सकारात्मक मानते है, 10 प्रतिशत नकारात्मक मानते है, 10 प्रतिशत यह बताते है कि मीडिया से केवल सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जबकि 05 प्रतिशत इसे केवल नकारात्मक प्रभाव मानते है। उत्तरदाताओं का 45 प्रतिशत समूह यह मानता है कि निर्वाचन प्रक्रिया में मीडिया सकारात्मक तथा नकारात्मक भूमिका निभाता है।

- निष्कर्ष :– उपरोक्त अध्ययन के उपरांत निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गए।
- वर्तमान समय में भी एक और जहॉ भारत विकसित देशों मे ंसम्मिलित होने जा रहा है वहॉ आज भी धर्म, जाति, सम्प्रदाय आदि मुद्दों पर मतदान किया जाता है। यदि मीडिया अपना सकारात्मक रवैया रखे तो इन बिंदुओं को जन सामान्य के दिमाग से दूर किया जा सकता है।
- जनसामान्य का एक बड़ा समुदाय आज भी सही जानकारी एवं गतिविधियों से अछुता है।
- यह बात सही है कि लोगों में जागरूकता फैलाने, सही निर्णय लेने आदि में मीडिया सहायता करता है किन्तु व्यक्तिगत स्वार्थ के चलते भारत में मीडिया के निजीकरण की बातें भी सामने आयी है जो कि चिन्ता का वि ाय है।
- लोकतन्त्र की सफलता के लिए बहुत हद तक मीडिया जिम्मेदार है। क्योकि यह

वह कड़ी है, जो सकारात्मक ऊर्जा दे सकते है। अध्ययन क्षैत्र मे सही उम्मीदवार चुनने, विकास को महत्व देने तथा जन सामान्य से तालमेल बिछाने में मीडिया ने अपना प्रभाव दिखाया है।

- आज शोध क्षैत्र के लगभग सभी उत्तरदाता किसी ने किसी रूप में मीडिया का उपयोग करते है तथा उसके प्रभाव से प्रभावित है।

❐

***सन्दर्भ –***


1. *संतोष गोयल (2010) : जनसम्पर्क और विज्ञापन नटराज प्रकाशन, दिल्ली, पेज नं. 131*
2. *रामशरण जोशी, मीडिया और बाजार वाह, राधा कृष्ण प्रकाशन, प्रा.लि., जगतपुरी दिल्ली, पेज नं. 49*
3. *संजीव भानावत, (2005),। भारत में संचार माध्यम जनसंचार, राजस्थान वि.वि., जयपुर, पेज नं. 68*
4. *पुखराज जैन एवं बी.एल.फड़िया (2012), भारतीय शासन एवं राजनीति साहित्य भवन पब्लिकेशन, दिल्ली, पेज नं. 121*
5. *जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2011*
6. *जनगणना पुस्तिका 2011*
7. *www.importanceofmediainpolities.com*
8. *www.media.in*
9. *www.indianpolitiesand48eofmedia*

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 56–66* ***ISSN 0974 -1100***

# आधुनिक सूचना प्रोद्यौगिकी का भारतीय जनजाति समाज पर प्रभाव

**डॉ. सपना सिंह कँवर**

जंगल में आदिवासी की संस्कृति, राजनीतिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था और अर्थव्यवस्था एक केंद्रीय स्थान रखती है। जीवन जीने का आदिवासीयों का तरीका बहुत भिन्न है, भारत के संविधान ने जन्म से मृत्यु तक आदिवासी आबादी को संरक्षण दिया हैं । संरक्षण के बावजूद भारत का आदिवासी अभी भी भारत में सबसे पिछड़े जातीय समूह मै हैं । उदारीकरण की नीति और संसाधनों के उपयोग से आदिवासी विश्वदृष्टि के विपरीत हैं, और यह विकास केवल वैश्वीकरण के बाजार उन्मुख दर्शन के साथ आगे बढ़ रहा है। वैश्वीकरण का लाभ उन्हीं लोगों को हुआ हैं, जो पहले से ही शिक्षा और कौशल के लाभ अर्जित कर चुके है, जनजातियों के लिए, वैश्वीकरण बढ़ती कीमतों, नौकरी की सुरक्षा में कमी, शिक्षा और स्वास्थ्य में देखभाल की कमी के साथ जुड़ा हुआ है। इसलिए सरकार को इन नीतियों और समस्याओं को दूर करने के लिए आवश्यक विशेष नीति और कार्यक्रम तैयार करना चाहिए । विशेषकर वैश्वीकरण के संदर्भ में जब हम आदिवासी विकास के लिए योजना बनाते हैं, तो हमें इन मतभेदों पर ध्यान देना होगा, उनकी स्थितियों और क्षमताओं का विशेष ध्यान रखना होगा, और उन्हें विकसित करने की सुविधाएं प्रदान करनी होगी । इन नीतियों के माध्यम से हम उनको सुचना प्रौद्योगिकी से बेहतर रूप में जोड़ पाएंगे।

भारत की कुल जनसँख्या में जनजातीयों की आबादी लगभग 8.6 प्रतिशत है जो कि दुनिया के किसी भी देश से अधिक है, भारत की कुल जनजाति आबादी 104,281,034 है। जिसमें ग्रामीण आबादी 93,819,162 है, जबकि शहरी आबादी 10,461,872

है । जनजातिय आबादी भारतीय जनसंख्या के साथ बढ़ रही है । परन्तु सामान्य जनसंख्या के अनुपात में इसमें वृद्धि नहीं हो रही है । भारत की सामान्य जनसंख्या में वर्ष 1951 से 2011 में 849.46 लाख की वृद्धि हुई है । लेकिन जनजातिय आबादी में 85.1 लाख की वृद्धि हुई, जो कि कुल आबादी की वृद्धि का केवल 3.31 प्रतिशत है, वनो का जनजातिय जीवन और अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान है, जन्म से मृत्यु तक जनजातिय जीवन वनों से निर्देशित होता है । विडंबना यह है कि भारत के सबसे सम्पन्न प्राकृतिक संसाधनों वाले क्षेत्रों में भारत के सबसे गरीब जनजातिय लोग निवास करते हैं । इतिहास से यह भी पता चलता है की विभिन्न प्रमुख समूहों के आर्थिक हितों को साधने के लिए जनजातिय समूहों के हितो को अनदेखा कर दिया गया । अपने ही क्षेत्रों में शोषित अति शोषित हो कर रह गए ।

अनुसूचित जनजाति शब्द सबसे पहले भारत के संविधान में उल्लेखित हुआ था। अनुच्छेद 366 (25) में अनुसूचित जनजातियों को ऐसी जनजातियाँ या जनजातिय समुदाय या इनमें सम्मिलित जनजातियाँ समुदाय के भाग या समूहों को संविधान के प्रयोजनों हेतु अनुच्छेद 342 के अधीन अनुसूचित जनजातियाँ माना गया है, पारिभाषित किया गया है। अनुच्छेद 342, जिसे नीचे पुनः बताया गया है अनुसूचित जनजातियों को सुनिश्चित करने के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रियाएँ बताई गई हैं। अनुच्छेद 342 अनुसूचित जनजातियाँ

राष्ट्रपति, राज्य या संघ राज्य क्षेत्र के संबंध में, या केवल राज्य के संबंध में सार्वजनिक अधिसूचना द्वारा वहाँ के राज्यपाल के परामर्श के बाद, संविधान के प्रयोजनों हेतु, जनजाति या जनजातिय समुदाय या इनके कुछ भाग या समूह, जो राज्य, या संघ राज्य क्षेत्र के संबंध में अनुसूचित जनजाति समझे जाए एवं निर्दिष्ट कर सकते हैं।

संसद कानून द्वारा धारा (1) किसी भी जनजाति या जनजातिय समुदाय, या इनके कुछ भाग या समूह, को उक्त धारा के तहत अधिसूचना जारी करके निर्दिष्ट अनुसूचित जनजातियों की सूची में सम्मिलित, या निकाल सकती है। किंतु बाद में किसी अधिसूचना द्वारा इसमें परिवर्तन नहीं किया जाएगा।

इस प्रकार, राष्ट्रपति के अधिसूचित आदेशानुसार विशेष राज्यसंघ राज्य क्षेत्र में, संबंधित राज्य सरकारों से सलाह के उपरांत, अनुसूचित जनजातियों का पहला निर्देशन है। इन आदेशों को केवल संसद द्वारा कानून से ही संशोधित किया जा सकता

है। उपर्युक्त अनुच्छेद राज्यवारसंघ राज्य क्षेत्रानुसार ही अनुसूचित जनजातियों की सूची प्रदान करता है पूरे भारत के आधार पर नहीं।

यह मापदंड समुदाय के विशेषताओं को बताते है, जैसे कि अनुसूचित जनजातियों के आदिम लक्षण, विशिष्ट संस्कृति, भौगोलिक अलगाव, बड़े पैमाने पर समुदाय के साथ संपर्क में संकोच, पिछड़ापन आदि। यह मापदंड संविधान में स्पष्ट नहीं है, लेकिन अच्छी तरह से बरकरार हैं। इसकी परिभाषाएँ 1931 जनगणना, प्रथम पिछड़ा वर्ग आयोग 1955, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति की सूचियों के संशोधन पर (लोकुर समिति) 1965, सलाहकार समिति (कालेलकर), अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति आदेश (संशोधित) विधेयक 1967 (चंदा समिति),1969 पर संयुक्त संसदीय समिति की रिपोर्टों में शामिल हैं।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 की धारा (1) में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राष्ट्रपति ने संबंधित राज्य सरकारों के साथ परामर्श के उपरांत, राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्रों के संबंध में अनुसूचित जनजातियों को निर्दिष्ट करने के लिए जारी किए अब तक 9 आदेश हैं। इनमें से आठ आदेश वर्तमान में अपने मूल या संशोधित रूप में लागू हैं। इनमें से एक आदेश नामतरू संविधान (गोवा, दमन और दीव) अनुसूचित जातियाँ आदेश 1968, 1987 में गोवा, दमन और दीव के पुनर्गठन के कारण बेकार हो चुका है।

भारत की जनजातियाँ

भारत की जनजातियाँ ही यहाँ की आदिवासी तथा मूलतः निवास करने वाली जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनके जीवन–यापन का ढंग वर्तमान में भी प्राचीन पद्धतियों से ही संचालित होता आ रहा है। अब भले ही कुछ जनजातियों ने स्थायी ढंग से कृषि, पशुपालन आदि कार्यों में रुचि लेना प्रारम्भ कर दिया है किन्तु इनकी अधिकांश जनसंख्या शिकार करने, मछली पकड़ने, लकड़ी काटने आदि कार्यों द्वारा ही जीवन–निर्वाह करती है। भारत में जनजातिय समुदाय के लोगों की काफी बड़ी संख्या है और देश में 50 से भी अधिक प्रमुख जनजातिय समुदाय है। सरलतम रूप में जनजाति ऐसी टोलियों का एक समूह है, जिसका एक रूप वाले भूखण्ड अथवा भूखण्डों पर अधिकार हो और जिनमें एकता की भावना, संस्कृति में गहन समानता, निरन्तर सम्पर्क तथा कतिपय सामुदायिक हितों में समानता से उत्पन्न हुई हो। एक जनजाति समान संस्कृति वाली जनसंख्या का स्वतन्त्र राजनीतिक विभाजन है।

भारतीय जनजातियों को विद्वानों द्वारा अलग–अलग नामों से सम्बोधित किया गया है, जैसे आदिवासी, पहाड़ी जनजातियाँ, जंगली आदिवासी, प्राचीन जनजाति, जंगल निवासी, पिछड़ा हिन्दू, विलीन मानवता आदि। भारतीय संविधान में इन्हे अनुसूचित जनजाति कहा गया है जबकि वर्तमान में इनको आदिवासी, वन्यजाति, अरण्यवासी, गिरिजन आदि अनेक नामों से जाना जाता है। भारतीय जनजातियों का मूल स्त्रोत कभी देश के सम्पूर्ण भू–भाग पर फैली प्रोटो आस्ट्रेलियाड तथा मंगोल जैसी प्रजातियों को माना जाता है। इनका एक अन्य स्त्रोत नीग्रिटों प्रजाति भी है जिसके निवासी अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में अभी भी विद्यमान हैं। देश की जनजातीय जनसंख्या के वितरण पर यदि ध्यान दिया जाय तो तीन मुख्य क्षेत्र स्पष्ट होते हैं, जो निम्नलिखित हैं।

1. उत्तरी एवं उत्तरी–पूर्वी प्रदेश – इसमें हिमालय के तराई क्षेत्र, उत्तरी–पूर्वी क्षेत्र सम्मिलित किये जाते हैं।

2. मध्यवर्ती क्षेत्र – इसके अन्तर्गत प्रायद्वीपीय भारत के पठारी तथा पहाड़ी क्षेत्र सम्मिलित किये जाते है। देश की लगभग 80 प्रतिशत जनजातिय जनसंख्या इसी क्षेत्र में निवास करती है। मध्य प्रदेश, दक्षिण राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश, दक्षिणी उत्तर प्रदेश, गुजरात, बिहार, उड़ीसा आदि राज्य इसी क्षेत्र में आते हैं।

3. दक्षिणी क्षेत्र – इसके अन्तर्गत आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल तथा तमिलनाडु का जनजातिय क्षेत्र शामिल हैं। यह भारतीय जनजातियों के सबसे प्राचीन स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है।

**विभिन्न राज्यों की प्रमुख जनजातियाँः–**

**आंध्र प्रदेश–** चेन्चू, कोचा, गुड़ावा, जटापा, कोंडा डोरस, कोंडा कपूर, कोंडा रेड्डी, खोंड, सुगेलिस, लम्बाडिस, येलडिस, येरुकुलास, भील, गोंड, कोलम, प्रधान, बाल्मिक।

**असम व नागालैंड–** बोडो, डिमसा गारो, खासी, कुकी, मिजो, मिकिर, नागा, अबोर, डाफला, मिशमिस, अपतनिस, सिंधो, अंगामी।

**झारखण्ड–** संथाल, असुर, बैगा, बंजारा, बिरहोर, गोंड, हो, खरिया, खोंड, मुंडा, कोरवा, भूमिज, मल पहाड़िया, सोरिया पहाड़िया, बिझिया, चेरू लोहरा, उरांव, खरवार, कोल, भील।

**महाराष्ट्र**– भील, गोंड, अगरिया, असुरा, भारिया, कोया, वर्ली, कोली, डुका बैगा, गडावास, कामर, खडिया, खोंडा, कोल, कोलम, कोर्कू, कोरबा, मुंडा, उरांव, प्रधान, बघरी।

**पश्चिम बंगाल–**होस, कोरा, मुंडा, उरांव, भूमिज, संथाल, गेरो, लेप्चा, असुर, बैगा, बंजारा, भील, गोंड, बिरहोर, खोंड, कोरबा, लोहरा।

**हिमाचल प्रदेश–** गद्दी, गुर्जर, लाहौल, लांबा, पंगवाला, किन्नौरी, बकरायल।

**मणिपुर–** कुकी, अंगामी, मिजो, पुरुम, सीमा।

**मेघालय –** खासी, जयन्तिया, गारो।

**त्रिपुरा–** लुशाई, माग, हलम, खशिया, भूटिया, मुंडा, संथाल, भील, जमनिया, रियांग, उचाई।

**कश्मीर–** गुर्जर।

**गुजरात–** कथोड़ी, सिद्दीस, कोलघा, कोटवलिया, पाधर, टोड़िया, बदाली, पटेलिया।

**उत्तर प्रदेश–** बुक्सा, थारू, माहगीर, शोर्का, खरवार, थारू, राजी, जॉनसारी।

**उत्तरांचल–** भोटिया, जौनसारी, राजी।

**केरल–** कडार, इरुला, मुथुवन, कनिक्कर, मलनकुरावन, मलरारायन, मलावेतन, मलायन, मन्नान, उल्लातन, यूराली, विशावन, अर्नादन, कहुर्नाकन, कोरागा, कोटा, कुरियियान, कुरुमान, पनियां, पुलायन मल्लार, कुरुम्बा।

**छत्तीसगढ़–** कोरकू, भील, बैगा, गोंड, अगरिया, भारिया, कोरबा, कोल, उरांव, प्रधान, नगेशिया, हल्वा, भतरा, माडिया, सहरिया, कमार, कंवर।

**तमिलनाडु–** टोडा, कडार, इकला, कोटा, अडयान, अरनदान, कुट्टनायक, कोराग, कुरिचियान, मासेर, कुरुम्बा, कुरुमान, मुथुवान, पनियां, थुलया, मलयाली, इरावल्लन, कनिक्कर, मन्नान, उरासिल, विशावन, ईरुला।

**कर्नाटक–** गौडालू, हक्की, पिक्की, इरुगा, जेनु, कुरुव, मलाईकुड, भील, गोंड, टोडा, वर्ली, चेन्चू, कोया, अनार्दन, येरवा, होलेया, कोरमा।

**उड़ीसा–** बैगा, बंजारा, बड़होर, चेंचू, गड़ाबा, गोंड, होस, जटायु, जुआंग, खरिया, कोल, खोंड, कोया, उरांव, संथाल, सआरा, मुन्डुप्पतू।

**पंजाब–** गद्दी, स्वागंला, भोट।

**राजस्थान–** मीणा, भील, गरासिया, सहरिया, सांसी, दमोर, मेव, रावत, मेरात, कोली।

**अंडमान–निकोबार द्वीप समूह–**औंगी आरबा, उत्तरी सेन्टीनली, अंडमानी, निकोबारी, शोपान।

**अरुणाचल प्रदेश–** अबोर, अक्का, अपटामिस, बर्मास, डफला, गालोंग, गोम्बा, काम्पती, खोभा, मिश्मी, सिगंपो, सिरडुकपेन।

## सूचना प्रौद्योगिकी

आज का युग सूचना, संचार व विचार का युग है । सूचना प्रौद्योगिकी एक सरल तंत्र है जो तकनीकी प्रयोग के सहारे सूचनाओं का संकलन, प्रक्रिया व संप्रेषण करता है । सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग मे कंप्यूटर का महत्व कल्पवृक्ष से कम नहीं है जिससे व्यवसायिक, वाणिज्यिक, जन संचार, शिक्षा, चिकित्सा, आदि कई क्षेत्र लाभांवित हुये हैं। कम्प्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो विकास हुआ है वह जनजातीय क्षेत्र में भी मौन क्राँति का वाहक बन कर आया है । देश–विदेश के अधिसंख्य सरकारी विभागों, अभिकरणों तथा संगठनों की अपनी इंटरनेट वेबसाइटें खुल गई हैं। इन वेबसाइटों के माध्यम से सूचना सरकारी संगठन तुलनात्मक रूप से अधिक पारदर्शी, संवेदनशील और जनोन्मुख सिद्ध हो सकते हैं। जैसा कि वर्तमान युग में सूचना आर्थिक विकास की कुंजी है इसलिए पूरी व्यवस्था सूचना के चारों ओर घूम रही है। वास्तव में ई–शासन एक विस्तृत संकल्पना है जो मात्र शासकीय व्यवस्था से संबंध नहीं रखती अपितु इसमें राजनीतिक, सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक, तकनीकी, प्रशासनिक तथा अन्य आयाम भी शामिल हैं। यदि संकीर्ण अर्थ में देखा जाए तो इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में विकसित हुई युक्तियों का प्रशासन में प्रयोग करना ही सूचना प्रौद्योगिकी है जबकि इसके विपरीत विस्तृत दृष्टिकोण में इसका अर्थ किसी भी संगठन, समाज या तंत्र के विविध पक्षों को नियंत्रित, विकसित, पोषित एवं समन्वित रखने के क्रम में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना ई–गवर्नेंस है। यह ई–नागरिक व्यवस्था का व्यापक प्रसार है।

चूँकि वर्तमान समय सूचना प्रौद्योगिकी का युग है, सभी कार्यालयों में तमाम काम कम्प्यूटरों पर ही किये जाते हैं। रोजमर्रा की जिन्दगी मानो सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित है । मोबाइल फोन, एटीएम, इंटरनेट बैंकिंग से लेकर रेलवे आरक्षण, ऑनलाइन शॉपिंग आदि तक सूचना प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी है ।

सूचना प्रौद्योगिकी कम्प्यूटर पर आधारित सूचना–प्रणाली का आधार है। सूचना प्रौद्योगिकी, वर्तमान समय में वाणिज्य और व्यापार का अभिन्न अंग बन गयी है। संचार क्रान्ति के फलस्वरूप अब इलेक्ट्रानिक संचार को भी सूचना प्रौद्योगिकी का एक प्रमुख घटक माना जाने लगा है, और इसे सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology, ICT) भी कहा जाता है।

भारत डिजिटल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आगे बढ़ने को तत्पर हैं एवं इस दिशा में भारत सरकार द्वारा लाया गया डिजिटल इंडिया प्रोग्राम एक महत्वपूर्ण कदम हैं । इस प्रोग्राम का उद्देश्य इलेक्ट्रोनिक वस्तुओं के आयात को खत्म करना, इलेक्ट्रोनिक आइटमों के विनिर्माण का केन्द्र विकसित करना, आई.टी. क्षेत्र में नए कार्यबल तैयार करना, ई–शासन के माध्यम से जनभागीदारी बढ़ाना, हर नागरिक को उसके जरुरत के मुताबिक डिजिटल ढाँचा प्रदान करना, ग्रामीण एवं शहरी भारत के बीच बढती डिजिटल खाई को पाटना प्रमुख हैं ।

चूँकि Digital India अपने क्षेत्र का umbrella program हैं जिसके तहत e-Governance एवं सुचना प्रोद्योगिकी के सभी घटकों का समावेश कर दिया गया हैं ।

**सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न घटक**

कम्प्यूटर हार्डवेयर प्रौद्योगिकी – इसके अन्तर्गत माइक्रो–कम्प्यूटर, सर्वर, बड़े मेनफ्रेम कम्प्यूटर के साथ–साथ इनपुट, आउटपुट एवं संग्रह (storage) करने वाली युक्तियाँ (devices) आतीं हैं।

**कंप्यूटर साफ्टवेयर प्रौद्योगिकी –** इसके अन्तर्गत प्रचालन प्रणाली (Operating System)] वेब ब्राउजर, डेटाबेस प्रबन्धन प्रणाली (DBMS), सर्वर तथा व्यापारिकध्वाणिज्यिक साफ्टवेयर आते हैं

**सूचना प्रौद्योगिकी के उद्देश्य –** सरकार के निर्णयों में सुधार । सरकार में लोगों के विश्वास में वृद्धि करना । सरकार की जवाबदेही एवं पारदर्शिता बढ़ाना । सूचना युग में नागरिकों की इच्छाओं की सुव्यवस्था की योग्यता प्राप्त करना । नई चुनौतियों का सामना करने में गैर–सरकारी संगठनों, व्यवसायियों एवं इच्छुक नागरिकों को प्रभावी रूप से शामिल करना। सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगिता ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोग भी देश–विदेश के घटनाक्रम से भली–भांति परिचित हो सकेंगे। इसके माध्यम से योजनाओं एवं दस्तावेजों का सुव्यवस्थित रख–रखाव संभव हो सकेगा। सूचना का अधिकार एवं ई–प्रशासन मिलकर देश के विकास में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकेंगे। विभिन्न योजनाओं–परियोजनाओं की जानकारी एक आम आदमी तक इंटरनेट के माध्यम से पहुँचायी जा सकती है ताकि वे उसके बारे में जान सकें एवं लाभान्वित हो सकें। ज्ञान–आधारित भारत के निर्माण में सूचना प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण कारक है।

सूचनाएं सीधे सम्बद्ध व्यक्ति तक पहुंच सकेंगी और बिचौलियों की भूमिका खत्म हो सकेगी जो शोषण का एक कारक है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के समावेश में शामिल प्रयासों और देश में सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी कार्यक्रम देश के प्रशासनिक परिवर्तन प्रयासों के व्यापक ढांचे के भीतर तैयार किए जाने चाहिए।

**सूचना प्रौद्योगिकी की विशेषताएँ**

इसमें प्रशासनिक नेतृत्व एवं प्रौद्योगिकी का एकीकरण हो जाता है।

सरकारी विभागों या अभिकरणों से संबंधित सूचनाएं एवं सेवाएं इण्टरनेट एवं इंटरनेट पर उपलब्ध होना एवं स्वयं सरकार द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी की आधुनिक तकनीकों का प्रशासनिक कृत्यों में प्रयोग करना, सूचना प्रौद्योगिकी का व्यावहारिक स्वरूप है।

ई–शासन की अवधारणा मूल रूप से बेहतर सरकार की मान्यता को पल्लवित करती है जिसके तहत नौकरशाही का छोटा आकार, प्रशासन में सचरित्र, लोक सेवाओं के प्रति जवाबदेही, जनता में प्रशासन के प्रति विश्वसनीयता जगाना तथा प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता लाना इत्यादि शामिल हैं।

यह प्रशासन में सूचना प्रौद्योगिकी का संपूर्ण आत्मसात् कारण है और इसमें सूचना प्रौद्योगिकी शामिल है।

यह अभिशासन की स्थापना की एक पद्धति है।

इस व्यवस्था से कागजी कार्यवाही में कमी आती है तथा विलंब और बाबू राज पर रोक लगती है।

सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा टेलीकांफ्रेंस संभव हुआ है जिससे प्रशासन में दक्षता आई है।

इसमें एक ही कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती और निर्धारित इलेक्ट्रॉनिक कार्यक्रमों के रूप में प्रोग्राम विकसित कर दिया जाता है।

भारत सहित अधिकांश विकासशील देश सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधताओं से ओत–प्रोत हैं। भारत में भाषावाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद तथा सांप्रदायिकता की सामाजिक समस्याएं विद्यमान हैं। सरकार में सूचना और संचार तकनीक का आरंभ और उसका क्रियान्वयन कई चुनौतियों से घिरा हुआ है। ये चुनौतियां ई–सरकार के कारण सरकारी संगठनों के बीच बढ़ती हुई अंतः निर्भरता तथा अंतः संगठनात्मक नेटवर्को के उभरने से पैदा हुई है।

लोगों में सूचना प्रौद्योगिकी एवं सूचना के अधिकार के प्रति भरोसा बढ़ा है। पंचायत की किसानों एवं जनता को कम्प्यूटर की स्क्रीन पर ही अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त कराई जा सकती है। एटीएम से रुपया निकालना, बसों एवं रेलों में आरक्षण की स्थिति जानना एवं टिकट प्राप्त करना इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ई–पंचायत के द्वारा कोई भी व्यक्ति कृषि सम्बन्धी जानकारी एवं मौसम सम्बन्धी जानकारी हासिल कर सकता है और उस सूचना के अनुसार कार्यवाही की जा सकती है। ई–मेल के द्वारा जनता अपनी शिकायत सरकार से कर सकती है और समाधान तथा जानकारियां प्राप्त कर सकती हैं। ई–पंचायत सरकार द्वारा पंचायत को पिछड़े युग से सूचना युग तक पहुंचाने के लिए किया जाने वाला प्रयास है। आज सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान बढ़ता जा रहा है और ऐसे परिदृश्य में पंचायत को इससे जोड़ना अतिआवश्यक है। इस प्रकार ई–पंचायत के माध्यम से प्रभावी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को बहाल कर सुशासन भी स्थापित किया जा सकता है।

**जनजातियों पर आधुनिक सुचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव**

लोगों में सुचना प्रौद्योगिकी एवं सुचना अधिकार के प्रति भरोसा बढ़ा हैं लेकिन जनजातियों तक अभी भी इसका अभाव देखा जा सकता हैं इसका प्रमुख कारण जनजातियों का अपने आप में सीमित रहना तथा किसी भी बाहरी जातियों से खुल कर संपर्क में न आना वे आधुनिक  सुचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों को पहचानते तो हैं परन्तु उन्हें संचालित करना नहीं जानते साथ ही आधुनिक प्रौद्योगिकी में सभी सूचनाएँ मूल भाषा में उपलब्ध न होना भी एक इसका प्रमुख कारण हैं आने वाले समय में आधुनिक सुचना प्रौद्योगिकी में कई सुधार करने की आवश्यकता हैं ताकि समन्वय स्थापित कर इस खाई को पाटा जा सके जनजातिय क्षेत्रों की पंचायतों में वही आधुनिक सुचना प्रौद्योगिकी उपयोग की जा रही हैं जो कि हमारे अग्रणी शहरी समाज में की जाती हैं आवश्यकता हैं कि जनजातिय क्षेत्रों के अनुसार आधुनिक सुचना प्रौद्योगिकी में नए विकल्प खोजे जाए और उन संसाधनों का उपयोग किया जाए जिससे प्रभावी रूप से सूचनाये एवं संचार जनजातियों तक पहुचायाँ जा सके जनजातियों को उन्हीं के क्षेत्र में कम्प्यूटर की स्क्रीन पर अनेक जानकारियाँ प्राप्त करायी जा सकती हैं लेकिन सरकार व समाज को यह भी सोचना पड़ेगा की इसका कितना प्रभाव जनजातियों पर पढ़ रहा हैं इन क्षेत्रों में आज भी अशिक्षा गरीबी प्रमुख समस्या हैं

जनजातियाँ आज भी अपना पूरा समय भोजन की व्यवस्था करने में व्यतीत करते हैं उनके पास सुचना प्रौद्योगिकी व इससे सम्बंधित जानकारियों को लेने का समय ही कहा हैं सरकार व समाज को चाहिए की पहले मूल समस्या पर ध्यान दिया जाये ताकि सही मायने में जनजातियों को उनके अधिकारों के बारे में अवगत कराया जा सके ।

एटीएम से रुपए निकलना, आरक्षण की स्तिथि जानना, रेलवे टिकिट प्राप्त करना, फोर जी मोबाइल पर कृषि एवं मौसम सम्बंधित जानकारियाँ हासिल करना, एडवांस इनफोर्मेशन टेक्नोलॉजी पर अकाउंट क्रिएट करना, फेसबुक व्हाट्स एप जैसी एप्लीकेशनस संचालित करना, विडियो कालिंग व कांफ्रेसिंग करना, एक क्लिक पर अपने हाथों में जानकारी उपलब्ध करना, माय गवर्मेंट एप से तुरंत सुचना प्राप्त करना ।

आधुनिक सुचना प्रौद्योगिकी में संभव हैं, मगर यह गंभीर रूप से विचारणीय विषय हैं, कि जिन लोगों के पास आजादी के उपरान्त वर्तमान समय तक भी मुलभुत सुविधाएँ पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं हैं, इनके लिए आधुनिक सुचना प्रौद्योगिकी के क्या मायने हैं, लेकिन भारत में सरकार की नीतियों द्वारा एक ऐसा परिदृश्य दिखाई दे रहा हैं, जिससे आने वाले समय में जनजातियों को न केवल शिक्षा, स्वास्थ, आवास एवं आधारभूत सुविधाएँ, न्यायिक अधिकार, से जोड़ने की पहल हो रही हैं अपितु आधुनिक सुचना प्रोद्योगिकी का उपयोग करके इन क्षेत्रों में जनजातिय सुचना केन्द्र मौखिक सुचना प्रणाली मॉडर्न रेडियो नेटवर्क आदि जैसे आधुनिक सूचना संस्करणों को जनजातिय क्षेत्रों के निचले पायदान तक पहुँचाया जा रहा हैं, जिससे प्रभावी रूप से जनजातियों तक सुचनाएँ पहुँचाई जा सके और प्रभाव स्वरुप जनजातियों को बिना अपनी मूल संस्कृति खोए बिना मुख्य धरा से जोड़ा जा सके ।

❐

**सन्दर्भ –**


1 *नीरज कुमार राव (2011) सुचना प्रोद्योगिकी और सामजिक संरचना*

2 *विराग गुप्ता (2015) डिजिटल इंडिया में राष्ट्रहित न भूले*

पी. एस. भाटी एवं दिनेश गेहलोत (2006) जवाबदेही प्रशासन और सुचना का अधिकार
3 फारूख आफरीदी (2006) लोकतंत्र में सुचना का अधिकार
4 दुर्गा दास बसु (2005) भारत का संविधान एक परिचय
5 आशीष भट्ट (2002) लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण और उभरता जनजातीय नेतृत्व
6 आशुतोष ठाकुर (2009) ट्राइबल इंडिया
7 सुरेन्द्र परिहार, अशोक प्रधान एवं कवि रूपेंद्र (2009) भारतीय जाती व्यवस्था शास्त्री और आधुनिक
8 भारत सरकार जनजातीय मंत्रालय
9 सुचना प्रसारण मंत्रालय पोर्टल

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 67–80* ***ISSN 0974 -1100***

# आधुनिक संचार साधनों का विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर प्रभाव

**श्रीमती उषादेवी कटारिया**

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। वह निरन्तर अपने विचारों का आदान–प्रदान करता रहता है। उसकी विभिन्न ज्ञानेन्द्रियाँ इस कार्य में उसे सहायता प्रदान करती है अनुभव एवं अनुभूतियों को एकत्रित करना और दूसरों के साथ बाँटना यही प्रक्रिया सम्प्रेषण कहलाती है। (Communication) यह शब्द लैटिन भाषा के Communicate (पशु से बना है जिसका अर्थ है – to impart, make Common: इस प्रकार अपनी भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करना है।

आज प्रगतिशील देशों में नवीन आधुनिक पद्धतियों का चलन बढ़ता जा रहा है ये पद्धतियाँ विज्ञान के नवीन अविष्कारों पर केन्द्रित हैं जिसमें आधुनिक संचार साधनों का भारतीय समाज और विशिष्ट बालकों पर अत्यधिक प्रभाव देखने को मिलता है।

आज अधिकाधिक संचार के साधन किसी भी राष्ट्र के विकास का मेरूदण्ड बन गये है। भारत में सर्वप्रथम संचार उपग्रह एपल द्वारा दूरसंचार तथा डाटा संचार के अनेक प्रयोग किये गये। तत्पश्चात् बहुउद्देशीय उपग्रह इन्सेट के आधार पर मौसम की विस्तृत जानकारी सम्बन्धित तथा देशव्यापी दूरदर्शन एवं दूरसंचार के अन्तरिक्ष कार्यक्रम तैयार किये गये। जिससे दूरदराज तक सम्पर्क कर उन्हें विकास की गति में सहभागी बनाया जा सके।

सन 1983 इन्सेट 1 बी उपग्रह के सफल प्रक्षेपण के साथ देश में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह 'इन्सैट' प्रणालियाँ आज कामयाबियो के उस शिखर को छू रही है। जिसके लिये किसी भी देश को गर्व हो सकता है

वस्तुतः इन्सैट प्रणालियों के उपग्रहों के कारण ही देश में सही अर्थ में संचार क्रान्ति सम्भव हुई है।

फ्रेंच गुयाना के कौरू से एरियन की नवीं उड़ान से छोड़ा गया इन्सैट श्रृंखला की दूसरी पीढ़ी का चौथा उपग्रह इन्सैट 2डी सुधरी हुई पेलोड़ क्षमता और नये किस्म ट्रान्सपोंड़रों से लैंस है। इससे महानगरों के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में और सुधार हुआ है। इससे पेजर और सेलुलर फोन को भी अधुनातन बनाया गया। इक्कीसवी सदी में हाइटेक कक्षा–कक्ष, कम्प्यूटरीकृत पुस्तकें, पेपर लैंस सोसायटी, कम्प्यूटर फ्लॉपी एवं सीडी के रूप में डिजीटल, पुस्तकालयों की संकल्पना अपना साकार रूप लेती जा रही है। अभी तक हमारी सरकारें और उनके कार्यकारी तन्त्र जिन कार्यों को नहीं कर पाये उसे सूचना प्रौद्योगिकी पूर्ण करने में लगी है।

इक्कीसवीं सदी का कक्षा–कक्ष –

इक्कीसवीं सदी में प्रायः कक्षा–कक्ष शिक्षण संस्थाओं के परिसर से उठकर प्रत्येक बालक के अपने घर में आ गया है। घर के किसी कमरें में एक पर्सनल कम्प्यूटर एक तेज गति वाला डाटा लिंक उपकरण और एक ठीक ठाक सा डिजिटल टेलीविजन बस ये ही वे साधन हैं जो आज बच्चों को न केवल सुशिक्षित बना रहे हैं बल्कि किसी उपयुक्त व्यवसाय अथवा कार्य करने योग्य भी बना रहे है।

कुछ वर्षों बाद अन्तरिक्ष वैज्ञानिकों ने इस कमी को भी पूरा कर डाला। नब्बे का दशक प्रारम्भ होते ही उन्होंने एक ऐसा तरीका खोज निकाला जिसमें छात्र, अध्यापक के सामने अपनी शंकाएँ रख सकते है और इसी तरह अध्यापक अपने शिक्षण की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिये छात्र से प्रश्न पूछ सकते है। इस प्रकार सम्पूर्ण देश को एक कक्षा–कक्ष में बदले जाने का सपना साकार हो गया। इंटरनेट ने इस देशव्यापी नेटवर्क को विश्वस्तरीय बनाकर इसकी समीक्षों को भूमण्डलीय आकार दे दिया है।

नेट पर तरह–तरह के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उपलब्ध होने लगे है। उनके नियम अपने प्रशिक्षण तथा विश्वविद्यालय शिक्षण की सामग्री नेट पर देने लगे हैं। इसी तरह दूरदर्शन पर पहले से रिकार्ड किये हुए अथवा प्रसारण के रूप में व्याख्यान उपलब्ध होने लगे हैं। टेलीक्रोन्फ्रेंसिंग के अध्ययन से किसी देश के किसी शहर में बैठा अनुदेशक अपना व्याख्यान दुनिया के छात्रों के लिये दे सकते है। वेब आधारित शिक्षा के विभिन्न सहायक तत्व जैसे पुनरावृत्ति, आकलन मूल्यांकन आदि शिक्षार्थी को जब चाहे तब उपलब्ध होते है। इस प्रकार यह माईल एइब्रिड शिक्षण का है। भविष्य में

कार्यालय भी घर रहित प्रौद्योगिकी से सुसज्जित होंगे जिन्हें यूनिटेल की संज्ञा दी जा रही है।

इण्टरनेट –सूचना क्रान्ति के युग में इन्टरनेट ने विशेष हलचल मचा दी। इन्टरनेट क्या है– इसको पारिभाषित करना ब्रह्माण्ड को शब्दों में बाँधने जैसा है। इन्टरनेट का अर्थ है – 'ए विण्डो टू ग्लोबल इन्टरनेशनल सुपर हाइवे', यह कई छोटे कम्प्यूटर नेटवर्क में सदस्य कम्प्यूटर आपस में एक–दूसरे से बात कर सकते हैं।

इन्टरनेट का प्रारम्भ एक रक्षा प्रायोजना के रूप में हुआ। 1960 के मध्य में कम्प्यूटर बहुत धीमे थे और उन्हें आपस में जोड़कर नेटवर्किंग करके काम करना सुविधाजनक नहीं था। नेटवर्क के एक कम्प्यूटर के भी काम बन्द कर देने से पूरा नेटवर्क असफल हो जाता था।

1970 के आसपास अमरीकी रक्षा विभाग ने 'एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट्स एजेन्सी नेटवर्क' की स्थापना की जो आज विकसित होकर 'इन्टरनेट' बन गया है, जिसमें एक कम्प्यूटर के फेल हो जाने से अन्य कम्प्यूटर अप्रभावित रहते थे। इस नेटवर्क में धीरे–धीरे विश्वविद्यालय और शोध केन्द्र भी शामिल हो गए थे जो अपने शोध परिणामों को एक–दूसरे से बाँट लेते थे। इन्टरनेट के लाभों और बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखते हुए इसे पहले आम जनता और 1973 में संसार के अन्य देशों के लिए भी खोल दिया गया। 1995 तक विश्व के करीब 130 देशों को इससे जोड़ दिया गया था। इस प्रकार इन्टनेट के रूप में विशाल संचार तन्त्र का जन्म हुआ। इस तेजी को वर्ल्ड वाइड वेब (WWW) के रूप में जाना गया।

इन्टरनेट पर किसी जाति, धर्म, रंग, लिंग, समुदाय, देश और भौगोलिक सीमा का बंधन नहीं होने से इसने लोकतान्त्रिक स्वरूप मे दुनिया के सभी लोगों को एक बटन दबाने जितना दूर कर दिया है। कुछ समय पहले तक भारत में इन्टरनेट विश्वविद्यालयों तथा शोध संस्थाओं को इन्टरनेट (Education & Research Network) और निकनेट के माध्यम से उपलब्ध था, किन्तु 15 अगस्त 1995 को विदेश संचार निगम ने इसे आम जनता के लिए खोल दिया था। मुम्बई में विदेश संचार निगम का मुख्य 'नोड' है जो कि अमरीका के इंटरनेट नोड से सैटेलाइट द्वारा और यूरोप से समुद्री तारों के माध्यम से जुड़ा हुआ है ।

इण्टरनेट की परिभाषा – इण्टरनेट एक अत्याधुनिक संचार प्रौद्योगिकी है जिनके करोड़ों कम्प्यूटर एक नेटवर्क से जुड़े हुए होते हैं। इण्टरनेट को मोटे तौर पर कम्प्यूटरों के विश्वव्यापी नेटवर्क के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो एक प्रोटोकोल (सूचना आदान–प्रदान सम्बनी नियम) के जरिये संचार करते हैं।

इण्टरनेट का विवरण – इण्टरनेट का वर्णन करना बिल्कुल ऐसा ही है जैसे किसी का वर्णन करना। नगर का मानचित्र, उसके लोग, बाजार, गलियाँ, घर, लोग, सरकार मौसम आदि या इनका समग्र रूप। यही तो नगर के वर्णन में निहित होता है। इण्टरनेट एक ऐसा ही स्थान है।

इण्टरनेट कोई सॉफ्टवेयर नहीं है, न यह कोई प्रोग्राम है, न कोई हाईवेयर वास्तव में यह तो एक ऐसा स्थान है जहाँ हमें अनेक प्रकार की शैक्षिक जानकारियाँ तथा सूचनाएँ प्राप्त होती हैं।

इण्टरनेट के माध्यम से सूचनाओं तक पहुँचा जाता है, जिसमें व्यक्तियों और विश्व के संगठनों का योगदान होता है। उन्हें नेटवर्क ऑफ सर्वर्स (यानी सेवकों का नेटवर्क) कहा जाता है। इण्टरनेट का एक 'वर्ल्ड वाइड वेब (WWW) है, जिसे मात्र 'वेब' भी कहा जाता है, जो विभिन्न संगठनों, वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों, औद्योगिक इकाइयों, शैक्षिक प्रतिष्ठानों, आम अथवा खास हितों से सम्बद्ध समूहों अथवा निजी व्यक्तियों द्वारा बनाये गये हजारों सर्वर्स को आपस में जोड़ता है। सर्वर्स पर भरे गये वेब पृष्ठों (पेजिज) में विभिन्न प्रकार की जानकारी उपलब्ध होती है, जैसे – पाठ सामग्री (प्लेन टैक्स्ट), तस्वीर, ऐनिमेशन, मल्टीमीडिया आदि। इसे प्राप्त करने के लिए सामान्य शुल्क देना पड़ता है और कभी–कभी बिना किसी लागत के यह जानकारी उपलब्ध हो जाती है। वेब–पृष्ठों से ईमेल, कानफ्रेंसिंग, इलेक्ट्रोनिक पब्लिकेशन्स जैसी सेवाएँ और अन्य व्यावसायिक सुविधाएँ भी उपलब्ध होती हैं, इण्टरनेट पाठ सामग्री (टैक्स्ट) अथवा सूचना को विश्व में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने का एक नया माध्यम है जो अत्यन्त शीघ्र, सस्ते में और आसानी से संचार करता है। यह स्वयं अन्तर्क्रिया नहीं करता, किन्तु उपयोगकर्ता कम्प्यूटरों से इस पर नियन्त्रण रखते हैं, जो उन्हें नेटवर्क पर सूचना भेजने और प्राप्त करने में सहायता पहुँचाते हैं।

1. इण्टरनेट की प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं –
2. इण्टरनेट बड़ी मात्रा में आँकड़ों की खोज करने में सहायक होता है।
3. इण्टरनेट में एक स्थान से अनेक स्थानों तक प्रसारण संचार की अपेक्षा बिन्दु से बिन्दु तक संचारित होता है।

4. इण्टरनेट के द्वारा अनेक मल्टीमीडिया सम्बन्धी कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये जा सकते हैं, जैसे – वीडियो क्रांफ्रेन्सिंग, डौकूमेण्अ, रिट्रीवल आदि।
5. एक सर्वर से अन्य के बीच हाइपर लिंकिंग सुविधा, जिसमें एक शब्द क्लिक करके उपयोगकर्ता विश्व के किसी भी स्थान तक सीधे आँकड़ों के स्त्रोत तक पहुँच सकता है।
6. संक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण सामाजिक नोट्स के आदान–प्रदान में यह सहायता देता हैं।
7. विश्व की नवीनतम खबरें प्राप्त करने में यह सहायक है।
8. व्यापारिक समझौते (वार्ता) करने के काम आता है।
9. वैज्ञानिक शोध पर Collaboration करने का माध्यम है।
10. समान रुचि वाले लोगों के साथ सूचनाओं का आदान–प्रदान करने में सहायक है।
11. आवश्यकतानुसार कम्प्यूटर फाइल्स का स्थानान्तरण करने में सहायता करता है।

इन्टरनेट के बढ़ते हुए उपयोग के कारण आज विश्व सिकुड़ता जा रहा है। कोई भी अपने कम्प्यूटर पर इन्टरनेट के द्वारा दुनिया के किसी भी कोने में जा सकता है अर्थात् यहाँ की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकता है और अपना सन्देश वहाँ पहुँचा सकता है। इस प्रकार ई–अधिगम की प्रक्रिया चलती है। इस समय एशिया, अमरीका से इन्टरनेट के उपयोग में पीछे अवश्य है, किन्तु गोल्डमैन सैक्स इन्वेस्ट रिसर्च के प्रतिवेदन 'गोल्डमैन सैक्स एशिया वेब' में कहा गया है, कि सन् 2003 में एशिया में इन्टरनेट का उपयोग करने वालों की संख्या 6 करोड़ चालीस लाख तक पहुँच गई है। जिनमें 70 प्रतिशत चीन, दक्षिण कोरिया और आस्ट्रेलिया के इन्टरनेट प्रयोक्ता हैं। यदि हमें यह नहीं मालूम की अमुक जानकारी किस वेब साइट पर मिलेगी तो वेब पर हमारे लिए 'गाइड' उपलब्ध है जिन्हें ब्राउसर कहते हैं। 'गोफा', 'वेरोनिका', 'आर्ची' नामक सॉफ्टवेयर पुस्तकालय में हमारे सहायक की तरह हैं जो इन्टरनेट के पुस्तकालय से उचित पुस्तक निकालने में हमारी सहायता करते हैं।

सामान्य इन्टरनेट सेवा –

इन्टरनेट से जुड़ने के लिए हमें एक कम्प्यूटर जिसमें विंडोज का प्रोग्राम हो, साथ ही इन्टरनेट से जुड़ने के प्रोग्राम जैसे 'नेटस्केप नेवीगेटर', 'इन्टरनेट एक्सप्लोरर' आदि की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त हमें एक मोडम, एक टेलीफोन

कनेक्शन की भी आवश्यकता होती है। अगर हम इन्टरनेट से आवाज, संगीत आदि भी सुनना चाहें तो कम्प्यूटर में साउंड कार्ड व स्पीकर भी होने चाहिए।

इसके बाद हमें इन्टरनेट सेवा प्रदान करने वाली संस्था में आवेदन करना होगा। भारत में यह सेवा अभी केवल विदेश संचार निगम लिमिटेड द्वारा चुनिन्दा शहरों में प्रदान की जा रही है। अब कुछ निजी कम्पनियाँ भी इस क्षेत्र में अपनी सेवाएँ देने के लिए तत्पर हैं। इन्टरनेट सेवा हमें दो प्रकार से दी जाती है – एक है 'शैल अकाउण्ट' दूसरी टी.सी.पी.आई.पी.। शैल सेवा में हमें केवल टैक्स्ट अर्थात् स्क्रीन पर केवल अक्षर आदि ही नजर आएँगे जबकि दूसरी सेवा में हमें चित्र, फिल्में, आवाज, संगीत प्राप्त हो सकेगा। दोनों सेवाओं में से कोई भी सेवा चालू होने पर बी.एस.एन.एल. हमें अपने इन्टरनेट सेवा का टेलीफोन नम्बर दो टी.सी.पी.आई.पी. जिन्हें 'प्राइमरी' व 'सैकण्डरी' डी. एन.एस. नम्बर कहा जाता है। एक ई–मेल पता तथा हमारे नाम का कनेक्शन व एक पास वर्ड (गुप्त कोड) देता है। जब हमें यह प्राप्त हो जाता है तब हम कम्प्यूटर में पहले एक मोडम इन्स्टॉल करते हैं उसके पश्चात् हम स्वयं का इन्टरनेट प्रोग्राम जैसे इन्टरनेट एक्सप्लोरर जब इन्स्टॉल करते हैं तब वह स्वतः ही सभी जानकारी पूछ लेता है और इन्टरनेट से जुड़ने के लिए तैयार हो जाता है।

इन्टरनेट शब्दावली –

एक्टिव एक्स (Active-X) – यह प्रोग्राम लिखने के मॉडल के कार्य में लिया जाता है। यह इन्टर एक्टिव वेब पेजों को देखने के लिए बने प्रोग्राम को बनाने में सहायक है। इसके द्वारा ही उपभोगकर्ता उत्तर–प्रश्न पूछ सकता है। वह इसके लिए पुश बटन का उपयोग करता है।

चैट रूम (Chat Room) – यह इन्टरनेट की भाषा में एक–दूसरे को ऑन लाइन बात करने का साईन होता है। इन्टरनेट हमें किसी अन्य इन्टरनेट ६ ाारक से सीधे संवाद की सुविधा उपलब्ध करवाता है।

कुकी (Cookie) – वह एक छोटा प्रोग्राम होता है जो कि उस समय क्षमता है जब हम किसी वेब साइट से जुड़ते हैं। यह हमारी पहचान, चाही गई साइट, सर्व विषय आदि को अधिक आसान व क्रियाशील बनाते हैं।

काउण्टर (Counter) – यह सामान्यतः किसी वेब साइट या वेब पेज पर आने वाले लोगों की संख्या दर्शाता है।

क्रेकर (Hracker) – जो किसी साइट को तोड़ देता है या उसको लॉक

या बन्द कर देता है, जिससे कोई और उसको नहीं देख सके, उस व्यक्ति को फ्रेकर अथवा हैकर (Hacker) कहते हैं।

लिंग (Link) – लिंग हमें एक साइट से दूसरी साइट या एक वेब पेज से दूसरे वेब तक पहुँचाता है।

लोड (Load) – यह 'डाऊन लोड' या 'अप लोड' शब्द का सूक्ष्म रूप है। इन्टरनेट से आपके कम्प्यूटर द्वारा प्राप्त की जाने वाली जानकारी डाउन लोड कहलाती है। वह प्रक्रिया जिसमें इन्टरनेट के द्वारा हम किसी एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर को सूचना हस्तान्तरित करते हैं। अप लोड कहलाती है।

लोकेशन (Location)– लोकेशन किसी भी वेब साइट या वेब पेज का पता होता है।

मोडेम (Modem) – यह मोड्यूलेटर डीमोड्यूलेटर डिवाइस का सूक्ष्म नाम है। यह वह यन्त्र है, जो कि एक कम्प्यूटर को अन्य कम्प्यूटर से टेलीफोन लाइन के माध्यम से परस्पर जोड़ने का कार्य करता है।

नेट (Net) – इन्टरनेट का सूक्ष्म रूप ही नेट है।

प्रोटोकोल (Protocol) – नियमों का वह समूह जिसके अन्तर्गत कम्प्यूटर अन्य लोगों से किस तरह इन्टरनेट पर सूचना आदान–प्रदान करेंगे, प्रोटोकोल कहलाता है।

साइबल स्पेस (Cyber Space) – यह शब्द इन्टरनेट की व्याख्या करता है। इसका उपयोग सबसे पहले एक विज्ञान के उपन्यासकार विलियम गिब्सन ने 1984 में किया।

डूमेन नेम (Domain Name) – वेब साइट के सबसे उच्चतम स्तर का नाम 'डूमेन नेम' होता है।

सर्फिंग (Surfing)– यह प्रक्रिया जिससे हम इन्टरनेट पर कार्य करते हैं या इन्टरनेट को कार्य में लेते हैं, सर्फिंग कहलाती है।

यू.आर.एल. (URL) – 'यूनिफार्म रिसोर्स लोकेटर' का छोटा प्रारूप जो कि हर वेब साइट का एड्रेस होता हैं, यूआरएल कहलाता है। यह वेब साइट की लोकेशन को स्पष्ट करता है व सामान्यतः 'http://' से शुरू होता है।

वेब पेज (Web Page)– वह दृश्य जो मॉनीटर पर हमें किसी तरह की सूचना देता है, वेब पेज कहलाता है।

आन लाइन (On Line)– इन्टरनेट से जुड़े रहने को ही ऑन लाइन कहते हैं। आजकल 'ऑनलाइन एज्युकेशन' का विस्तार किया जा रहा है। विश्वविद्यालय

शिक्षा के लिए www.vu.org. नामक वेबसाइट है जो इस समय लगभग पाँच लाख विद्यार्थियों को शिक्षित कर रही है।

भारत में इन्टरनेट पर वर्चुअल नेटवर्क यूनिवर्सिटी की स्थापना 21वीं सदी के प्रारम्भ में पुणे में की गई है जो कि खुले विश्वविद्यालय की भाँति कार्य कर रहा है। यह विश्वविद्यालय अमरीका की 'क्रेडिट प्वाइंट' प्रणाली का पालन कर रहा है। जिसमें इन्टरनेट पर ही परीक्षा ली जा रही है, उत्तरों का मूल्यांकन किया जा रहा है और इसके बाद डिग्री और डिप्लोमा दिया जा रहा है। Education tc Home' ई.टी.एच. इन्टरनेट सेवा के माध्यम से शिक्षा को घर–घर तक पहुँचाया जा रहा है। यह एक सफल प्रयोग है।

23 सितम्बर, 1999 से इन्टरनेट पर हिन्दी में भी सूचनाओं और आँकड़ों के आदान–प्रदान तथा पत्र व्यवहार एवं लिखित वार्ताओं की सुविधा उपलब्ध हो गई है। विश्व के पहले हिन्दी इन्टरनेट पोर्टल 'वेब–दुनिया काम' भी इन्टरनेट पर अन्य पोर्टलों की तरह सूचना का प्रवेश द्वार है। जिस पर सूचनाएँ अंग्रेजी के Lfkku पर हिन्दी में सुलभ होंगी। इस पोर्टल का विकास और इन्दौर की 'सुवि इन्फरमेशन सिम्टम्स लिमिटेड' ने किया है। इसके लिए सर्वप्रचलित अंग्रेजी की–बोर्ड से भी काम चलाया जा सकता है।

वर्तमान में अध्ययनरत छात्र–छात्राएँ ही नहीं, नौकरी कर रहे लोग भी अपनी शैक्षणिक योग्यता बढ़ाने या आगे तरक्की के लिए आवश्यक उपाधियाँ प्राप्त करने के लिए अपने व्यवसाय को छोड़े बिना ही ब्रिटेन, अमरीका व अन्य यूरोपीय देशों के उच्च शिक्षा शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश ले सकते हैं तथा इन्टरनेट द्वारा ही पाठ्यक्रम समाप्त कर उपाधि प्राप्त कर सकते हैं।

अर्नेट सेवा – इसका अर्थ है – 'एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च नेटवर्क'। भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक विभाग ने संयुक्त राष्ट्र विकास की सहायता से इसे तैयार किया है। हमारे देश की कई कार्पोरेट कम्पनियाँ तथा शैक्षिक संस्थान इसका लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

यूसनेट सेवा – यह सामूहिक चर्चा के लिए है। इस समय दुनिया में 5000 से अधिक समाचार समूह हैं जो अलग–अलग भाषाओं में विभिन्न विषयों की जानकारी देते हैं। इसके लिए एक कम्प्यूटर, एक मोडम व एक टेलीफोन की आवश्यकता होती है।

टेलनेट प्रणाली – इस प्रणाली के विशाल डेटाबेस की सहायता से हम नई खोज कर सकते हैं। इस प्रणाली के तहत एक कम्प्यूटर से काफी दूरी के कम्प्यूटर तक लॉग इन होकर उस कम्प्यूटर के की–बोर्ड को आसानी से देख सकते हैं।

अब तक इन्टरनेट की दुनिया से सम्पर्क का साधन कम्प्यूटर–मॉडम थे लेकिन अब बाजार में वेबफोन, वेबटीवी और वेबगैम जैसे उपकरण आ रहे हैं जो वर्ल्ड वाइड वेब की दुनिया से हमको रूबरू करवाएँगे। इन्हें इन्टरनेट की दूसरी क्रान्ति का जनक माना जा रहा है। भारत में इन्टरनेट प्रयोगकर्ताओं की संख्या मार्च 1995 में 0. 002 मिलियन, मार्च 1999 में 0.28 मिलियन, मार्च 2002 में 4.5 मिलियन, दिसम्बर 2003 में दस मिलियन पहुँच गई। ये आँकड़े दर्शाते हैं कि भारतवासी भी निरन्तर अपने ज्ञानवर्धन हेतु इन्टरनेट का प्रयोग करके लाभान्वित हो रहे हैं।

वाई–फाई – वाई एक वायरलेस लोकन एरिया नेटवर्क सिस्टम है। इसके द्वारा किसी कमरे से लेकर एक शहर तक को वायरलेस नेटवर्क से जोड़ा जा सकता है। कम्प्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल फोन आदि पर बिना किसी तार के इन्टरनेट का प्रयोग किया जा सकता है तथा आँकड़े (डाटा) स्थानान्तरिक किये जा सकते हैं।

नेत्रहीनों के लिए ब्रेललिपि आधारित 'की–बोर्ड'

आस्ट्रेलिया की रोबोट्रान कम्पनी ने नेत्रहीनों के लिए एक विशेष ब्रेललिपि आधारित 'की–बोर्ड' तैयार किया है। जिसकी सहायता से वे कम्प्यूटर पर सभी कार्य सामान्य व्यक्तियों की तरह कर सकते हैं। इस 'की–बोर्ड' के साथ एक ध्वनि प्रणाली भी जुड़ी हुई है। जैसे ही इस 'की–बोर्ड' पर कार्य प्रारम्भ किया जाता है, कि उसमें उत्पन्न ध्वनि से यह ज्ञात हो जाता है कि ऑपरेटर ने कहीं कोई गलती तो नहीं की है, इसे 'पर्किन्सन ब्रेल की–बोर्ड कहते हैं।

मुम्बई में नेत्रहीनों के राष्ट्रीय संगठन –इन्डियन एसोसिएशन फॉर द विजुअली हैण्डीकेप विद्यार्थी विद्यापीठ भवन, चर्च गेट, मुम्बई ने इस तरह के 'की–बोर्ड' का उपयोग प्रारम्भ कर दिया है। इसके अतिरिक्त जो लोग ब्रेललिपि से परिचित नहीं हैं वे भी सामान्य 'की–बोर्ड' तथा स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर की सहायता से कम्प्यूटर में दक्षता प्राप्त कर सकते हैं।

दूरदर्शन – दूरदर्शन आज शिक्षा प्रदान करने का महत्वपूर्ण साधन बन गया है। सर्वप्रथम अमरीका हारवर्ड विश्वविद्यालय के हेराल्ड हण्ट नामक व्यक्ति ने इसका प्रयोग शिक्षा प्रदान करने के लिए किया तथा 1936 में बी.बी.सी. लन्दन ने इसे

जनता के लिए उपलब्ध करवाया । भारत में नियमित रूप से इसका प्रचलन 15 सितम्बर, 1959 को हुआ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में दूरस्थ शिक्षा तथा दूरदर्शन के उपयोग पर और अधिक बल दिया गया और आज इसका प्रयोग विविध शैलियों से शिक्षा प्रदान करने के लिए किया जा रहा है। इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के विषय में चर्चा इसी अध्याय के प्रारम्भ में तथा पुस्तक के प्रथम अध्याय में की जा चुकी है।

वर्तमान में स्काई डीटीएच सेवा को अमरीका उपग्रह पैन एम सेट–4 के माध्यम से प्रसारित किया जा रहा हैं। इस सेवा में 40 चैनल हैं जिनमें क्षेत्रीय भाषाओं के चैनल विशेषतः समाचार, फिल्म, मनोरंजन चैनल, संगीत, व्यवसाय आदि उपलब्ध हैं। इसमें 'पैरेन्टल लॉक' की सुविधा भी है अर्थात् जिस चैनल से बच्चों को दूर रखा जाना चाहिए, उसे अभिभावक बन्द कर सकते हैं। इस सेवा में उपग्रह सिग्नलों को संकेतबद्ध करने के लिए अत्याधुनिक डिजिटल टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल होता है।

भारत में 1999 से पूर्व ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में एकमात्र विदेशी चैनल 'डिस्कवरी' ही था। इसके कार्यक्रम सूचनात्मक और शिक्षाप्रद होते हैं। 'डिस्कवरी' ने भारत में हिन्दी भाषी दर्शकों के बीच अपनी पहुँच बनाने के लिए हिन्दी भाषा में भी कार्यक्रमों की डबिंग प्रारम्भ कर दी। इसके बाद सूचना और शिक्षा सम्बन्धी 'नेशनल ज्योग्राफिक' चैनल भी भारत में देखा जाने लगा। डिस्कवरी चैनल एक नई तैयारी के साथ' एनीमल प्लैनेट' नामक नया चैनल लेकर आ गया है। यह जानवरों की दुनिया पर केन्द्रित शिक्षाप्रद चैनल है। इन तीन शैक्षिक चैनलों के साथ अभी तक लगभग कुल 70 के आसपास चैनल हैं इनमें से अधिकांश चैनल विदेशी व विविध प्रकार के हैं।

1999 में देश में शिक्षा को पूरी तरह समर्पित पहला शैक्षणिक दूरदर्शन चैनल इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) ने शिक्षा विभाग के साथ मिलकर 'ज्ञान दर्शन' के नाम से विकसित किया था, जिसने सन् 2000 से कार्य प्रारम्भ कर दिया। यह 24 घण्टे का चैनल है लेकिन प्रारम्भ में यह 8 से 12 घण्टे का ही प्रसारण कर सका। इस चैनल में शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र प्रौढ़, प्राथमिक, माध्यमिक, महाविद्यालय स्तर तक के भाषा और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों तथा नौकरी के अवसरों को भी शामिल किया गया।

निकलोडिऑन एवं जी नेटवर्क द्वारा 16 अक्टूबर, 1999 से भारत में एक नया बाल कार्यक्रमों का दूरदर्शन चैनल शुरू किया गया। इस चैनल पर 24 घण्टे अंग्रेजी

में बच्चों के विश्वस्तरीय मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम प्रसारित किए जा रहे हैं। निकलोडिऑन अमरीका का नम्बर एक केबल चैनल है। इसने 20 वर्ष पूर्व बच्चों के लिए अनूठे कार्यक्रमों को प्रारम्भ किया था। इसके कार्यक्रम विश्व भर में बच्चों के बीच काफी लोकप्रिय हैं। इसका उद्देश्य भारत में बिल्कुल नए व मौलिक कार्यक्रमों का प्रसारण करना है। इनमें हास्य, मनोरंजन व ज्ञान–विज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न शामिल हैं।

दूरदर्शन कार्यक्रम –

शैक्षिक दूरदर्शन (Edcuational T.V.) – ई.टी.वी. के द्वारा प्रत्येक बालक एवं प्रौढ़ को श्रेष्ठ शिक्षण उपलब्ध करवाया जाता है। इसके द्वारा अनेक शिक्षाप्रद कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं, जैसे – इतिहास व कार्यक्रम साधनों, व्यावसाय सम्बन्धी सामान्य ज्ञान आदि।

शैक्षणिक दूरदर्शन (Instructional T.V.) शैक्षणिक दूरदर्शन कार्यक्रम पाठ्यक्रम से सम्बन्धित नियोजित तथा क्रमबद्ध होते हैं इनका प्रयोग विकास में कई तरह से किया जाता है –

(क) पूर्ण दूरदर्शन शिक्षण ( Total Television Teaching T.V.) सम्पूर्ण शिक्षण दूरदर्शन कार्यक्रम के द्वारा ही चलता है बाद में शिक्षक छात्रों की समस्याओं का समाधान करता है।

(ख) पूरक दूरदर्शन शिक्षण (Supplemented T.V. Teaching STT) – यह कार्यक्रम आवश्यकतानुसार एक सप्ताह, पन्द्रह दिन अथवा एक महीने में प्रस्तुत किए जाते हैं। इनका उद्देश्य शिक्षक तथा छात्र दोनों को शिक्षण में पूरक सामग्री उपलब्ध करवाना है।

(ग) दूरदर्शन, शिक्षण की सहायक सामग्री के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं, जैसे किसी ऐतिहासिक lfky की जानकारी देने हेतु, किसी विशेष फसल को बोने की प्रक्रिया आदि का वर्णन समझाने हेतु।

प्रसारण अनुक्रिया के आधार पर दूरदर्शन तीन प्रकार के होते हैं –

खुला परिपथ दूरदर्शन (Open Circuit T.V.)

बन्द परिपथ दूरदर्शन (Closed Circuit T.V.)

उपग्रह दूरदर्शन (Satellite T.V.)

शिक्षा में दूरदर्शन का महत्व –

यह दूरस्थ शिक्षा का सशक्त माध्यम है।

एक समय में अधिकाधिक लोगों को शिक्षित करने में सहायक है।

समय, शक्ति तथा धन की दृष्टि से मितव्ययी है।

उसके द्वारा योग्य व अनुभवी शिक्षकों तथा विशेषज्ञों की सेवाओं का उपयोग सम्भव है।

व्यवसायरत लोगों को उनके क्षेत्र में विशिष्ट शिक्षा देने में सहायक होता है।

शिक्षा के लिए समान अवसर प्रदान करता है।

प्रभावशाली शिक्षण का माध्यम है।

स्व–अधिगम को प्रेरित करता है।

शिक्षा में लचीलापन तथा आधुनिकीकरण प्रदान करता है।

अवकाश के क्षणों का सदुपयोग होता है।

नवीनतम ज्ञान में वृद्धि एवं जन–जागृति में सहायक है।

राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है।

दूरदर्शन कार्यक्रम की संरचना –

दूरदर्शन कार्यक्रम का निर्माण तीन चरणों में किया जाता है –

1. **योजना निर्माण,** 2. **प्रस्तुतीकरण,** 3. **मूल्यांकन**

**योजना निर्माण –**

उद्देश्यों का निर्धारण छात्रों की सम्भावित उपलब्धियों के आधार पर किया जाता है।

छात्रों का पूर्वज्ञान, शैक्षिक योग्यता, रुचि, आवश्यकता आदि को ध्यान में रखा जाता है।

कार्यक्रमों के योजनाबद्ध लेखन हेतु विशेषज्ञों का चयन किया जाता है।

लिपि बोधगम्य, प्रभावशाली, स्पष्ट, सुग्राहा बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

कार्यक्रम के उत्पादन हेतु प्रकाश, ध्वनि एवं सैट्स की समुचित व्यवस्था कर रिकार्डिंग की जाती है।

**प्रस्तुतीकरण** – कार्यक्रमों का आकर्षक ढंग से प्रस्तुतीकरण किया जा सके एतदर्थ आवश्यक है –

कार्यक्रम छात्रों को पुनर्बलित तथा अभिप्रेरित करने वाले हों।

कार्यक्रमों का क्रम रुचिकर हो।

प्रसारण समय अधिकाधिक लोगों की सुविधा को ध्यान में रखकर निर्धारित किया जाए।

कार्यक्रम प्रसारण का समय व पत्र–व्यवहार का पता आदि जानकारियों स्पष्ट रूप से दी जानी चाहिए।

**मूल्यांकन –**

प्रसारणोपरान्त छात्रों का मूल्यांकन तथा कार्यक्रम का मूल्यांकन करने हेतु कार्यक्रम पर छात्रों की प्रतिक्रियाएँ आमंत्रित की जाएँ।

प्रस्तुत किए गए कार्यक्रम पर छोटे–छोटे प्रश्न के उत्तर लिखवाने हेतु पत्र–व्यवहार किए जाएँ।

छात्रों की उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन कर पुनः उन्हें लौटा दिया जाए। उपर्युक्त तीनों चरणों का उचित ढंग से अनुकरण करने पर दूरदर्शन के द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेगी।

दूरदर्शन की सीमाएँ –

शिक्षण में शिक्षक और विद्यार्थी दोनों का अपना महत्व है, क्योंकि एडमस के अनुसार, शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है इसमें शिक्षक प्रेरणा देता है तथा छात्र प्रतिक्रिया करता है। दूरदर्शन में छात्र को प्रेरणा तो मिलती है, किन्तु प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करने के अवसर नहीं मिल पाते। अतः यह एक पक्षीय प्रक्रिया हो जाता है।

मन्द बुद्धि व पिछड़े हुए छात्रों की दृष्टि से इसकी शिक्षण गति कई बार तीव्र हो जाती है।

अधिक महँगा होने के कारण सबके द्वारा नहीं खरीदा जा सकता।

कई दूर–दराज के क्षेत्रों में समुचित विद्युत व्यवस्था के अभाव में इसके कार्यक्रम नहीं पहुँच पाते।

समुचित सामाजिक विकास नहीं हो पाता।

कभी–कभी दूरदर्शन के कार्यक्रम अधिगम में हस्तक्षेप करते हैं। इसके द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों में छाया–चित्रों पर अधिक ध्यान देने के कारण विषय–वस्तु गौण हो जाती है।

अन्त में, कहा जा सकता है कि शिक्षा का प्रजातंत्रीकरण एवं सार्वभौमिकीकरण करने में दूरदर्शन का अपना विशिष्ट स्थान है।

निष्कर्ष :–

दूरदर्शन सम्प्रेषण संचार क्रिया का एक प्रभावीशाली तथा शक्तिशाली माध्यम है। दूरदर्शन प्रसारण पर नृत्य, नाटक, संगीत, बच्चों के लिए कार्यक्रम, ग्रामीण भाईयों के लिए कार्यक्रम, देश–विदेश की घटनाओं से सम्बन्धित कार्यक्रम, सामाजिक विषयों पर आधारित कार्यक्रम आदि आते है। इस लिए दूरदर्शन का अपना एक विशिष्ट स्थान है। इसमें दूरदर्शन के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलूओं का विस्तार से विवरण किया है।

❐

***सन्दर्भ –***


1. *एलेन, डवाइट एण्ड रेयन, के.ए. : माइक्रो टीचिंग' रीडिंग (मास. यू.एस.ए.) एडीशन–वेसले 1969।*
2. *एमीडन हॉग : वर्बल इन्टरएक्शन, थियोरी रिसर्च एण्ड प्रेक्टिस।*
3. *अनास्तसी, ए : 'साइक्लोजिकल टेस्टिंग' मेकमिलन कम्पनी, न्यूयॉर्क, 1937।*
4. *आप्टर, जे.एस. : 'द न्यू टेक्नोलॉजी ऑफ एज्यूकेशन' मेकमिलन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, लन्दन, मेलबॉर्न, टोरन्टो, 1968।*
5. *ऑस्टिनिक, केहेरिस : 'आसपेक्ट्स ऑफ एज्यूकेशनल टेक्नोलॉजी' वाल्यूम ट, पिटमैन पब्लि ंग, लन्दन।*
6. *बाजपेयी, ए.सी. एण्ड लीडहोम, जे.एफ. : 'आसपेक्ट्स ऑफ एज्यूकेशनल टेक्नोलॉजी, वाल्यूम VI पिटमैन पब्लिशिंग कम्पनी, न्यूयॉर्क।*
7. *बीअर्ड : 'टीचिंग एण्ड लर्निंग इन हायर एज्यूकेशन, पेंग्यूइन बुक्स', 625, मेडीसन एवेन्यू, न्यूयॉर्क, 1976।*
8. *बेंजामिन एस. ब्लूम कीथवोहल, आर. डेविड, मेसिआ, बी. वेरट्रम : 'टेक्सोनॉमी ऑफ एज्यूकेशनल ऑब्जेक्टिव्स' ए क्लासिफिकेशन ऑफ एज्यूकेशनल गोल्स, डेविड मेक्के कं., इन्क., न्यूयॉर्क, 1965।*
9. *बर्नार्ड, एच.डब्ल्यू. : 'साइकॉलोजी ऑफ लर्निंग एण्ड टीचिंग' मेक्ग्रा हिल बुक कम्पनी, न्यूयॉर्क।*
   *बेस्ट, जे.डब्ल्यू. : 'रिसर्च इन एज्यूकेशन'।*
10. *भाई योगन्द्र जीत 'शिक्षा के नवाचार और नवीन प्रवृत्तियाँ, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1992।*
11. *ब्रुक फील्ड, एस.डी. 'द स्कीलफुल टीचर' जॉसी–बॉस : सेन फ्रांसिस्को, 1990।*
12. *ब्राउन, जे.डब्ल्यू., लेविस, आर.वी. एण्ड हरक्लेरोड, एफ : ए.वी. 'इन्स्ट्रक्शन टेक्नोलॉजी मीडिया एण्ड मेथड्स', मेक्ग्रा हिल बुक कम्पनी, न्यूयॉर्क।*
13. *बुच, एम.बी. (एज्यू.) : 'ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन' बड़ौदा, सेन्टर ऑफ एडवान्स्ड स्टडी इन एज्यूकेशन, एम. एस. यूनीवर्सिटी, वाल्यूम **I]** 1974, वाल्यूम **II]** 1979।*
14. *बजट, आर. एण्ड लीडलम, जे. : 'आस्पेक्ट्स ऑफ एज्यूकेशन टेक्नोलॉजी' पिटमैन पब्लिशिंग हाउस, लन्दन,।*
15. *कार्टर, वी. गुड : 'डिक्शनरी ऑफ एज्यूकेशन', यू.एस.ए, 1945।*
16. *चौहान, एस.एस. : 'ए टेक्सट–बुक ऑफ प्रोग्राम्ड इन्स्ट्रक्शन' स्अर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नईदिल्ली–16, 1985।*
17. *क्लेटन थॉमस, ई. : 'टीचिंग एण्ड लर्निंग' साइक्लोजिकल पर्सपेक्टिव प्रेन्टिस हाल, लन्दन।*

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 81–93* ***ISSN 0974 -1100***

# संचार साधनों पर बढ़ती निर्भरता और सामाजिक संबंधों के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष

**अंतिमबाला पाण्डेय**

सूचना प्रोद्योगिकी वह तकनीक है, जिसमें कोई भी विषय, जानकारी ब्रह्माण्ड में कहीं भी उपलब्ध है किसी भी समय किसी भी व्यक्ति द्वारा उपलब्ध कराई जाती है। समाज के सम्पूर्ण विकास के लिये सूचना एक आवश्यक व महत्वपूर्ण स्तम्भ है । सूचना प्रोद्योगिकी एक वृहद् अवधारणा है जिसमें सूचना प्रक्रिया और उसके प्रबन्ध संबंधी सभी पहलू शामिल है –कम्प्युटर, हार्डवेयर, साफ्टवेयर और इन्टरनेट सूचना प्रजातियों के आधार है, जिनका डिजाईन तैयार करने इन्हे विकसित करने और उनके संचालन व प्रबन्ध का कार्य सूचना प्रोद्योगिकी व्यवसायियों द्वारा किया जाता है ।

संचार के क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रगति ने वर्तमान समय को सूचना क्रान्ति के युग के रूप में परिभाषित किया है। व्यावसायिक, औद्योगिक, वाणिज्यिक विकास तथा संचार प्रगति में गहरा अन्तर्सम्बन्ध है। संचार का अर्थ है स्वयं के भावों ,विचारों , संदेशों, सूचनाओं, उपलब्धियों को अतिशीघ्र दूसरों तक प्रेषित करना । वर्तमान समय में समाज को इसके सम्बन्ध में प्रभावित करने वाला सबसे प्रमुख साधन दूरसंचार है, जिसमें निरन्तर आधुनिकतम प्रणालियों के विकास ने क्रान्ति ला दी है । इसके तहत इन्टरनेट जैसी आधुनिकतम सुविधाओं ने सम्पूर्ण विश्व को एक सूचना संचार व्यवस्था के नेटवर्क से जोड़ दिया है । वस्तुतः सूचना प्रौद्योगिकी एक मिश्रित प्रौद्योगिकी है जिसमें कम्प्युटर टेली कम्न्युकेशन तकनीक दोनो ही प्रकार की प्रौद्योगिकी एक दूसरे के साथ मिलकर सूचना संसाधन व संप्रेषण का कार्य करती है ।

आज से पहले प्राचीन समय में दिव्यागांक बालक घर परिवार में होता था उसे एक कौने में बैठा कर रखा जाता था । अतः वह किसी अपरिचित को देखकर क्रोध करता था किन्तु आज सब तकनीकी माध्यम से यह सब बाते कम देखने को मिलती है । इनके अलग स्कूल है जो इन्हें समाज में दर्जा प्राप्त करवाते है ।

**विशिष्ट बालक –**

सृष्टि के अभ्युदय से आज तक कोई दो प्राणी एक से नहीं होते है, न ही उनका व्यवहार एक सा होता हैं बाल विकास के अनुसार दो प्रकार के बालक होते है – कुछ बालक सामान्य होते है तथा कुछ विशिष्ट जिन्हें हम विशेष आवश्यकता वाले बालक कहते है जो प्रखर बुद्धि या शारीरिक या मानसिक रूप से पिछड़े होते है उन्हें हमे एक अलग तरह से शिक्षित करने की आवश्यकता होती है ऐसे बालकों पर समाज द्वारा किये गये व्यवहार का गहरा असर पड़ता है तथा बालक के व्यक्तित्व का विकास किस प्रकार तथा कैसा होगा। यह उसके सामाजिक ,पारिवारिक, आर्थिक ,मानसिक परिस्थितियों से निर्धारित होता है । बालक की स्वाभाविक आवश्यकता होती है । विशिष्ट बालक उन्हें कहा जाता है जो अपनी योग्यता ,ज्ञानता और व्यवहार व्यक्तित्व संबंधी विशेषताओं की दृष्टि से अपनी आयु के सामान्य बालकों से पिछड़े होते है । शारिरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक और नैतिक आदि सभी व्यक्तित्त्व गुणों के आधार पर सामान्य से पिछड़े बालकों को दिव्यांग बालक कहा गया है ।

**दिव्यांग और सूचना प्राद्योगिकी –**

सामाजिक विकलांग व्यक्तियों को शिक्षा का उद्देश्य उनको समुदाय में आत्मनिर्भर बनाने के लिये तैयार करता है बौद्धिक अक्षमता के कारण मानसिक मंदबुद्धि लोगों को ज्ञान और कौशलों को अर्जित करने की सीमाएँ होती है । उनमें से कुछ तो बहुविकलांग होते है कम दिखना,कम सुनना या मिर्गी की बीमारी, इस समुह को तो सीखने में और भी कठिनाई आती है । तकनिकी का विकास होने से संभव हो सका है इलेक्ट्रानिक और अन्य कारणों की सहायता से मानसिक विकलांगों को भी सार्थक जिन्दगी जीने में मदद मिली है । इलेक्ट्रानिक की मदद से व्हील चेयर्स धूमने मे मदद करने वाले उपकरण कम्प्युटर के सहायक उपकरणों का अनुकूलन शैक्षणिक साफ्टवेयर इत्यादि जरूरतमंद लोगों को बहुत उपयोगी सिद्ध हुए है ।

इलेक्ट्रानिक तकनीक के अतिरिक्त सूचना तकनीकि भी उनकी जिन्दगी में एक क्रान्ति लेकर आयी है , सूचनाएँ जिनमें केवल कुछ दिनो लोगों की पहुँच में थी अब इन्टरनेट के माध्यम से बहुत लोगों तक पहुंच चुकी है । व्यावसायिक परिवार के सदस्य तथा अन्य जो मानसिक विकलांग के क्षेत्र में कार्य कर रहे है । अब उचित वेबसाईट खोलकर जरूरी सूचनाएं एकत्र कर सकते है इसे इन्हे अपने बदलते परिवेश तथा इस क्षेत्र में हो रही नयी–नयी शोध से परिचित रख सकते है । इसके अतिरिक्त तकनीकि तथा सूचना तकनीकि के पत्राचार विधि द्वारा शिक्षा के लिये पथ निर्माण किया है इससे दूर ग्रामीण क्षेत्र के लोग भी शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ उठा सकते है

**संचार साधन तथा कार्यात्मक उपकरण –**

बच्चों की शिक्षा का लक्ष्य जहाँ तक संभव हो सकता है आत्मनिर्भर बनाने के लिये तैयार करना होता है जो कुछ बच्चों के लिये कुछ उपकरणों को पहचानना आवश्यक हो जाता है जो समुदाय में उन्हें आत्मनिर्भर रूप से कार्य करने में सहायक होते हैं ।

उदाहरण के तौर पर शिक्षक सब्जियों के नाम सिखाते समय मूर्त सब्जियां नमूने, फ्लैस कार्ड्स चार्ट्स का प्रयोग करता है लेकिन विद्यार्थी जो बोलने में असमर्थ है, अगर उनको सब्जि खरीदने बाजार जाना है तो उसे जेब में रखने वाले सब्जियों के कार्डस दे सकता है जिससे वह सब्जि वाले को दिखाकर सब्जी खरीद सकता है । एलबम में संप्रेषण में सहयोग करने वाले और बहुत चित्र हो सकते है ।

विशेष यंत्र /उपकरणों के उपयोग की सार्थकता उस समय समाप्त हो जाती है जब शिक्षार्थी वह अभिधारणा सीख जाता है ,लेकिन कार्यात्मक शिक्षण सामग्री की आवश्यकता समुदाय में आत्मनिर्भर बनाने के लिये बनी रहती है जैसे कपड़ो का अनुकूलन ।

**दिव्यांगों के लिये संचार साधन –**

तकनीकी वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग जीवन के प्रयोगात्मक पहलुओं में करने से है अगर सही प्रकार से विकसित की जाये तो तकनीकी शिक्षा को ओर लाभदायी, व्यक्तित्व और ताकतवर बताया जा सकता है तथा यह नयी–नयी सूचनाएं सीखने,वैज्ञानिक आधारित निर्देश तथा शिक्षा में सबकी पहुंच करवा सकती है ।

शैक्षणिक तकनीक से तात्पर्य एक जटिल एकिकृत प्रक्रिया विधि, विचार उपकरण एवं लोगों की भागीदारी से है, समस्याओं के विश्लेषण के लिये संगठन संरचना, कार्यात्मक तथा मूल्यांकन करना एवं इन सभी समस्याओं के लिये समाधान ढूँढना जिसमें सीखने के सभी पहलु सम्मिलित है ।

शैक्षणिक तकनीकी का एक उद्देश्य शिक्षक की कार्यकुशलता को बढ़ावा देना है । शैक्षणिक तकनीकी का प्रयोग, प्रभावशाली निर्देश, व्यक्तिगत भतभेदो को सुसाध्य बनाना सामान्य शैक्षणिक अवसर प्रदान करना, ज्ञान को संरक्षित रखना, गुणवत्ता शिक्षा देना शैक्षणिक योग्यता, पूर्व सेवा तथा सेवा में रहते हुए शिक्षा क्या, भारतीय शैक्षणिक तंत्र में समस्याओं का समाधान ढूँढना ।

तकनीकी में हार्डवेयर /उपकरण साफ्टवेयर या प्रायोगिक निर्देश, कार्यक्रमों की योजना है, उदाहरणनार्थ दृश्य निर्देश –चित्र स्लाईड्स, श्रव्य, दृश्य फिल्मस का विकास) मुख्यतः फोटोग्राफी, रेडियो, टेपरिकार्डर, टेलिविजन स्लाइड, प्रोजेक्टर और ओवर हेड प्रोजेक्टर के आविष्कार से हुआ है ।

शैक्षणिक प्रौद्योगिकी श्रव्य और दृश्य निर्देशों का प्रसारण तथा उपग्रह संप्रेषण के द्वारा सूचनाए मिलना नवीन विकास है इसके अतिरिक्त सूचना तकनीक से यह संभव हो सका है कि जीवन के हर पहलु के संबंध में सूचनाएं मिल सकती है ।

**प्रयास व सुझाव –**

मंदबुद्धि बच्चों को कौशल सिखानें में प्रयुक्त सामग्री को निर्देशात्मक सामग्री कहते हैं । विभिन्न प्रकार की सामग्री जैसे– मूर्त वस्तुयें , नमूने चित्र/फ्लैस कार्ड, ध्वनी एवं दृश्य सामग्री , कठपुतली चार्टस, साफ्टवेयर पैकेजेस खेल इत्यादि सामग्री का प्रयोग शिक्षक संग्रह के दौरान करता है ।

यह साहित्य में दिया गया है शिक्षण सामग्री एवं अन्य बहुइन्द्रिय पठन–पाठन को बढ़ावा देते है जैसें कि विद्यार्थी सामग्री को अपने आप प्रयोग करते है । जिससे शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच परस्पर सम्पर्क उत्पन्न होता है । इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को एक अच्छा अनुभव होता है जिससे उनकी रूची केन्द्रित होती है । इसलिये एक शिक्षक को नाना प्रकार की क्रियाओं की योजना सामग्री के प्रयोग सें करनी पडती है । जिससे सीखने का उचित वातावरण बनता है ।

शिक्षा का वृहद रूप से तात्पर्य शिक्षार्थियों को वातावरण तथा अवसर प्रदान करना हैं जिससे वे ज्ञात तथा कौशलों का संग्रह कर सकें तथा इन कौशलों का दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकें जिससे वे समाज में आत्मनिर्भर बन सके । यह उद्देश्य विकलांग तथा गैर विकलांग दोनों के लिये लागु होता है । लेकिन विशेष प्रशिक्षित ,शिक्षक, विशेष पाठ्यक्रम विधियाँ तथा सामग्री निर्देश तथा भौक्षणिक वातावरण विकलांग बच्चों की अधिकतम सीख के लिये आवश्यक है ।

विकलांगता के कारण उन्हें गामक संपेक्षण शिक्षा, शैक्षणिक सीख तथा रोजगार की समस्यायें होती है तकनीकी विकास एवं उद्‌भव से ये उपकरण यंत्र शिक्षण सामग्री मूल्यांकन उपकरण के कारण समस्याओं के कारण समस्याओं को कम करने तथा विकलांगता को रोकना संभव हो सका हैं ।

उदाहरणार्थ – कम्प्युटर व्हील चेयर्स, चलने फिरने के आवश्यक उपकरण टकिंग,टेलिफोन्स, साफ्टवेयर, पर निर्देशात्मक कार्यक्रम तथा अनुकूलित कम्प्युटर संबंधी उपकरण का विकास किया गया है तथा इनका प्रयोग भी विकलांगों के लिये किया जा रहा है लेकिन दुर्भाग्यवश ये उपकरण एवं सुविधाएँ कुछ ही विकलांग खरीद एवं उपयोग कर सकते है सरकारी तथा गैरसरकारी संगठनों द्वारा यह प्रयास चल रहा है कि ये तंत्र उपकरण सभी विकलांगों तक पहुंचा सके ।

**संचार के प्रमुख साधन –**

आज अधिकाधिक सूचनाएँ किसी भी राष्ट्र के विकास का मेरूदण्ड बन गई है कतिपय उपग्रह ,अन्य ग्रहों तथा उपग्रहों की भाँति केवल आकाश में विचरण करने वाले ही नही होते अपितु सूचनाओं के आदान प्रदान करने में भी सहायक होते है ।

भारतवर्ष में सर्वप्रथम संचार उपग्रह एपल द्वारा दूरसंचार तथा डाटा संचार के अनेक प्रयोग किये गये । तत्पश्चात बहुद्देशीय उपग्रह इनसेट के आधार पर मौसम की विस्तृत जानकारी संबंधित तथा देशव्यापी दूरदर्शन एवं दूरसंचार के अंतरिक्ष कार्यक्रम तैयार किये गये जिससे दूर–दराज तक सम्पर्क कर उन्हें विकास की गति में सहभागी बनाया जा सके ।

वर्तमान में विश्वव्यापी वेब के आगमन से हिन्दुस्तान में प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक की शिक्षा घर बैठे सुलभ होने लगी है दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में भारतवर्ष में 70 के दशक में साईट अर्थात सेटेलाईट इंन्स्ट्राक्शनल टेलिविजन एक्सपेरिमेन्ट

प्रारम्भ हुआ । उपग्रह द्वारा विद्यार्थियों को विशेषतः देश के दूर दराज इलाकों में रहने वाले लोगों को शिक्षित करने के उद्देश्य से प्रयास प्रारम्भ किये गये । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनेक कार्यक्रम बनाये गये इसमे छात्र शिक्षक को देख सुन तो सकते थे किन्तु उनसे स्वयं बात करके अपनी शंकाओं व जिज्ञासाओं का समाधान नहीं कर सकते थे । कुछ वर्षो बाद अन्तरिक्ष वैज्ञानिकों ने इस कमी को पूरा कर डाला । नब्बे का दशक प्रारम्भ होते ही उन्होंने एक  एसा तरीका खोज निकाला जिसमे छात्र,अध्यापक के सामने अपनी शंकाएँ रख सकते है और इसी तरह अध्यापक अपने शिक्षण की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए छात्र से प्रश्न पूछ सकते हैं । इस  प्रकार संपूर्ण देश को एक कक्षा कक्ष में बदले जाने का सपना साकार हो गया । इन्टरनेट में इस देशव्यापी नेटवर्क को विश्वस्तरीय बनाकर इसकी सीमाओं को भूमण्डलीय आकार दे दिया ।

**संचार के साधनों का महत्व–**

इसी तरह दूरदर्शन पर पहले से रिकार्ड किये हुए अथवा जीवान्त प्रसारण के रूप में व्याख्यान उपलब्ध होने लगे है टेलिक्रॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से किसी देश के किसी शहर में बैठा अनुदेशक अपना व्याख्यान दुनिया के छात्रों के लिये दे सकते हैं वेब आधारित शिक्षा के विभिन्न सहायक तत्व जैसे पुनरावृत्ति, आकलन, मूल्यांकन ,आदि शिक्षार्थी को जब चाहे तब उपलब्ध होते है । इस प्रकार यह मॉडल हाईब्रिक शिक्षण का है । भविष्य में कार्यालय भी तार रहित प्रौद्योगिकी से सुसज्जित होगे जिन्हें युनिटेल की संज्ञा दी जा रही है मेज पर या उसके भीतर जो भी चीजे होगी वे सभी के लिये समान रूप से उपलब्ध होंगी । उन्हे वर्कस्टेशन अर्थात कार्यस्थल का नाम दिया गया है । कर्मचारी मोबाईल फोनों और बेटरी से चलने वाले नोट बुक कम्प्युटरों के जरिये एक दूसरे से सम्पर्क में रहेंगे ˙ यह कुछ सूचना प्रौद्योगिकी सस्थाओं में हो रही है ।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह निरंतर अपने विचारों का आदान–प्रदान करता रहता है उसकी विभिन्न ज्ञानेन्द्रियाँ इस कार्य में उसे सहायता प्रदान करती है अनुभव एवं अनुभूतियों को एकत्रित करना और दूसरों के साथ वाँटना यही  प्रक्रिया सम्प्रेषण  कहलाती है ।

ई–मेल द्वारा एक ही क्षण में एक ही नहीं सैकड़ो –हजारों संदेश भेजे जा सकते है । और एक संदेश में शब्दों की कोई सीमा नहीं है चित्र भी भेजे जा सकते है ।

इस समय इन्टरनेट का सर्वाधिक उपयोग ई मेल के रूप में ही हो रहा है यह तंत्र सामाजिक सम्बन्धों का वाहक बन गया है ।

आस्ट्रेलिया की रोबोट्रान कंपनी ने नेत्रहीनों के लिये एक विशेष ब्रेललिपि आधारित ''की'' बोर्ड तैयार किया है जिसकी सहायता से वे कम्प्युटर पर सभी कार्य सामान्य व्यक्तियों की तरह कर सकते है । इस की बोर्ड के साथ एक ध्वनि प्रणाली भी जुड़ी हुई है । जैसे ही ''की'' बोर्ड पर कार्य प्रारम्भ किया जाता है कि उसमे उत्पन्न ध्वनि से ज्ञात हो जाता है कि ऑपरेटर ने कहीं गलती तो नहीं की है इसे पर्किन्सन ब्रेल ''की'' बोर्ड कहते है । मुम्बई के नेत्रहीनों के राष्ट्रीय संगठन इण्डीयन एसोसिऐशन फॉर द विजुवली हेण्डीकेप विद्यार्थी विद्यापीठ भवन चर्च गेट मुम्बई ने इस तरह के ''की'' बोर्ड का उपयोग प्रारम्भ कर दिया है । इसके अतिरिक्त जो लोग ब्रेललिपी से परिचित नही है वे भी सामान्य की बोर्ड तथा स्क्रीन रिडींग साफ्टवेयर की सहायता से कम्प्युटर में दक्षता प्राप्त कर सकते है ।

**टेली कान्फ्रेसिंग (दूर शिक्षण एवं दूर सम्मेलन)**

अप्रेल 1998 में इण्डीयन इन्सीटियुट ऑफ टेकनोलॉजी और ए टी एण्ड टी के संयुक्त रूप सें दूरस्थ अध्ययन परीक्षण के सफलतापूर्वक पूर्ण होने की घोषणा की थी इन्होंने भारत के प्रथम टेली टीचिंग तथा दूरस्थ शिक्षा अभ्यास क्रम को स्थापित किया तथा नई दिल्ली स्थित आई आई टी शैक्षिक प्रौद्योगिकी के केन्द्र ने दूरस्थ अध्ययन की विभिन्न पद्धतियों के प्रभाव का अध्ययन किया गया । इससे शिक्षण पद्धति में बदलाव आया ।

इस तकनीकी का प्रयोग क्षैत्रीय सीमाओं के पार विद्यार्थी शिक्षक तथा शैक्षिक संस्थाओं को आपस में जोड़ने के लिये होता है दूरस्थ अध्यन परीक्षण में वीडियो टेली, टिचिंग, वीडियों कान्फ्रेसिंग केबल सिम्युलेटेड विडियों कान्फ्रेन्सिंग तथा दूरस्थ अध्ययन तकनीकी के अभ्यास क्रम के लिये इन्टरनेट का उपयोग सम्मिलित है ।

दूरभाष, टेलीग्राम, दूरसंचार, दूरसंवेगी, उपग्रह दूरदर्शन आदि शब्दों ने विश्व के लोगों के बीच संवाद दूरियां कम करने में जो योगदान दिया है वह मनुष्य की दूरदर्शिता व तकनीक योग्यता के सम्मिलत प्रयासों से पूरी दुनियां को एक सूत्र में बांधने का एक उतकृष्ट उदाहरण है अब यही 'दूर' टेली शब्द चिकित्सा के क्षेत्र में भी प्रवेश कर चुका है ।

**संचार साधनों की बढ़ति निर्भरता –**

वर्तमान युग में अपने और संसार के प्रति लोगों की सोच, संस्कार, रीति रिवाजों और दृष्टिकोणों पर संचार माध्यमों के प्रभाव का इंकार नहीं किया जा सकता । आपकों अवश्य याद होगा कि हमने लोगों पर सामुहिक संचार माध्यमों के प्रभाव की विभिन्न शैलियों के बारे में संक्षेप में चर्चा की थी और प्रभाव की दृष्टि से टेलिफोन ,उपग्रह, चेनलों और इन्टरनेट को अग्रिम पक्ति में रखा था किन्तु बहुत से लोगों का मानना है कि वर्तमान समय में संचार माध्यमों की मूल गतिविधियां जीवन शैली तथा उसके प्रति लोगों के विचार को परिवर्तित करने पर केन्द्रित है और विश्व के अधिकांश स्थानों पर मीडिया के कार्यक्रम तैयार करने वालों का हर संभव यहीं प्रयास होता है कि कार्यक्रमों को जीवनशैली पर केन्द्रित रखें । इन कार्यक्रमों से व्यक्ति जीवन की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी बातों के बारे में बात की जाती है । आज के कार्यक्रम में हम जीवन शैली के परिवर्तित हो जाने के कारण उपभोग के मानकों में आने वाले बदलाव पर टेलीविजन के प्रभाव के बारे में चर्चा करेंगे क्योंकि उपभोग नये युग के मनुष्य के व्यवहार में सबसे स्पष्ट दिखाई देने वाली वस्तु है और इसके माध्यम से आज के समाज की सोच को समझा जा सकता है ।

**सामाजिक सम्बन्धों में बदलाव–**

वर्तमान समय में संचार संबंधों में नीतिगत एवं अन्य परिवर्तन प्रायः देखे गये है टेलिविजन प्रयास करता है कि मनुष्य के जीवन की पुनर्रचना में वह वास्तविकताओं का अनुंसरण करता है किंतु जीवन के नऐ काल्पनिक चित्र प्रस्तुत करता है जो उसकी वास्तविकताओं से भिन्न होतें है टी वी केवल इस बात का प्रयास करता है कि वह जिस संसार का चित्रण करता है वह विश्वसनीय दिखाई दे और दर्शक यह मान ले कि वही वास्तविक संसार है । टेलीविजन का लक्ष्य वे लोग होते है जो बिना किसी प्रतिरोधके संचार माध्यमों के साथ हो जाते है। बल्की उसके साथ अपनाइयत काभी प्ररदर्शन करते है। यहीं वह समय होता है जब समाचार और चर्चा जैसे गंभीर कार्यक्रमों के विपरीत श्रखलाओं का संदेश अधिक प्रभावी होता है और देखने वाले की जीवन शैली बदल देता है ।

जीवन शैली में बदलाव डालने वाले तत्वों में संस्कृति की भूमिका भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है इस संबंध में संस्कृति उपभोगों की वस्तुओं के बारे में लोगों की पसंद शैली पहचान और उन्हें स्वीकार करने की क्षमता पर सीधा प्रभाव डालती है और जीवन शैली को पूर्णतः भिन्न बना सकती है । इस बीच टेलीविजन सबसे महत्वपूर्ण तत्व के रूप

में विभिन्न आयु के व्यवहार को बनाता बिगाड़ता है । बहुत से परिवार अपने प्रतिदिन के समय का एक भाग टीवी देखकर बिताते है और मनोरंजन के साथ ही उनके समाचारों और सूचनाओं से भी लाभ उठाते है इस प्रकार टी वी श्रृखलाएं भी बहुत से लोगों का मनोंरंजन करते हुए रिक्त समय को भर देती हैं और इन्हें निरन्तर टी वी के सामने बैठने पर बाध्य करती है ।

जर्मनी के प्रख्यात समाजशास्त्री हर्बट मारकोजे का कहना है कि संचार मीडिया के प्रचार के परिणाम स्वरूप सामने आने वाला उपभाग, मनुष्यों मे द्वितीय न्रवत्ति उत्पन्न करता है और उसे पहले से अधिक समाज में प्रचलित हित साधनों के वातावरण पर निर्भर कर देता है । विभिन्न वस्तुओं का उपभोग और इन्हें निरन्तर बदलते रहना जो वस्तुतः उस पर थोपी गई होती है, उसे जीवन को खोने की सीमा तक भी ले जा सकता है । खतरे की कल्पना से बढ़ कर उसके निकट कर सकता है पश्चिम समाज की वर्तमान स्थिति इस दावे को बल प्रदान करती है जीवन स्तर के ऊपर जाने के बाद अल्प ही लोग अपनी खरीदारी की क्षमता पर ध्यान देते है इस बीच टेलिविजन कार्यक्रम विशेषकर धारावाहिक धनाड्य लोगों के जीवन का चित्रण करके हर सामाजिक व आर्थिक स्तर के परिवारों तक इन्हें पहुँचा देते है ।

**संचार के सकारात्मक पक्ष –**

विश्व अंतर जाल की ऐसी उपलब्धि है जिसने सूचना तकनीकि के क्षेत्र में असीमित संभावनाओं के द्वार खोल दिये है । इन्टरनेट की संकल्पना ने गागर में सागर को चरितार्थ कर दिया है । ज्ञान विज्ञान, साहित्य सूचना, मनोंरंजन और विविध विषयों पर विस्तृत तथ्य क्षणमात्र में नजरों के सामने उपस्थित हो जाते है अस्सी के दशक से आकार लेता 90 के दशक तक आते आते इस तकनीक ने सूचना तकनीक के पटल पर अनेक अभिनव आयामों को स्थापित कर दिया । मानवीय कल्पनाओं को नई ऊँचाईयों पर ले जाता इन्टरनेट आज बड़े वर्ग के दैनिक जीवन का अविभाज्य और अनिवार्य अंग बन गया है ।

विश्व अंतरजाल पर धटित होने वाली गतिविधियों ने आधुनिक विश्व समुदाय में एक नवीन संस्कृतिक चेतना का संचार किया है जिस प्रकार किसी भी विचार धारा या उपलब्धि के अनेक आयाम होते है उसी तरह इन्टरनेट के भी धनात्मक और ऋणात्मक आयाम है । इसमें कोई मतभेद नहीं हो सकता है कि इस तकनीक के

आविर्भाव और चरणबद्ध विकास के साथ विश्व समुदाय में अनेक स्तरों पर बौद्धिक सामग्रियों का विनिमय अत्यन्त सहज एवं सुगम हो गया । वैचारिक व्यापारिक दोनो ही स्तरों पर आदान प्रदान की प्रक्रिया ने एक ऐसी सामाजिक चेतना का विकास किया गया जिसके सात समंदर की दूरियों को पाट कर दुनिया को मुट्ठी में कर लेने का सपना साकार सा कर दिया । अनेकानेक प्रश्नों के समाधान का कुंजी पटल पर बस एक आधात में उपलब्ध हो जाना, किसी इन्द्रजाल का आभास देता है और हम विज्ञान की क्षमताओं के आगे नतमस्तक हो जाते है इंटरनेट के वित्तीय एवं वाणिज्यिक प्रयोगों ने बाजार की मूलभूत अभिधारणाओं को नया जामा पहना दिया है ई कामर्स और ई बाजार की दिनप्रतिदिन बढ़ती लोकप्रियता ने सेवा प्रदाताओं और उपभोक्ताओं के बीच की दूरी को एक आधात से मिटा दिया है । ई बैकिग ने बैकिंग सेवाओं को खाताध ाारकों के द्वार तक पहुँचाने में अहम भूमिका निभाई है रेल आरक्षण हो या बिजली ,पानी और टेलीफोन के बिल का भुगतान सभी कार्य घर बैठे अत्यन्त सुगमता से करना संभव हो गया ज्ञान पिपासुओं के अंतरजाल पर उपलब्ध विविध पाठ्य सामग्री, कला और साहित्य प्रेमियों के लिये मनवान्छित दृश्य एवं श्रव्य कृतियों के वृहद संकलन ने इसे बुद्धिजीविओं की सहचरी की संज्ञा दे दी है ।

टी.वी के बढ़ते मिडिया का समाज पर अपना ही प्रभाव है संचार साधनों का जन–जीवन पर प्रायः नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रभाव देखे जा सकते है ।
वर्तमान समय में संचार का सबसे सुलभ साधन टेलिविजन है जितने मनोरंजन के उतने ही समाचार चैनल है ।

मिडिया के द्वारा लोगों को शिक्षा मिलती है वे संचार साधनों के द्वारा स्वास्थ्य, वातावरण, दूसरी अन्य जानकारी प्राप्त कर सकने में कठिनाई नही होती ।
संचार साधनों के द्वारा आम नागरिक को अपनी योग्यता को प्रर्दशित करने का अवसर मिलता है । वर्तमान संचार प्रणाली द्वारा देश, दुनिया के अलग–अलग प्रान्त धर्म के लोग एक साथ अपनी बात अपनी प्रतिभानुसार दिखा सकते है ।
मिडिया के माध्यम से दुनिया की किसी भी कौने की धटना को हम तुरंत देख सकते है । सभी विषयों के लिये अलग–अलग चैनल हो गये है हम अपने मन के हिसाब से जब चाहे जो देख सकते है बच्चों के लिये, युवाओं के लिये, बुजुर्गो के लिये

अलग–अलग चैनल होते है जिससे जो चाहे वह देख सकते है । सभी भाषाओं में प्रदर्शित किये जाते है । लेटेस्ट न्युज हेतु इन्टरनेट का सहारा ले सकते है ।

सोशल मिडिया आजकल काफी प्रचलित है जिसके द्वारा अनेकों लोग जुड़े है । संचार साधनों के द्वारा हम भ्रष्टाचार पर लगाम लगा सकते है । टी वी पर ढेरो चैनल्स है जिनके द्वारा दूर–दराज की खबरे प्राप्त कर सकते है ।

भविष्य के प्रति सचेत –

भविष्य के प्रति सचेत असीमित संभावनाओं को अपने गर्भ मे छिपाये इस संचार एवं सूचना तकनीक का सकारात्मकता तथा सृजनात्मकता से परिपूर्ण अनुप्रयोग सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण सामाजिक दायित्व बन गया है । अभिभावकों को जागरूकता का परिचय देना पड़ेगा और बच्चों को इसके कुप्रभाव से बचाने के लिये सर्तक होना पड़ेगा । समय की मांग है कि अन्तजाल पर घटित हो रही अवांन्छित गतिविधियों पर यथाशीध्र अंकुश लगाया जाए और इसके दुष्प्रयोग को रोकने के लिये कठोर वैधानिक प्रावधान लाये जाएं । भारत जैसे विकासशील देश के लिये यह आवश्यक है कि इन्टरनेट की सुविधा का प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों तक शीघ्रता से हो और ई गवर्नेस की संकल्पना को मजबूत आधार मिल सके । यदि इन्टरनेट सेवा के स्हाय पक्ष को उपयोगकर्ता अपनी सकारात्मक और रचनात्मक सोच से दूर कर सके तथा भविष्य की पिढ़ियों के लिये विज्ञान के इस वरदान को विभिन्न सार्थक उपादानों से सुसज्जित कर सके तो निश्चित रूप से भविष्य का वैश्विक समाज प्रगति के नये आयामों को स्थापित करेंगा ।

संचार माध्यमों का नकारात्मक पक्ष –

आधुनिकता की दौड़ में मानव समाज एवं नैतिक स्तरों पर उत्थान का पर्याय बनता जा रहा है परंतु नकारात्मक और विकृत मानसिकता के पोषक तत्वों द्वारा इस माध्यम का दुरूपयोग भी बढ़ता जा रहा है । पीत पत्रकारिता के अनुसार अश्लीलता को परोसती साइटें, हैकिंग के दुष्परिणाम हो या गोपनीय सूचनाओं की चोरी, इन सब गतिविधियों ने अंतर जाल में प्रयोगकर्ता को उलझाकर रख दिया है बढ़ते अपराध प्रकरणों में जालसाजी और धोखाधड़ी के मामलों ने ग्राहकों और सेवा प्रदाताओं दोनों को ही सावधान कर दिया है पोर्न विडियों और पाठ्य सामग्री की सहज एवं सुलभ उपलब्ाता ने सांस्कृतिक प्रदूषण की हदों को पार कर दिया है जिसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव

बाल, किशोर एवं युवा मानसिकता पर दृष्टिगोचर हो रहा है । नग्नता और उन्मुक्त यौन संबंधों की वकालात करते साईट्स समाज की नैतिक अभिधारणाओं पर प्रहार कर रहे है । इस समस्या के प्रति हमें जागरूक होना पड़ेगा । अन्यथा संबंधों की मर्यादा, आबरू, इज्जत जैसे शब्दों का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा नैतिकता का पतन इन्टरनेट सर्फिंग की तल के शिकार युवा चैटिंग, फेस बुक सरीखे सोशल मीडिया के अनुप्रयोग से नकारात्मकता का क्रास भी बनते जा रहे है जिसका परिणाम अनेक युवाओं द्वारा किया जा रहा रहे आत्महत्याओं के रूप में सामने आया है ।

आजकल बढ़ते चेनलो के साथ एक चेनल दूसरे चेनल का प्रतिद्वदी हो गया है टी आर पी की होड़ में ये प्रोग्राम की क्वालिटी पर ध्यान नहीं देते है

आजकल टी.वी मे कार्यक्रम से अधिक विज्ञापन प्रसारित किये जाते है कुछ भी दिखाने के लिये फूहड़ता परोसी जाती है । अनेकों बार ऐसे प्रोग्राम आते है जो हम संयुक्त रूप से परिवार के साथ नहीं देख सकते है । संचार साधनों के माध्यम से हमारी दिनचर्या में बदलाव आ गया है । अधिक समय लोग मास मिडिया, सोशल मिडिया में अपना समय बर्बाद करते है । संचार साधनों के द्वारा बच्चे एवं विद्यार्थियों पर अत्याधिक प्रभाव पढ़ रहा है क्योकि वे अपना अत्याधिक समय संचार के साधनों में लगाते है ।

आजकल मिडिया में सच्चाई कम तथा झूठ का सहारा ज्यादा लिया जाता है अपनी बात को दिखाने के लिये मिर्च–मसाला बनाकर न्यूज बनाते है ।

कई बार व्यक्ति विशेष के बारे गलत अफवाह फैलाकर उसकी प्रतिश्ठा खराब करते है । सामाजिक संबधों का हनन हो रहा है । पारिवारिक वार्तालाप में कमी हो रही है । बच्चों में नैतिक मूल्यों का ह्रास । अपराधिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है । बच्चों का बचपन खत्म हो रहा है ।

**निष्कर्ष–**

आज हम देखते है कि हर सिक्के के दो पहलु होते है सकारात्मक एवं नकारात्मक । अत यह हम पर निर्भर करता है कि हम किस पहलु को महत्व देते है । संचार साधनों के माध्यम से हम आज विकास की ओर बढ़ रहे है जहां काम महिनो, वर्शो में होता था वही काम वर्तमान में अल्प समय में हो सकता है । शिक्षा, व्यापार , बैंक किसी भी क्षेत्र में आज संचार साधनों का महत्व बढ़ गया है मानव जीवन का प्रत्येक पक्ष वैज्ञानिक खोजों एवं आविष्कारों से प्रभावित है । जहां हम देखते है कि इसके महत्व के

साथ–साथ इसमें कुछ नकारात्मक पहलु भी है आज मनुष्य इतना व्यस्त हो गया है कि उसे आपने लिये भी समय नहीं है आज सामाजिक संबंधों को बहुत छोटा कर दिया गया है बच्चे अपने अभिभावकों के पास बैठना नहीं चाहते है। वे सारा दिन टी.वी मोबाईल आदि में लगे रहते है । आज हम साधन सम्पन्न तो हो गये है परन्तु हमे मानसिक शान्ति का अभाव है हमारी आत्मा मरती जा रही है । आज देश दिव्यागों की संख्या बढ़ती जा रही है तथा वे भी समाज के साथ संचार साधनों के माध्यम से कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे है तथा उन्हे हम उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं । संचार साधनों ने दिव्यागों को आत्मनिर्भर बनाया है ।

❐

**सन्दर्भ –**


1. *एलन डवाइट एण्ड रेयन के.ए.माइको (टीचिंग मास.यु.एस.ए.) ऐडीशन वेसले 1969.*
2. *आप्टार जे एम : द न्यु टेक्नोलॉजी ऑफ एज्युकेशन ' मेकमिलन एण्ड कम्पी लिमिटेड लन्दर मेलबॉर्न, टोरेन्टो 1968*
3. *वाजपेयी ए.सी.एण्ड लीड होम,जे.एफ,आसकक्टस ऑफ एज्युकेशन टेक्नोलॉजी वाल्युम 6 पिटमेन पब्लिशिंग कंपनी न्युयार्क ।*
4. *बी.अर्ड : टींचिंग एण्ड लर्निंग इन हायर एज्युकेशन ,पेंग्यूकेशन बुक्स' 625 मेडीसन एवेन्यु , न्युयार्क 1976.*
5. *क्लेटन थॉमस ई : टीचिंग एण्ड लर्निंग साईक्लोजिकल पर्स प्रेक्टिस हाल, लन्दन ।*
6. *जॉन लीडहमः एज्युकेशनल टेक्नोलॉजी ए फर्स्ट आउटलुक पिटमेन पब्लिशिंग, बेध ।*
7. *कुलश्रेष्ठ एस पी एज्यूकेशनल साइकोलॉजी आर लाल डिपो मेरठ 1977.*
8. *मोहन्ती,जगन्नाथ : एज्युकेशनल टेक्नालॉजी, दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन्स, एफ – 159 राजौरी गार्डन नईदिल्ली ।*
9. *स्किनर,बी.एफ. ' टेक्नोलॉजी ऑफ टीचिंग एज्युकेशनल डिवीजन' मेरेडिट कार्पोरेशन, न्युयार्क ।*
10. *स्किनर ,बी.एफ : एज्युकेशनल साइक्लोलॉजी ।*

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 94–96* ***ISSN 0974 -1100***

# सूचना संचार प्रौद्योगिकी क वर्तमान परिदृश्य

**मसर्रत यूसुफ खान**

दो सदियों का संधिकाल सूचना–संचार प्रौद्योगिकी का दौर है, जहां प्रायः अनियंत्रित तथा तीव्र गति से हो रहे परिवर्तनों ने जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है । मीडिया इसका अपवाद नहीं है । मीडिया को जहां मानवीय संवेदना और जीवन मूल्यों का संवाहक तथा समाज, संस्कृति और मानव सभ्यता का दर्पण माना जा सकता है, वहीं प्राद्योगिकी की विषय वस्तु मानवीय संवेदना निरपेक्ष है । सूचना संचार प्रौद्योगिकी ने मीडिया का तकनीकी क्षमता से लेस कर इसकी सृजनात्मकता को कल्पना के पंख लगा दिये हैं । इसे विराट स्वरूप प्रदान कर सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान बना दिया है । मीडिया का नया स्वरूप अपने विस्तृत कवरेज तथा तकनीक के प्रभाव से समाज के समक्ष गंभीर चुनौती प्रस्तुत कर रहा है । इलेक्ट्रॉनिक्स तथा कम्प्युटर तकनीक के विकास ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सर्वाधिक लोकप्रिय स्वरूप टेलीविजन को साक्षरता से परे व्यापक पहुंच (reach) प्रदान की है । टेलीविजन ने पाठक को 'संजय' की दृष्टि प्रदान कर उसे दर्शक में बदल दिया है । कैमरे की आंख (लैंस) की क्षमता तथा कम्प्यूटर तकनीक की शक्ति ने टेलीविजन के प्रभाव में असाधारण वृद्धि की है ।

उपभोक्तावाद तथा व्यावसायिकता के चलते इस सशक्त मीडिया के समक्ष जनहित से जुड़े मुद्दे गौण हो गये हैं । वही सामाजिक सरोकार तथा जनचेतना उत्पन्न करने, साहित्यिक तथा बौद्धिक विकास के कार्यक्रमों का स्थान स्तरहीन कॉमेडी, तथाकथित रियलिटी शो, अप संस्कृति दर्शाते सीरियल के प्रसारणों ने ले लिया है । मीडिया के कन्टेन्ट का चयन उसकी कमर्शियल ब्रेक में कमाऊ विज्ञापन दिलाने की

क्षमता पर निर्भर है, तथा टी.आर.पी. बढ़ाना टीवी के समक्ष एकमात्र लक्ष्य रह गया है । इसके कारण मीडिया का यह स्वरूप सूचना, शिक्षा तथा मनोरंजन के लक्ष्य से पथभ्रष्ट हो गया है ।

ब्रेकिंग न्यूज, स्टिंग ऑपरेशन, रियलिटी शो, क्राइम रिपोर्ट जैसे कार्यक्रमों के द्वारा टीवी चैनलों ने दर्शकों में उत्तेजना की जो भूख जगा दी है, वह प्रिन्ट मीडिया से शांत करना लगभग असंभव है । कभी साहित्य की रचनाऐं लोगों को भाषा सिखने के लिये प्रेरणा का स्त्रोत होती थीं वहीं चैनलों द्वारा सार्थक संवाद सहित, विश्लेषण तथा चिन्तन विहीन कार्यक्रमों की 'फास्टफूड' के सामान प्रस्तुत कर दर्शकों की भूमिका निष्क्रिय सुग्राहक तक सीमित कर दी है । इलेक्ट्रॉनिक युग के इस शक्तिशाली अवतार की 'इडियट बॉक्स' बना देना वर्तमान समय की विडंबना ही कहा जा सकता है । न्यूज चैनल 24 घंटे अपने प्रसारण में संवेदना रहित सूचना प्रदान करने के स्त्रोत बन गये हैं जहां क्रिकेट के स्कोर तथा दुर्घटना में मृतकों के आंकडे में ज्यादा फर्क नहीं होता । निजी चैनलों के अंधी प्रतिस्पर्धा में कभी विश्वसनीयता की प्रतीक उद्देश्यपूर्ण, सार्थक व स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने गुणवत्ता लिये कार्यक्रमों के लिये मान्य व लोकप्रिय दूरदर्शन का चैनलों के घमासान में नेपथ्य में जाना एक खेदजनक घटना है ।

इलेक्ट्रॉनिक तथा कम्प्युटर क्रांति के संयोग ने मीडिया के नये अवतार 'इन्टरनेट' को जन्म दिया । इन्टरनेट का विस्तार 'सायबर स्पेस' राज्यों के स्वामित्व व नियंत्रण से मुक्त है, जहां राष्ट्रीयता व भौगोलिक विभाजक रेखाऐं नहीं हैं तथा मीडिया के इस अनुपम स्वरूप ने व्यक्ति को बगैर सेन्सरशिप के अभिव्यक्ति की असीमित अधिकार व स्वतंत्रता प्रदान कर दी है ।

इन्टरनेट के मीडिया के स्वरूप ने उसे सकारात्मक उपयोग से 'सृजन' के असीमित अवसर उपलब्ध कराये हैं, वहीं इस माध्यम का दुरूपयोग, पौर्नोग्राफी, व्यक्तिगत निजता व राष्ट्र की गोपनियता कॉपीराइट अधिकार का हनन तथा अतिवादियों द्वारा सूचना तंत्र को विफल करते कुचेष्टा द्वारा राष्ट्र की रक्षा व्यवस्था को चुनौती का माध्यम बनकर उभरा है ।

इन्टरनेट को जहां व्यक्तिगत संचार का माध्यम माना जाता था अर्थात् व्यक्ति इस माध्यम से विश्व के किसी भी स्थान पर मौजूद अन्य कम्प्यूटर से सम्पर्क स्थापित कर उसकी सामग्री को प्राप्त कर सकता है । इन्टरनेट कनेक्शन की बढ़ती संख्या, तथा तकनीकी के निरन्तर विकास ने इसे मास मीडिया का सशक्त रूप प्रदान किया है । जहां कोई भी व्यक्ति ब्लॉग के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त कर सकता है, वेबसाईट के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व की श्रृव्य, दृश्य तथा प्रकाशित सामग्री जन

साधारण द्वारा सहज ही चंद सैकण्ड में हासिल की जा सकती है । कोई भी व्यक्ति अपनी रचना को बगैर रोकटोक के इन्टरनेट के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित तथा प्रकाशित करने को स्वतंत्र है ।

इन्टरनेट, जीपीएस नेगीवेशन, मल्टीमीडिया, ब्लूटूथ तथा रेडियों की क्षमता से युक्त मोबाइल फोन संचार मात्र का साधन नहीं रह गया । इसको 7 वां मीडिया अथवा 'पर्सनल मीडिया' कहा जाता है जिसके जन साधार में विस्तृत पहुंच तथा reach and peretration को देखते हुये इस सशक्त मीडिया के रूप में असीमित अवसर के रूप में देखा जा रहा है । एक अन्य विशेषता इसके हर समय चालू तथा तैयार अवस्था ने इसे विशिष्ट महत्व प्रदान किया है । सूचना–संचार प्राद्यौगिकी के विकास ने मीडिया को अकल्पनीय विस्तार प्रदान कर असाधारण क्षमता से भर दिया है । जो मानव समाज को गंभीर चुनौतियां प्रस्तुत कर रहा है । इन्टरनेट क्रांति तथा डाइरेक्ट टू ओम (डीटीएच) प्रसारण तकनीक के चलते मीडया कन्टेन्ट का सेन्सरशिप द्वारा नियंत्रण तथा विनियमन कितना व्यावहारिक हो सकेगा ।

क्या मीडिया को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के रूप में व्यैक्तिक निजता का अतिक्रमण, राज्य की गोपनीयता के अधिकार का हनन तथा राष्ट्र की प्रभु सम्पन्नता के लिये खतरे का माध्यम बनने से रोका जाना संभव हो सकेगा । मुक्त अर्थव्यवस्था की नीति अपनाये जाने के फलस्वरूप निजी तथा विदेशी स्वामित्व वाले मीडिया को उनके व्यावसायिक हितों के संरक्षण तथा सूचना, शिक्षा तथा जनमत निर्माण के उत्तरदायित्व के बीच तालमेल तथा संतुलन बनाने की चुनौती एक महत्वपूर्ण प्रश्न है ।

मास मीडिया अथवा मास प्रोपेगंडा का साधन, स्वस्थ, सभ्य व सुसंस्कृत समाज का निर्माण करना अथवा वर्चुअल रियलिटी की मायावी दुनिया के पोर्नोग्राफी, ऑनलाईन गेम्स, लॉटरी द्वारा बौद्धिक विलास का साधन बन उसे गैर जिम्मेदार, नागरिक का समूह में बदलने का साधन बनने की अनुमति दिया जाना मानव समाज के हित में होगा ? ऐसे प्रश्न हैं जिनका त्वरित तथा उचित समाधान आवश्यक है । भविष्य के समाज की दिशा तथा दशा निर्धारण करने में मीडिया की भूमिका वर्तमान समय की गंभीर चुनौती है । यदि प्रोद्यौगिकी युक्त का संचालन व नियंत्रण कुछ चुनिंदा मस्तिष्क के द्वारा तथा इनकी और महत्वकांक्षाओं द्वारा मानव समाज का पराभव वर्तमान सदी की सबसे बड़ी विडंबना होगी ।

❐

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 97–103* ***ISSN 0974 -1100***

# Positive and Negative Effects of Social Media on Society

**Dr.Rajesh Sakorikar**,

Social media sites have taken over our lives. It's hard to even imagine that 10 years ago there was no Facebook or Twitter! 15 years ago people were actually waiting to hear from each other because even email wasn't that common.

How did social media actually influenced our life and the society in general? In my opinion it has a positive impact .Social media for all the widening of the world we live in, and easy communicate around the world.

social media has grown tremendously in the last few years. From 2006 onwards the growth rate is unexpectedly very high. Specially Facebook and Twitter have grown much faster and captured millions of users in just a few years. The way technology is growing, it is obvious that more and more people are going to grasp its benefits. It has brought a lot of advantages for the society. From progressed nations to under-developed countries, every nation is utilizing the power of social media to enhance life and use it for the betterness of the people.

Just like a coin have a both side the social media have also provided the negative and positive ways for the people. It is all about the usage and getting things done positively by using the power of social media. It is in the hands of the user to use its advantage. But willingly or unwillingly it can still have negative

impacts on the users. I am going to write both the negativity and positivity of the social media for the society.

Let's start with thenegativity first, because thepositivity are numerous and everything is perceived to have a positive effect unless it is used negatively.

**Negativity of Social Media for the society**

One of the negative effect of social media or network is it leads to addiction. Spending countless hours on the social sites can divert the focus and attention from a particular task. It lowers the motivational level of the people, especially of the teenagers and students. They mainly rely on technology and the internet instead of learning the practical knowledge and expertise of the everyday life.Kids can be greatly affected by these social networking sites if they are allowed to use them. The reason is that sometimes people share photos on social media that contains violence and sex, which can damage the behavior of kids and teenagers. It put the negative impact on overall society as these kids and teenagers involve themselves in crime related activities.Another downside of the social media is that the user shares too much information which may pose threats to them. Even with the tight security settings your personal information may leak on the social sites. Downloading your videos or pictures and copying your status is an easy task and can be done within few clicks.

Social media's negative effect on society is lined out in the following way:-

**1:- Cyberbullying –** According to a report most of the children have become victims of the cyberbulling over the past. Since anyone can create a fake account and do anything without being traced, it has become quite easy for anyone to bully on the Internet. Threats, intimidation messages and rumors can be sent to the masses to create discomfort and chaos in the society.

**2: – Hacking –** Personal data and privacy can easily be hacked and shared on the Internet. Which can make financial losses and loss to personal life. Similarly, identity theft is another issue that can give financial losses to anyone by hacking their personal accounts. Several personal twitter and Facebook accounts have been hacked in the past and the hacker had posted materials that have affected the individuals personal lives. This is one of the dangerous disadvantages of the social media and every user is advised to keep their personal data and accounts safe to avoid such accidents.

**3:- Addiction –** The addictive part of the social media is very bad and can disturb personal lives as well. The teenagers are the most affected by the addiction of the social media. They get involved very extensively and are eventually cut off from the society. It can also waste individual time that could have been utilized by productive tasks and activities.

**4:- Fraud and Scams –** Several examples are available where individuals have scammed and commit fraud through the social media.

**5:- Security Issues –** Now a day's security agencies have access to people personal accounts. Which makes the privacy almost compromised. You never know when you are visited by any investigation officer regarding any issue that you mistakenly or unknowingly discussed over the internet.

**6:- Reputation –** Social media can easily ruin someone's reputation just by creating a false story and spreading across the social media. Similarly businesses can also suffer losses due to bad reputation being conveyed over the social media.

**7:- Cheating and Relationship Issues –** Most of the people have used the social media platform to propose and marry each other. However, after some time they turn to be wrong in their decision and part ways. Similarly, couples have cheated each other by showing the fake feelings and incorrect information.

**8:- Health Issues –** The excess usage of social media can also have a negative impact on the health. Since exercise is the key to lose weight, most of the

people get lazy because of the excessive use of social networking sites. Which in result brings disorder in the routine life. This research by discovery will shock you by showing how bad your health can be affected by the use of the social media.

**9:- Social Media causes death –** Not just by using it, but by following the stunts and other crazy stuffs that are shared on the internet. For example bikers doing the unnecessary stunts, people doing the jump over the trains and other life threatening stuffs. For example in this video 14 year old from Mumbai was doing stunts on a running train which caused his death. These types of stunts are performed by the teenagers because of the successful stunts made and shared over the social media.

**10:- Glamorizes Drugs and Alcohol –** One of the disadvantages of the social media is that people start to follow others who are wealthy or drug addicted and share their views and videos on the web. Which eventually inspires others to follow the same and get addicted to the drugs and alcohol.-3

**Positive Effects of Social Media**

Social networks help the businesses in a variety of ways. Traditional marketing mediums such as the radio, TV commercials and print ads are completely obsolete now and demand for thousands of dollars. However, with social media the businesses can connect with their targeted customers for free, the only cost is energy and time. Through Facebook, Twitter, LinkedIn or any other social site you can lower your marketing cost to a significant level. The increasing popularity of social sites like Twitter, Facebook and LinkedIn, social networks has gained attention as the most viable communication choice for the bloggers, article writers and content creators. Social networking sites have opened the opportunity for all the writers and bloggers to connect with their tech savvy clients to share your expertise and articles. Your audience will further share your articles, blog or expertise in their social circle which further enhance your networks of the

followers.Social networks have removed all the communication and interaction barriers, and now one can communicate his/her perception and thoughts over a variety of topics. Students and experts are able to share and communicate with like-minded people and can ask for the input and opinion on a particular topic. Another positive impact of social networking sites is to unite people on a huge platform for the achievement of some specific objective. This is very important to bring the positive change in society.

Social meddia's positivity can bring society on higher position.The clean India movement is burning issue today. The positivity of social media is lined out in the following way :-

**1:- Connectivity –** The first and main advantage of the social media is connectivity. People from anywhere can connect with anyone. Regardless of the location and religion. The beauty of social media is that you can connect with anyone to learn and share your thoughts.

**2:- Education –** Social media has a lot of benefits for the students and teachers. It is very easy to educate from others who are experts and professionals via the social media. You can follow anyone to learn from him/her and enhance your knowledge about any field. Regardless of your location and education background you can educate yourself, without paying for it.

**3:- Help –** You can share your issues with the community to get help and giddiness. Whether it is helping in term of money or in term of advice, you can get it from the community you are connected with.

**4:- Information and Updates –** The main advantage of the social media is that you update yourself from the latest happenings around in the world. Most of the time, Television and print media these days are biased and does not convey the true message. With the help of social media you can get the facts and true information by doing some research.

**5:- Promotion –** Whether you have an offline business or online, you can promote your business to the largest audience. The whole world is open for you, and can promote to them. This makes the businesses profitable and less expensive, because most of the expenses made over a business are for advertising and promotion. This can be decreased by constantly and regularly involving on the social media to connect with the right audience.

**6:- Noble Cause –** Social media can also be used for the noble causes. For example, to promote an NGO, social welfare activities and donations for the needy people. People are using social media for donation for needy people and it can be a quick way to help such people.

**7:- Awareness –** Social media also create awareness and innovate the way people live. It is the social media which has helped people discover new and innovative stuffs that can enhance personal lives. From farmers to teachers, students to lawyers every individual of the society can benefit from the social media and its awareness factor.

**8:- Helps Govt and Agencies Fight Crime–** It is also one of the advantages of the social media that it helps Governments and Security Agencies to spy and catch criminals to fight crime.

**9:- Improves Business Reputation –** Just like it can ruin any business reputation, It can also improve business sales and reputation. Positive comments and sharing about a company can help them with sales and goodwill. Since people are free to share whatever they want on the social media, it can impact positively when good words are shared.

**10:- Helps in Building Communities –** Since our world has different religions and beliefs. Social media helps in building and participating in the community of own religion and believes to discuss and learn about it. Similarly, people of different communities can connect to discuss and share related stuffs. For example Game lover can join games related communities, car lover can join communities related to cars and so on.

These are some the positivity and negativity of social media for the society. However, social media means the twitter,facebook,whatsup, messages,free calling,internet,chatting and so on. All these are positive when one can use it positively and another side its negative part is only due to user. So,every user in society can made it positive or negative . On my behalf it is more positive then its negativity.

❒

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 104–110* ***ISSN 0974 -1100***

# Impact of Modern Information Technology and involvement Indian society.

Dr. I. M. Saundhankar

Two essential components of IT revolution have been the development of computer and internet. These two developments have revolutionized modern civilization. Today at the press of a button we can get any information that we want from anywhere in the world in a fraction of a second, sitting in our room.

This easy and quick access to information has been instrumental in improving our communication, travel, business, entertainment, space exploration, defense capabilities, medical surgeries etc. "We can visit sites situated thousands of miles away, chat with people sitting in other parts of the world, see the latest movies, watch live international matches, read daily newspapers, attend business conferences, conduct business transactions, visit world famous libraries, go through the latest books etc. all at the click of a key on the computer.

The facility of internet and surfing opens us to the world of information superhighway enabling us to seek the information that we want. With the possibility of downloading programmes and information through a computer to a paper, our task of gathering information is a few minutes affair. In this manner, today the process of gathering knowledge and information has become, easy, cheap, fast, and enjoyable. This has been the greatest advantage of IT boom.

- ADVERTISMENT
- IT revolution has also altered the very face of business operations and E-commerce is becoming a fashion of the day. We can advertise our products and seek jobs and make ourselves available through the internet. IT boom has also revolutionised our style of living. It has made our life easy, pleasurable, and luxurious.
- Today IT revolution is sweeping over the world. Although, IT boom has revolutionised the western world beyond recognition it is still to make much headway in changing lives in India. The boom has, however, affected only the affluent and the urban India. The benefits of IT boom needs to penetrate down to the ordinary men and women living in our country.
- Information technology is a computer-driven science that collects, manage, and process the information as per customers' needs and requirements. Information Technology involves both the hardware and the software configurations.
- Any major change brings about certain advantages and disadvantages and the same is the case with Information Technology.
- **Advantages-**
- **Improves Speed and Accuracy of any business**
- The Introduction of Information Technology in business improves speed and accuracy of the work done by the individuals. There are software programs like Microsoft Word, Processors, Paint, etc that reduces human efforts and increases work speed without any hassle.
- **Globalization**
- Information Technology has made globalization possible. With the advent of science and IT, it is easier for the business owners, to sell their product and services in the market. With the emergence of social networking sites like Facebook and Twitter, chances of marketing any products or services has considerably increased to an International level.

- **Of Course, How can we forget Entertainment?**
- Mobile Phone, Smartphone, Laptops, iPad or iPhone like Electronic gadgets are all parts of entertainment. Listen to quality audio, watch HD videos, and organize your smartphone at just a flick of a button.
- **Positive Impact on the Economy of the country**
- With the advancements in communication, globalization; Economies of the countries has been impacted by the rise of IT sector. E-commerce sites have brought sellers to your home. Now one can sit and do shopping for hours without actually moving out of the home.
- **Impact on Education**
- Education is not just limited to those CBSE books now. This sector has gone beyond your level of imaginations. Smart classes are a new trend that most of the schools are following to make education easy for kids.
- **Health Industry**
- Health care Industry has improved a lot. The Introduction of IT in the health care sector improves the overall performance of the hospital.

- **Negative Impact of Information Technology**
- **IT is an addiction**
- Some people are so dependent on the Internet, Mobiles, Laptops, etc like things that they can't think of surviving a single day without these gadgets. IT sector has made people addicted to it.
- **Communication loss**
- People have become busier and they find the least time to interact even with their family members.
- **Job reduction**
- With the advent of this IT culture, human power is getting replaced by the machines so, a great loss to people who were surviving through their jobs only.
- **Health loss**
- IT sector has given people more of office jobs so they tend to spend most of their time sitting on a chair. This invitees laziness and make people more prone to diseases.

- **Wrapping up**

- We can clearly see that IT sector has greatly influenced one or the other aspect of life. Its positive impact can't be ignored. However, one can still ignore its disadvantages for the betterment of the individual, society, and for the nation.
- Terms like IT superpower and your job is Bangalore and tom Friedman's book "The world is flat" that went on to become not a mere new York times best-seller, but the best amount many bestsellers in year 2005 brought Indian into the center stage of global IT. The three software services majors-Infests.
- The role of the government can be seen in various measures. Home Bhabha committee realized the need for focus in electronic and computer on June 26, 1970, the DOC (Department of Electronics) came into being as a scientific ministry directly under the prime minister with proof MGK Menno as secretary to the department and chairman of the Electronics commission.
- The "Mini computer policy" of 1978" opened up" computers manufacture to private sector. Many state governments created sate electronic corporations for example KEONICS in Karnataka KELTRON in kraal and UPTRON in Uttar Pradesh. The national informatics center (NIC) was set up in 1977 which played a major role in the later decades to become "decisive support system for the government" (both the central and state governments).
- Project IMPRESS (computerization of Railways ticketing) stated in 1986 as a pilot in Secunderabad ushered in the first application targeted at "aam admi" (common man). The rangarajan committee on bank computerization in 1984 set in force a movement that started to shake up government departments to improve delivery of customer service.
- All these measures brought the right focus to IT industry. Chief Vigilance commissioner N Vita's directive in 1997 on full computerization of banks by March 31, 2005, led to what is perhaps the larges IT project in the country both by way of investments and impact.
- In the current decade, India became the twelfth nation in the world to an IT

Act in year 2000 to address to growing E-Commerce and E-business and the attendant cyber security, e-Governance initiatives like e-Saba (single point delivery of citizen services.

- In 2002 and Boom (land records in 2003 started the wave of g-governance projects, mammoth NEGP (National E-Government project) and the setting up of NISG (National institute of smart governance) in Hyderabad recently. Nearly 500,000 EVM (Electronic voting machines manufactured by public sector corporations ECIL Electronics corporation in India Ltd) and BEL (Bharat Electronics Ltd.) serving 600 million voters in 2009 general elections saw the largest development of IT to serve the world's largest democracy.
- Role of academic institutions is also evident. IIT Kanpur got and IBM 1620 what back in 1963 and TIRF brought a CDS 3600 in 1965. Prof. R Marashimha was heading the committee that recommended the setting up of department of electronics; he was the founder-head of both NCST and CMC.
- TIFR were very much involved with the growth of IT in India; along with ECIL, India saw the development of TDC-12 and TDC-16 computers in seventies, which was followed up by the manufacture of CDC machines in India. In the seventies IIT's started computer science departments.
- Over the years C-DAC contributed to the development of computing in Indian languages, starting from GIST (Generalized Indian Script Terminal) standard and tools such as LEAP.
- Special programs lime MCA (Master of Computer Application) that was planned at IIT's and launched in various universities in 80's helped the growing Indian software industry immensely. Other initiatives in manpower development include the highly successful program from NCST in Bombay (and later

Bangalore) and the accelerated manpower development on electronic and computing through DOEACC and DRDO.

- Starting in late nineties, any of the regional engineering colleges (REC) were upgraded to national institutes of technology (NIT) with more funding from the central government and autonomy. A string of IIT's (Allahabad, Bangalore Galion and Hyderabad) started functioning from late nineties.
- In the current decade the contribution IT from IIT alumni contributing to the global academic/research community and IT industry is well-recognized today. The contribution of IIT's NITs and IITs is so important that one can state that IT is a subset of IIT, NIT, & IIIT! In turn it has helped in building the India brand and promoted entrepreneurship through organizations like TIE (The Entrepreneurs Club); it has also helped in alumina contributions back into IITs.
- The industry-academia interaction has increased dramatically in the past seven years, thanks to the maturity of the Indian IT firms and the arrival of the MNC firms such as AB, Google, HP, Honeywell, IBM, Intel, Michrosoft, Motorola, oracle, Philips, SAP, Siemens and Yahoo (more particularly, their R & D units).
- Many software companies took birth in 80s like-Infosys, mestem patni, satyam, softek, Tata info tech and wiper. Another interesting trend was the setting up of offshore development centers (ODC) by multi-national corporations, starting with Texas instruments in 1986. There were other companies like cognizant and CBSI (now convinces that is part of CSC today) that had practically all development work happening in India, though they were headquartered outside India.
- Infosys has its IPO in 1993 and listed in NASDAQ (the first Indian

company) in 1999. There were interesting products too-Installing from Wiper, compilers from softek, Tally accounting software from Tally systems and marshal from Armco that had global customers; the core banking software products Flex cube from iFlex solutions has today become the market leader in the global market.

- Conclusion – Today, we need not go hunting for household items in congested markets. Sitting in our room we can order things, buy tickets, talk to clients, listen to lectures, take part in on-line lotteries, sign business agreements, do bank transactions etc. In other words the recent development in the IT world has reduced man's labour, workload, and has created a better world to live in.

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 11–116* ***ISSN 0974 -1100***

# Information technology Sectors : Participation in economic development of India

Nadeem khan

This paper gives us an overview of the information technology services sectors in India. How is IT sectors contributing to the nation's economic development? How it has transformed India's image from a slow moving economy to a land of innovation. The IT sector in India is generating 3 million direct employments and indirect employment to almost 10 million. India is now one of the biggest IT capitals of the modern world and all the major players in the world IT sector are present in the country. Bangalore is termed to be the Silicon Valley of India because it is the leading IT exporter. The paper identifies a number of barriers faced by the services sectors and suggests policy measures, which, if implemented, will lead to inclusive growth, increased productivity, generate quality loyment, increase trade and investment, and enhance India's global competitiveness in service industry

## Keywords

Services, Employment, Productivity

## Overview of Services in India

In IT, India has build its reputation over the years. In IT enabled services (ITES), India is emerging as one of the most preferred destinations for business

process outsourcing (BPO) and as a place of innovation. The IT industry in India is a key part of the country's economy. In 2013, information technology and its various subsectors represented 8 percent of the nation's overall GDP, making it the fifth largest industry in India. In the 2014/15 financial year alone, the IT industry in India generated an annual revenue of around 120 billion U.S. dollars, a significant increase from around 60 billion U.S. dollars in 2008/09. Of this revenue in 2015, the majority, 98.1 billion U.S. dollars, was generated in exports while domestic revenue totaled more than 20 billion U.S. dollars.

As the IT industry in India continues to increase, end-user spending on the market is also going to rise. Some of the biggest IT service providers in India include IBM and HP, as well as Indian-based companies, Wipro and Tata Consultancy Services (TCS). Overall, in 2013, the IT industry in India provided direct employment to 3 million people and indirect employment to almost 10 million. Of these employees, over 275,000 worked for TCS and a further 156,700 worked at Infosys, based in Bangalore. TCS is the largest India-based IT services company with its revenue reaching 979 billion Indian rupees in 2015 (roughly 14.5 billion U.S. dollars). This ranks it as one of the world's largest IT services providers, by revenue.

### *Top five IT companies of India*

The top five IT companies of India had a golden time during 2015 . According to a NASSCOM research top major players of India are:-

1 Tata Consultancy Services Ltd

2 Infosys Ltd

3 Wipro Ltd

4 HCL Technologies Ltd

5 Tech Mahindra Ltd

## TYPES AND CATEGORIES

The Indian IT industry is broadly categorized into

- IT services and software,
- ITES-BPO
- Hardware segments.

Although IT services and software continues to remain the key contributor to the IT sector's revenues, ITESBPO is emerging as the fastest growing segment of the sector Between the year 2000-01 and 2004-05, contribution of ITES-BPO to the IT sector's total revenue increased from 7.4% to 20.2% whereas the corresponding figure for IT services and software fell from 64.5% to 58.5%. Presently, ITES-BPO segment of the industry is almost as big as the hardware segment.

### Export vs. Domestic Market

Currently, export accounts for around 64% of the total IT sector revenue. The IT sector export revenue touched the mark of US $ 18 billion during 2004-05, a jump of around 35% from the previous year (Table 2 on page 8). IT services & software accounts for 68% of the total export revenue whereas ITES-BPO contributes 28% of the same. The share of hardware in IT sector export revenue is just 4%. India's IT services and software export went from a few million dollars in the 1980s to over US $ 12 billion in 2004-05. The financial service sector (banking, financial service, and insurance) accounts for the largest share of Indian software and services export at around 40% followed by the manufacturing with around 12%. Telecom equipment (9%), healthcare (5%), retail (5%), and telecom services (4%) are emerging areas of export. The key service lines for Indian services and software exporters continued to be custom application development and maintenance, applications outsourcing, ITES, and R&D services. India's services sector has the largest share in the GDP, accounting for 57% in 2012, up from 15% in 1950.] It is the 7th largest in the world by nominal GDP, and third largest when purchasing power is taken into account. The services sector provides employment to 27% of the work force. Information

technology and business process outsourcing are among the fastest-growing sectors, having a cumulative growth rate of revenue 33.6% between 1997 and 1998 and 2002–03 and contributing to 25% of the country's total exports in 2007–08. The growth in the IT sector is attributed to increased specialization, and an availability of a large pool of low cost, highly skilled, educated and fluent English-speaking workers, on the supply side, matched on the demand side by increased demand from foreign consumers interested in India's service exports, or those looking to outsource their operations. The share of the Indian IT industry in the country's GDP increased from 4.8% in 2005–06 to 7% in 2008. In 2009, seven Indian firms were listed among the top 15 technology outsourcing companies in the world

## Human Capital and Infrastructure

Availability and adequate supply of skilled and knowledgeable work force and the quality of infrastructure is critical for the growth of IT industry in India. An important reason for the success of Indian IT industry has been the large supply of IT skilled workforce. India's stock of IT professionals is estimated to be more than 1 million during 2004-05, so that the IT industry revenue per IT professional is about US $ 27,000 (Figure 2 on page 10). A reasonable projection implies that IT industry revenue will increase by a factor of 5 from 2004-05 to 2010-11. Assuming 5 to 7% growth in revenue per employee per year, the number of professionals required will increase at the rate of around 25% per year from 2004-05 to 2010-11 to meet the demand (In fact, there has not been significant change in revenue per employee in the IT sector particularly during recent years. For example, revenue per employee decreased marginally from US $ 28,000 in 2000-01 to US $ 27,000 in 2004-05. Increasing revenue per IT professional beyond 5-7% per year requires significant improvement in managerial and marketing skills, and investment in higher education sector. In the short-run, assumption about 5- 7% growth in revenue per employee appears

to be plausible). Additional IT professionals required for the sector is likely to increase from 260,000 in 2005-06 to nearly 800,000 in 2010- 11. Given the poor state of India's higher education, meeting the demand for IT professionals would be an uphill task. India produced 284,000 engineering graduates during 2004-05, out of which 165,000 can be categorized as IT professionals (computer science, electronics, and telecommunication). Although, there is large number of nonengineering graduates produced every year in the country, the quality of large fraction of these graduates is very much questionable

## IT and Agricultural Development

Information technology is expanding rapidly and touches almost all areas of human activity. In developed countries it is seen that farmers are participating in the creation of web portals for direct sale which is very much necessary, and to make system for data manipulation and store related activity of farming. Agricultural universities must prepare students to use new IT, but also different, e.g., Meaning of extension services, and creating a new specific websites using the web should help farmers. Provide a better quality of life in villages. Government should try to remove the fast growing digital divide. Rural India can play a major role in giving a boost to the agriculture and hence our economy. Rapid changes in the field of information technology in rural, it is necessary to develop and disseminate making electronic services. Undertaking tasks in the current bottlenecks need to be addressed immediately. IT penetration in rural areas to lead a national strategy needs to be drawn. A national coordinating agency with an advisory role can act as a catalyst in the process. No one organization can succeed alone, farmers and rural e-powering function. At the same time, scattered and half-hearted efforts may not be successful in meeting the objective. Villages such as fertilizer sector, with the main part of the industry, should come together to promote early.

## CONCLUSION

From the above facts and my research I hereby conclude that IT has potential of improving the growth in the Indian economy. There is much need of infrastructure support and new policies to support sectors of information technology from government side. We must emphasize on strengthening training and education system in India. Government needs to take specific measures to promote IT use and to make it accessible to every section of the society. The IT should be promoted to be used as a tool for raising the living standards of the common people and enriching their lives. IT literacy needs to be enhanced manifold among the population at large through conventional and nonconventional means, so that ordinary people can begin to use it to get benefits, both economically and socially. India will only get the benefits of information technology if it goes into the nerves of villages and small towns.

❐

***सन्दर्भ –***


1. Annual Report (2004 -05), "Electronics and Information Technology", Ministry of Communication and Information Technology, Government of India, New Delhi.
2. http://www.uis.unesco.org/Communication/Documents/ICT-asia-en.pdf
3. Developing Countries' Statistical Challenges in the Global Economy by Shaida Badiee, Misha Belkindas, Olivier Dupriez, Neil Fantom, Haeduck Lee this is available at
4. http://www.nscb.gov.ph/ncs/9thncs/papers/plenaryDeveloping Countries.pdf
5. The Service Sector as India's Road to Economic Growth
6. http://icrier.org/pdf/Working%20Paper%20249.pdf
7. Jorgenson D. W. (2001), "Information Technology and the U.S. Economy", American Economic Review 91(1)
8. http://newclimateeconomy.report/2014/overview/

**पूर्वदेवा–** *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका*
*वर्ष 22, अंक 87–88, अक्टुबर,16–मार्च, 2017 पृ. 117–122* ***ISSN 0974 -1100***

## ❐ राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी रपट

मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी द्वारा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नईदिल्ली के सहयोग से द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन उज्जैन में दिनांक **26–27 मार्च, 2017** को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। संगोष्ठी में देश–प्रदेश से पधारे विद्वानों, शोधार्थियों एवं प्रतिभागियों ने विषयान्तर्गत अपने शोध आलेख एवं सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये। शुभारम्भ एवं समापन सत्रों के अतिरिक्त दो विचार सत्रों में संगोष्ठी सम्पन्न हुई । संगोष्ठी का मुख्य विषय था – *''आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का भारतीय समाज और संस्कृति पर प्रभाव–उभरती चुनौतियाँ तथा समाधान''* (Impact of Modern Information Technology on Indian Society and Culture : Emerging Challenges & Remedial Measures) संगोष्ठी विषय को निम्नानुसार उपशीर्षकों में विभक्त कर विचार–विमर्श हेतु प्रस्तुत किया गया – 1–सूचना प्रौद्योगिकी का नकारात्मक एवं सकारात्मक पक्ष 2– सूचना प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण की सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियाँ. 3– सूचना प्रौद्योगिकी और भारत में सांस्कृतिक परिवर्तन. 4– सूचना प्रौद्योगिकी और भारतीय समाज में परिवर्तन. 5– आधुनिक संचार साधनों का भारतीय समाज और संस्कृति पर प्रभाव (नेट,नेटन्यूट्रीलिटी,सिनेमा व दूरदर्शन 6– भारत में सामाजिक समरसता एवं सामाजिक विकास पर सूचना प्रौद्योगिकी और सूचना तंत्र का प्रभाव 7– संचार साधनों पर बढ़ती निर्भरता और सामाजिक संबंधों में बदलाव के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष. 8– नवींन सूचना प्रौद्योगिकी का सामाजिक और सांस्कषतिक संबंधों पर प्रभाव. 9– आधुनिक सूचना तंत्र और सोशल मीडिया का भारतीय समाज पर प्रभाव. 10– आधुनिक सूचना तंत्र एवं प्रौद्योगिकी तथा अनूसूचित जाति–जनजाति वर्ग / दलितवर्ग. 11– आधुनिक सूचना तंत्र एवं प्रौद्योगिकी के परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज के समक्ष उत्पन्न चुनौतियाँ एवं उनका समाधान.

## संगोष्ठी शुभारम्भ सत्र

**मुख्य अतिथि** के रूप बोलते हुवे उज्जैन नगर पालिक निगम, उज्जैन की महापौर श्रीमती मीना विजय जौनवाल ने कहा कि आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी विषय पर संगोष्ठी का आयोजन अत्यन्त उपयोगी है, क्योंकि ऐसे आयोजन समाज को समय के अनुरूप जागरूक करते हैं ।

समारोह की **अध्यक्षता** करते हुवे न्याय आन्दोलन एवं राष्ट्रीय दलित मानव अधिकार आयोग, नईदिल्ली की प्रदेश संयोजक **डॉ. रमा पांचाल** ने कहाकि सूचना प्रौद्योगिकी के साथ मानवता के मूल्यों का हास हुआ है, महिलाओं का नुकसान हुआ है, ईन्सानियत खत्म हो गई है । जिस देश में शिक्षा नहीं, साक्षरता नहीं वहां इसका दुरूपयोग हो रहा है । केवल शिक्षित और पढ़े–लिखें लोगों को फायदा हुआ है । अपर–सुपर लोगों को लाभ मिला है । सूचना प्रौद्यागिकी का उपयोग मानवीय विकास के लिये होना चाहिए ।

**विशेष अतिथि डॉ. अरूण कुमार**, प्रभारी प्राचार्य–शासकीय विजयराघवगढ महाविद्यालय, कटनी ने व्यक्त किया कि सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से भारतीय समाज में क्रांति का अनुभव किया जा सकता है । चाहें चिकित्सा का क्षेत्र हो या समाज का अन्य क्षेत्र जनता को घर बैठें जानकारियाँ मिल रही है । मीडिया के कारण स्टींग आपरेशन हुवे हैं, हितग्राहियों को योजनाओं की सूचनाऐं प्राप्त हो रही है, नौकरशाही में पारदर्शिता आई है, लोगों को रोजगार मिला है, बैंकों एवं रेलवे में काम के प्रति जागरूकता का भाव हमें दिखाई दे रहा है । यह सब सूचना प्रौद्योगिकी के लाभ है जिनके कारण भारतीय समाज की तकदीर और तस्वीर बदली है । यह चिंता का विषय है कि इसके विपरीत समाज में विषमता भी बढ़ी है लेकिन समाज को विकसित करने में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।

संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन करते हुवे आचार्य एवं साहित्यकार **डॉ. अरूण वर्मा** ने कहा कि संसार में जितनी भी क्रांतियों के दौर रहे हैं उनमें संचार क्रांति सबसे महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है । महाशक्तियों ने इसकी शुरूआत जासूसी के लिये की थी । वर्तमान समय में सूचना के साथ सायबर माफिया का बोल–बाला भी दिखाई दे रहा है । ज्ञान की स्वतंत्रता और स्वतंत्रता का ज्ञान भी सूचना क्रांति में चिंता का विषय बन गया है । समाचार पत्रों से नई संचार व्यवस्था में सम्पादक गायब से हो गये हैं प्रबंधन ही मुख्य बन गये हैं । अब समाचार हमारी संवेदना को जागृत नहीं कर पाते हैं । सांस्कृतिक विरासत और मूल्यों के इस देश में संचार क्रांति से हिंदी को भी बहुत नुकसान हुआ है । बहुरंगीय इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व वाले इस भारत के आदर्श को बचाने की आवश्यकता है।

**स्वागत भाषण** देते हुए अकादमी अध्यक्ष **डॉ. हरिमोहन धवन** ने अकादमी की गतिविधियों पर संक्षिप्त में प्रकाश डाला और कहा कि आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी विश्व की समाज व्यवस्थाओं के साथ ही भारतीय समाज को भी प्रभावित कर रही है । सामाजिक व्यवस्था पर इसका नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ना स्वभाविक है । नई तकनीक हमेशा अनेक तरह की संभावनाऐं लेकर आती है । इन नवींन आयामों के साथ चिन्तन मनन और नवाचार की आवश्यकता प्रतीत हो रही है । इसी परिप्रेक्ष्य में मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी ने इस दो दिवसीस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया है ।

प्रारम्भ में अतिथियों ने दीप–प्रज्जवलन् किया तथा बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी के चित्र पर पुष्पांजली अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात् अकादमी अध्यक्ष डॉ. हरिमोहन धवन, सचिव श्री पी. सी. बैरवा, कोषाध्यक्ष डॉ. जी.एस. धवन, सदस्य डॉ. एच.एम. बरूआ, डॉ. आर.के. अहिरवार, ने आगंतुक अतिथियों का पुष्पमालाओं से स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन अकादमी सचिव **श्री पी.सी. बैरवा** ने किया तथा आभार अकादमी कोषाध्यक्ष डॉ0 जी. एस. धवन ने माना ।

## प्रथम विचार सत्र

सत्र की अध्यक्षता डॉ. अम्बेडकर पीठ, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के अध्यक्ष **डॉ. शैलेन्द्र पाराशर** एवं सह–अध्यक्षता विक्रम विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य **डॉ. राजेन्द्र छजलानी** तथा **अश्वनी कुमार,** शोध सहायक– भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नईदिल्ली ने की और सत्र का संचालन संगोष्ठी संयोजक **डॉ. पी.सी. करोडे** द्वारा किया गया । देश–प्रदेश से पधारे विद्वान विषय विशेषज्ञों ने संगोष्ठी के प्रथम विचार सत्र में अपने शोध पत्रों का वाचन किया गया जिसमें प्रमुख रूप से **डा. एम. एस. मीना एवं श्रीमती शैली शर्मा**, धोलपुर, *Impact of Modern Information Technology on Indian Socity and Culture : Emerging Challenges & Remedial Measures-with special reference to Bhartpur disstt.of Rajsthan.***डॉ. वुन्दा सेनगुप्ता**, जांजगीर (छ.ग.) ***सूचना प्रौद्योगिकी वर्तमान की महती आवश्यकता,*** **डॉ. चम्पा श्रीवास्तव**, रायबरेली (उ.प्र.), ***आधुनिक सूचना तन्त्र और सोश्यल मीडिया का भारतीय समाज पर प्रभाव,*** **डॉ. चन्द्रकांत बंशीधरराव भागें**, परभणी (महा.) ***सूचना प्रौद्योगिकी में सायबर अपराध एवं सुरक्षा की चुनौतियां,*** **डॉ. सीमा श्रीमाल**,मंदसौर (म.प्र.) ***सामाजिक परिवर्तन में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव,*** **डॉ. क्षितिज पुरोहित** एवं **डॉ. कु. प्रमोद भारतीय**, मदसौर (म.प्र.) ***ज्ञान अर्थव्यवस्था एवं विकास के नये आयाम,*** **डॉ. कल्पना कोठारी**, **एवं**

**कुमारी विनोद भारतीय**, नरसिंहगढ (म.प्र.) ***संचार साधनों पर बढ़ती निर्भरता और संबंधों में बदलाव के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष,*** **डॉ. राजेश साकोरीकर** एवं **डॉ. रूचिता साकोरीकर**, उज्जैन (म.प्र.) *Positive and Negative Effects of Social Media on Society* **Dr. Ishwar Mangilal Saundankar, Dist Jalgaon**.(M.H.*) Impact of Modern Information Technology and involvement Indian Society*, Shri **Jagdish Shankar Sonawane** Amalner. Dist. **- Jalgaon**.(M.H.) *Impact of Modern Information Technology on Development Indian society.* **डॉ. (श्रीमती) रमा पाँचाल,** इन्दौर (म.प्र.) *सूचना प्रौद्योगिकी का सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष,* **नदीम खान** इन्दौर (म.प्र.) *Information Technology Sectors- Participation in economic development of India* **डॉ. सादीक मोहम्मद खान** इन्दौर (म.प्र.) *मतदान व्यवहार को प्रभावित करने में आधुनिक सूचना तंत्र और सोश्यल मीडिया की भूमिका : देपालपुर नगर पंचाय के संदर्भ में* **धमेन्द्र चौहान**., इन्दौर (म.प्र.) *ग्रामीण विकास में सूचना एवं संचार साधनों का महत्व,* **नजिया खॉन**., इन्दौर (म.प्र.) *इंदौर जिले की महू तहसील में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव* विषयक अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये गये ।

## द्वितीय विचार सत्र

सत्र की अध्यक्षता **डॉ0 आर. सी. सिसौदिया** पूर्व सम्भागीय रोजगार अधिकारी, उज्जैन एवं सह अध्यक्षता **डॉ. आर. के. अहिरवार**, अध्यक्ष–प्रा.भा.इ.सं. एवं पुरातत्व अध्ययनशाला, वि.वि. उज्जैन द्वारा की गई । विचार सत्र में सहभागिता करते हुए **डॉ. प्रिंसेस निगम एवं डॉ. बिन्दु महावर**, भोपाल (म.प्र.) *सूचना प्रौद्योगिकी की सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतिया एवं अवसर* **डॉ. श्रद्धा मिश्रा**, उज्जैन (म.प्र.) *शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी विश्लेषण,* **डॉ. लता धुपकरिया**, देवास (म.प्र.) *संचार साधनो पर बढ़ती निर्भरता सामाजिक संबंधों में बदलाव के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष* **मर्सरत यूसुफ खान** भोपाल (म.प्र.) *सूचना संचार प्रौद्यागिकी के वर्तमान परिदृश्य,* **डॉ. अरूण कुमार सिंह,** कटनी (मध्यप्रदेश) *आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का भारतीय समाज के समावेशी विकास पर प्रभाव : उभरती प्रवृत्तियाँ,* **डॉ. (श्रीमती) वीणा सिंह** कटनी (म.प्र.) *आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी एवं ग्रामीण विकास,* **डॉ. सपनासिंह कंवर** उज्जैन (म.प्र.) *आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का भारतीय जनजाति समाज पर प्रभाव,* **श्रीमती उषादेवी कटियार** उज्जैन (म.प्र.) *आधुनिक संचार साधनों का विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर प्रभाव,* **प्रोफेसर श्रीमती प्रतिभा नामदेव** *उज्जैन,शिक्षण व अध्ययन की प्रक्रिया में सुधार के लिये*

*प्रौद्योगिकी सूचना व संचार,* **डॉ. वी.पी. मीणा** शाजापुर (म.प्र.) *शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका* **डॉ. वीरेन्द्र चावरे** उज्जैन (म.प्र.) *भारत में सूचाना प्रौद्योगिकी का प्रभाव : एक विश्लेषण* **डॉ. अरूण वर्मा,** उज्जैन (म.प्र.) *संचार प्रगति का समाज और संस्कृति पर प्रभाव* **डॉ. नवीन के. मेहता** रायसेन (म.प्र.) *Portrayal of it professionals in chetan Bhagat's one night @ the call centere* **श्रीमती नलिनी शर्मा (खोत)** उज्जैन (म.प्र.) *अशासकीय विद्यालय के कक्षा 9 वी स्तर पर विज्ञान विषय में अनुदेशनात्मक आव्यूह का उपलब्धि के संदर्भ में प्रभाविता का अध्ययन* **डॉ. एच.एम. बरूआ** उज्जैन (म.प्र.) *आधुनिक संचार साधनों का भारतीय समाज और संस्कृति पर प्रभाव* **डॉ. दत्तात्रय पालीवाल** उज्जैन (म.प्र.) *आधुनिक संचार साधनों का भारतीय समाज पर प्रभाव – युव वर्ग के संदर्भ में* **डॉ. सरिता पाल** छिंदवाडा (म.प्र.) *सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा भारतीय समाज में परिवर्तन* **डॉ. आर. सी. सिसौदिया** उज्जैन (म.प्र.) *आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का भारतीय समाज व संस्कृति पर प्रभाव– उभरती चुनौतिया एवं समाधान* **डॉ. अंतिमबाला पाण्डेय** उज्जैन*संचार साधनों पर बढ़ती निर्भरता और सामाजिक संबंधों के समारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष* **श्रीमती प्रतिमा सिंह** उज्जैन (म.प्र.) *सूचना प्रौद्योगिकी और भारतीय समाज में परिवर्तन,* **श्री मनमोहन द्विवेदी** इन्दौर (म.प्र.) *ग्रामीण परिवेश में संचार क्रांति का प्रभाव,* **सुनिता बघेले** उज्जैन (म.प्र.) *आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का जनजाति समाज व संस्कृति पर प्रभाव,* **डॉ. हुक्का कटारा** उज्जैन (म.प्र.) *जनजाति समाज के विकास में आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का बढ़ता प्रभाव,* **प्रकाश गुजराती** उज्जैन (म.प्र.) *आधुनिक सूचना तंत्र और सोशल मीडिया का भारतीय समाज पर प्रभाव,* **डॉ. सरिता मालवीय**, भोपाल (म.प्र.) *भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास पर सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव* – विषयक अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये गये ।

**संगोष्ठी समापन सत्र**

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह में **मुख्यअतिथि** के रूप में उद्योगपति **डॉ. राजेन्द्र जैन** ने कहा कि जनसंचार सांस्कृतिक गतिविधियों को गतिशील बनाने में तथा सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन लाने में प्राचीन समय से क्रियाशील रहा है । आज जनंसचार के साधन जैसे–जैसे विकसित होते जा रहे हैं वैसे–वैसे समाज एवं सांस्क ति में बदलाव आ रहा हें । विगत दो दशकों में सूचना प्रौद्योगिकी में हुए विकास के कारण संचार के गतिशील और प्रभावशाली साधनों का विकास हुआ हें । 21 वीं सदी के आधुनिक युग में समाज के दूर–दराज क्षेत्रों में रहने

वाले ग्रामीण और आदिवासी लोग भी इन साधनों से विमुख नहीं है। आज के सम्पूर्ण मानव जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी और प्रौद्योगिकीय संसाधनों ने खासा प्रभावित किया हैं। गरीबी उन्मूलन में विकास संचार की भूमिका, सामाजिक सहभागिता,पारदर्शिता और उत्तरदायी शासन व्यवस्था, विकेन्द्रीकृत प्रशासन, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के लिए नवींन सूचना तंत्र और प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर गंभीरता से विचार–विमर्श आज समय की प्रमुख मांग बनता जा रहा है ।

समापन समारोह की **अध्यक्षता** करते हुवे विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के पूर्व आचार्य ***डॉ. एस. एन. गुप्ता*** ने कहाकि स्वतंत्रता के बाद देश में साक्षरता और शिक्षा कार्यक्रमों की श्र खंला में संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका को शिक्षाविद, राजनेता, नीति निर्धारक, समाज–सुधारक और वैज्ञानिक सभी रेखांकित कर रहे हैं । यद्यपि यह अभी अपर्याप्त है और इसके अच्छे परिणामों की दरकार है । परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों और मान्यताओं में बदलाव परिलक्षित हो रहा है । आज की युवा पीढ़ी, परम्परांगत सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों एवं मान्यताओं से अनभिज्ञ है । परिणाम स्वरूप युवाओं में लक्षहीनता, हताशा, अस्थिरता, अलगाव, एकाकिपन, नीरस जीवन और भविष्य के प्रति उत्साह में कमी हो रही है। अपराध, हत्या, आत्महत्या और अत्याचार निरन्तर नई पीढ़ी को प्रभावित कर रहे है। भविष्य की अस्थिरता को लेकर उनके जीवन में कुण्ठा है । सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ति आज के वैश्वीकरण का ही परिणाम हैं । प्रेस, रेडियो, फिल्म, टेलिविजन, मोबाईल, लेपटाप, टेबलेट, साईबरनेटिक, और इनफारमेब्कि सभी कुछ संपूर्ण वैश्विक मानव सम्बध संकुल को सकारात्मक या नकारात्मक कहीं न कहीं गहरे तक प्रभावित कर रही हैं। जिससे उसके रोजमर्रा के जीवनचक्र से लेकर परम्परागत सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, भौतिक एवं नैतिक मान्यताओं में बदलाव प्रतीत हो रहा है। क्या गॉव, क्या शहर सभी स्थानों पर डिजिटल विभाजन, राष्ट्रीय दूरसंचार नीति, ई–गवर्नेंस, फ्रेण्डस काउन्टर, उपग्रह संचार, काल सेन्टर, आउटसोर्स व्यवसाय, सूचना प्रौद्योगिकी आधारित उद्योग निरन्तर आकार और विस्तार ले रहे हैं । राष्ट्रीय संगोष्ठी के विभिन्न सत्रो में कुल 42 शोध आलेखों का वाचन/प्रस्तुतिकरण किया गया। कार्यक्रम का संचालन अकादमी सचिव श्री पी.सी. बैरवा ने किया तथा अन्त में सभी के प्रति आभार अकादमी कोषाध्यक्ष डॉ. जी.एस. धवन ने माना ।

***(डॉ. पी.सी. करोडे)***
*संगोष्ठी संयोजक*

***(डॉ. हरिमोहन धवन)***
*संगोष्ठी समन्वयक*

❐

## समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विवरण के संबंध में घोषणा

### (फार्म–4 नियम–7)

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | समाचार पत्र का नाम | : | पूर्वदेवा |
| 2. | प्रकाशन का स्थान | : | मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी, बाणभट्ट मार्ग, सेन्ट्रल स्कूल के सामने उज्जैन (म.प्र.) 456 010 |
| 3. | प्रकाशन अवधि | : | त्रैमासिक |
| 4. | मुद्रक का नाम | : | पूनमचन्द बैरवा |
| | राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| | व पता | : | मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी, बाणभट्ट मार्ग, सेन्ट्रल स्कूल के सामने उज्जैन (म.प्र.) 456 010 |
| 5. | प्रकाशक का नाम | : | ––– तदैव ––– |
| | राष्ट्रीयता | : | |
| | व पता | : | |
| 6. | सम्पादक का नाम | : | डॉ. हरिमोहन धवन |
| | राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| | व पता | : | मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी, बाणभट्ट मार्ग, सेन्ट्रल स्कूल के सामने उज्जैन (म.प्र.) 456 010 |
| 7. | स्वामी का नाम | : | ''मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी'' |
| | व पता | : | बाणभट्ट मार्ग, सेन्ट्रल स्कूल के सामने उज्जैन (म.प्र.) 456 010 |

मैं पूनमचन्द बैरवा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है ।

**हस्ताक्षर**

उज्जैन

दिनांक : **31 मार्च, 2017**

**पूनमचन्द बैरवा**

**प्रकाशक**

# पूर्वदेवा

## मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी की सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

'पूर्वदेवा' के प्रकाशन का उद्देश्य मुख्यतः भारतीय समाज व्यवस्था में व्याप्त मानवीय विषमताओं के उन्मुलन, दलितों में मानवीय-अस्मिताबोध एवं अधिकार-चेतना उत्पन्न करने और तद्जनित सामाजिक परिवर्तन की भूमिका तैयार कर मानवीय मूल्यों की स्थापना के निमित्त ऐतिहासिक एवं सामाजिक आधार पर विविधपक्षीय, तथ्यपूर्ण एवं शोधपरक अध्ययन एवं चिंतन को प्रवर्त्त करना है। जिससे कि दलित, सर्वहारा वर्ग का सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में समुचित विकास एवं मानवीय सम्मान का मार्ग प्रशस्त किया जा सके और देश में राष्ट्रीय एकरूपता, सामाजिक न्याय एवं सहिष्णुता की भावना वास्तविक आकार ग्रहण कर सके।

अतएव, इस हेतु विद्वान लेखकों, अनुसंधानकर्ताओं से मौलिक लेख, शोध आलेख एवं अनुभवजन्य, तथ्यपरक लेख, पुस्तक समीक्षाएँ प्रकाशनार्थ सादर आमंत्रित हैं।

* लेखको से आग्रह है कि अपने लेख टंकित दो प्रतियों / **PM-5** कृति देव10 **(Kruti Dev 10 )** मेंटाईप, सीडी एवं एक प्रिंटआउट सहित भेजें। **email-mpdsaujn@gmail.com**
* प्रत्येक आलेख के साथ आवश्यकतानुसार फुटनोट्स अथवा संदर्भ सूची अवश्य संलग्न की जानी चाहिये।
* लेख सामान्यतः हिन्दी में लिखे हों। विशेष स्थिति में अंग्रेजी भाषा में लिखे गये लेख भी स्वीकार किये जा सकेंगे
* लेख अन्यत्र प्रकाशित नहीं होना चाहिये। हाँ, यदि किसी अन्य भाषा में प्रकाशित हो चुके हों तो उनका हिन्दी में अनुवाद भी अपवाद रूप में प्रकाशनार्थ स्वीकार किया जा सकता है।
* सम्पादक मंडल को किसी भी लेख को प्रकाशन हेतु स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करने का पूर्ण अधिकार है। अतः वापसी हेतु रचना के साथ लेखक का पता लिखा लिफाफा उपयुक्त डाक टिकट के साथ संलग्न होना चाहिये।
* समीक्षार्थ नव प्रकाशित पुस्तकों की दो प्रतियाँ प्रेषित की जानी चाहिये। प्रत्येक पुस्तक समीक्षा लेख के साथ समीक्षित पुस्तक की एक प्रति अवश्य संलग्न की जानी चाहिये।
* पूर्वदेवा का सतत् प्रकाशन सुधी पाठकों एवं लेखकों के उदार सहयोग पर निर्भर है, अतएव विशेष अनुरोध है कि पूर्वदेवा के ग्राहक बनकर, अपना आत्मीय सहयोग प्रदान करें।

**ग्राहक शुल्क की दरें (Rates of Subscription) इस प्रकार हैं-**

| | | | |
|---|---|---|---|
| * | आजीवन शुल्क | संस्थागत रू.2500/- | वैयक्तिक रू.2000/- |
| * | वार्षिक शुल्क | संस्थागत रू.350/- | वैयक्तिक रू.300/- |

**क्रयादेश एवं शुल्क सहित सभी प्रकार के पत्र व्यवहार का पता :**

**मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी**

बाणभट्ट मार्ग, सेंट्रल स्कूल के सामने, उज्जैन(म.प्र.)456010

*म.प्र.दलित साहित्य अकादमी के लिये पी.सी बैरवा द्वारा न्यू गुलाब प्रिन्टर्स, उज्जैन-से मुद्रित एवं बाणभट्ट मार्ग, उज्जैन(म.प्र) से प्रकाशित* ***आर.एन.आई.रजिस्ट्रेशन नं. 61954/95***

**ISSN 0974-1100**

*सम्पादन- डॉ.हरिमोहन धवन*